अफ्रीका से कछुआ आया–2

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Cover Title : Africa Se Kachhua Aaya-2 (Tortoise from Africa-2)
Cover Page picture : Tortoise
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Africa

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 6

अफ्रीका से कछुआ आया–2 8

1 घोंघा और चीता 10

2 एक कछुआ और उसकी सुन्दर बेटी 15

3 कछुआ और गिरगिट 22

4 कछुआ और बबून 27

5 तुमने बुलाया है 32

6 एक की ताकत 42

7 बात करने वाला पेड़ 48

8 कछुआ और दवा वाला सूप 58

9 हिप्पोपोटेमस और कछुआ 61

10 कछुए ने हाथी पकड़ा 66

11 कछुआ और हाथी 69

12 कछुआ और ढोल 74

13 जादू का ढोल 81

14 राजा का जादू का ढोल 94

15 गाता हुआ ढोल 109

16 कछुआ और इग्वाको 120

17 कछुआ और सूअर 130

18 बन्दर का पिछवाड़ा लाल क्यों 142

19 वुनगेलेमा 146

20 कछुए और बड़े खरगोश की दौड़–1 156

21 कछुआ और बड़ा खरगोश–2 160

22 कछुआ और बड़ा खरगोश–3 163

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

अफ्रीका से कछुआ आया–2

संसार के सभी देशों की लोक कथाओं में कुछ जानवरों की अपनी एक बहुत ही ख़ास जगह होती है जैसे ख़रगोश, शेर, लोमड़ा, कुत्ता, भेड़िया, गीदड़, आदि। इनमें एक जानवर कछुआ भी शामिल है। कछुआ अफ्रीका की लोक कथाओं का एक बहुत बड़ा हीरो है। वहॉ इसकी बहुत सारी लोक कथाऐं मिलती हैं। वहॉ के देशों में इसके कई नाम भी हैं जैसे नाइजीरिया में इसका नाम सुतपा है, कहीं इसका नाम इजापा है पर अधिकतर इसकी बहुत सारी कहानियॉ बिना नाम के ही पायी जाती हैं इसलिये सामान्यतया इसकी हर कहानी नाइजीरिया के सुतपा या इजापा नाम के कछुए से ही जोड़ दी जाती है।

वहॉ की कथाओं में यह एक बहुत ही होशियार जानवर है पर कभी कभी अपने लालच के कारण मात ख़ा जाता है। ये कथाऐं पढ़ कर लगता है कि यह कछुआ ख़ाने का बहुत लालची है। उसके अधिकतर काम इस ख़ाने के लालच की वजह से ही बिगड़ते हैं।

पर क्योंकि यह अक्लमन्द भी बहुत है इसलिये जंगल के बहुत सारे जानवर इससे सलाह लेने के लिये आते हैं और यह उनको अच्छी सलाह देने के कारण उनमें बहुत लोकप्रिय है। यह अक्लमन्दी इसको भगवान की दी हुई है क्योंकि उसने इसे ख़ास तरीके से पैदा किया है और समय समय पर वह इसको और भी अक्लमन्दी देता रहा है।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं कछुए की। ये सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये ख़ास कर के अफ्रीका के देशों से इकट्ठी की हैं। इससे पहले कछुए की लोक कथाओं का पहला संग्रह "अफ्रीका से कछुआ आया–1" में हमने कछुए के शरीर और उसके व्यवहार के बारे में बताने वाली कुछ लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं। उनमें कुछ उसकी बेवकूफी की कथाऐं भी थीं और कुछ उसकी अक्लमन्दी की भी। कछुए की लोक कथाओं की इस दूसरी पुस्तक "अफ्रीका से कछुआ आया–2" में हम उसकी चालाकी और होशियारी के कारनामों की कथाऐं दे रहे हैं।

अधिकतर ये कथाऐं अफ्रीका के नाइजीरिया देश की हैं पर एक दो कथाऐं इसमें दूसरे देशों की भी हैं। पहली दो कथाओं के देश का नाम पता नहीं है पर उनको भी वहीं का या फिर वहीं कहीं आस पास का ही होना चाहिये। पर क्योंकि उनके देशों के नाम का पक्का पता नहीं है इसलिये उन कथाओं के देशों के नाम नहीं दिये गये हैं।

उसके बाद की कुछ कथाऐं केवल साधारण कछुओं की लोक कथाऐं हैं पर क्योंकि वे कछुए की लोक कथाऐं हैं इसी लिये उनको यहॉ शामिल कर लिया गया है। इनमें कछुए का नाम नहीं दिया गया है। इसके अलावा वे कछुए की चालाकी या उसकी बेवकूफी से भी सम्बन्धित नहीं हैं वे केवल सामान्य कथाऐं ही हैं।

अन्त में दो कथाऐं एशिया की भी हैं जो इस पुस्तक की **19**वीं कहानी "कछुए और बड़े ख़रगोश की दौड़" जैसी ही है इसी लिये वे कथाऐं यहॉ सन्दर्भ के लिये दे दी गयी है।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुमको कछुए के असली स्वभाव को बताने में सहायक होंगी कि वह कितना अक्लमन्द है या फिर कितना बेवकूफ या फिर कितना लालची।

1 घोंघा और चीता[1]

एक बार की बात है कि जानवरों के किसी देश में एक चीता रहता था। उसके पॉच बच्चे थे। इस चीते को कोई भी पसन्द नहीं करता था क्योंकि यह बड़ा चालाक और खतरनाक चीता था।

एक दिन चीते ने कछुए नाई को बुलवाया और कहा — "कछुए भाई, देखो तुम ज़रा मेरे पॉचों बच्चों के बाल काट दो।" सुन कर कछुआ अन्दर ही अन्दर कसमसाया तो जरूर पर बोल कुछ नहीं सका।

इस पर चीता गरज कर बोला — "ए कछुए, यह मैंने तुम्हें कितनी इज़्ज़त दी है कि तुमको मैंने अपने बच्चों के बाल काटने के लिये बुलाया और तुम्हारे दिमाग ही नहीं मिल रहे हैं।

पर उससे पहले तुम्हें मेरे बाल काटने होंगे। और याद रखना मैं इसके लिये तुम्हें कुछ दूँगा भी नहीं क्योंकि तुम हमारे बाल काट रहे हो यही इज़्ज़त तुम्हारे लिये क्या कम है। और हॉ देखो बाल ठीक से काटना वरना तुम्हारी खैर नहीं।"

कछुआ बड़ी नम्रता से बोला — "सरकार, मैं बिना कुछ लिये ही आपके बाल काटने के लिये तैयार हूँ क्योंकि यह तो वाकई मेरे

[1] The Snail and the Leopard – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, West Africa

लिये बड़ी इज़्ज़त की बात है कि मैं आप और आपके परिवार के बाल काट रहा हूँ पर सरकार मेरी एक प्रार्थना है।"

चीते ने पूछा — "वह क्या?"

कछुआ बोला — "मैं आपके बाल आपको उस पेड़ की ऊपर वाली टहनी पर बिठा कर काटना चाहता हूँ। ताकि सभी जानवर जब आपको इस तरह उस ऊपर वाली टहनी पर बाल कटाते देखेंगे तो वे आपसे बहुत प्रभावित होंगे।"

चीता बोला — "वाह, यह तो बहुत ही सुन्दर विचार है।" यह कह कर वह पेड़ की ऊपर वाली टहनी पर पॉव फैला कर आराम से लेट गया। पीछे पीछे कछुए ने भी कदम बढ़ाये।

चीते ने एक जॅभाई ली, अपनी पूँछ फटकारी और अपनी ऑखें बन्द करते हुए बोला — "कछुए भाई ज़्यादा देर नहीं लगाना। मुझे नींद आ रही है बाल कटा कर मैं सोना चाहता हूँ।"

"ठीक है सरकार।"

और कछुआ चीते के बाल काटने में लग गया। कछुआ दिखावे के लिये तो चीते के बाल काटता रहा पर सचमुच में उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया बल्कि उसने धीरे धीरे चीते के काफी बाल उसी टहनी से बॉध दिये जिस टहनी पर वह बैठा था ताकि वह उस टहनी से अच्छी तरह बॅध जाये।

फिर उसने अपना चाकू जान बूझ कर नीचे गिरा दिया और उसको उठाने का बहाना बना कर और माफी मॉग कर नीचे उतर आया।

उसने चीते के पॉचों बच्चों को उनके पिता के सुन्दर बालों को देखने के लिये बुलाया पर जब वे बच्चे अपनी गुफा से बाहर आये तो उसने उनके पिता के सामने ही उनकी खूब पिटाई की।

अपने बच्चों को पिटता देख कर चीता बड़ी ज़ोर से गर्जा और उठ कर कछुए को खाने की सोची, परन्तु तुरन्त ही उसकी यह गरज दर्द भरी चीखों में बदल गयी क्योंकि जैसे ही उसने उठने की कोशिश की तो वह तो अपने बाल टहनी से बॅधे होने की वजह से वहॉ से उठ ही नहीं सका।

उसके बाल खिंच रहे थे और वह वहॉ से उठ ही नहीं पा रहा था। फिर वह नीचे तो कैसे उतरता। चीते के बच्चे किसी तरह जान छुड़ा कर जंगल में भाग गये। उधर चीते की गरज सुन कर जंगल के सारे जानवर चीते पर हॅसने लगे।

चीते ने उनसे अपने आपको छुड़ाने की बहुत प्रार्थना की परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी और उसकी किसी भी प्रकार की सहायता करने से इनकार कर दिया।

इस हालत में चीता उस टहनी से पूरे दो दिन बॅधा रहा और सारे जानवर उसे चिढ़ाते रहे। अब तो उसे भूख भी लग आयी थी।

दूसरे दिन शाम को चीते ने देखा कि एक घोंघा पेड़ की शाखों पर रेंगता हुआ चढ़ा चला आ रहा है। उसने उससे भी सहायता की भीख माँगी और उसकी इस सहायता के बदले में उसकी मनचाही चीज़ देने का वायदा किया।

घोंघा इस शर्त पर चीते को छुड़ाने को राजी हो गया कि छूट जाने के बाद चीता उसे खायेगा नहीं। चीता भी इस बात पर राजी हो गया कि वह आजाद होने के बाद घोंघे को खायेगा नहीं।

घोंघे ने धीरे धीरे चीते के सारे बाल खोल दिये और चीते को पेड़ से आजाद कर दिया।

जब चीता आजाद हो गया तो बहुत ज़ोर से गरजा और पेड़ से नीचे कूद गया और घोंघे से बोला — "दोस्त, अब मैं हर एक को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि वे ज़िन्दगी भर नहीं भूलेंगे। वे फिर कभी भी चीते परिवार का अपमान करने की हिम्मत भी नहीं करेंगे।

मैंने किस तरह इन दो दिनों तक अपनी इच्छाओं को कुचला है यह तुम नहीं जानते। अब सबसे पहले तो तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

घोंघा घबरा कर बोला — "पर चीते भाई, तुमने तो मुझे न मारने का वायदा किया था।"

चीता बोला — "चीता कभी सौदेबाजी नहीं करता। तुमने यह सबक देर से सीखा। तब मैं पेड़ के ऊपर बँधा हुआ था पर अब मैं आजाद हूँ और अब सबसे पहले मैं तुम्हें ही मारूँगा।"

अब घोंघे के पास कोई चारा नहीं था। उसने यह सुन कर सूरज देवता को पुकारा — "ओ ओलोजा[2], मुझे बचाओ, मैं मरा।"

ओलोजा ने उसकी पुकार सुन ली। तुरन्त ही ओलोजा ने ग्रहण[3] भेज कर सूरज में ग्रहण लगवा दिया। इससे सारी धरती पर अँधेरा छा गया। चीते को अँधेरे में घोंघा दिखायी ही नहीं दिया सो उस अँधेरे में घोंघा चुपचाप खिसक गया।

उस दिन से चीता अपने बाल नहीं कटवाता, किसी से वायदे नहीं करता और हमेशा ही अपने अपमान का बदला लेने के लिये कछुए की खोज में जंगल में घूमता रहता है।

[2] Oloja – the name of Nigerians' Sun god

[3] Translated for the word "Solar Eclipse".

2 एक कछुआ और उसकी सुन्दर बेटी[4]

यह अफ्रीका के नाइजीरिया देश की एक लोक कथा है जिसमें एक राजकुमार का दिल एक कछुए की बेटी पर आ जाता है। जब राजा उसको देखता है तो वह भी मान जाता है कि हॉ कछुए की बेटी बहुत सुन्दर है और उसके बेटे की बहू बनने के लायक है।

एक बार की बात है कि नाइजीरिया में एक बहुत ही ताकतवर राजा राज करता था। यहॉ तक कि सारे जंगली जानवर और दूसरे जानवर भी उसका कहा मानते थे। कछुआ सारे जानवरों और आदमियों में सबसे अक्लमन्द जानवर समझा जाता था।

इस राजा के एक लड़का था जिसका नाम था ऐकपैन्यौन[5]। राजा ने अपने इस लड़के के शादी पचास सुन्दर लड़कियों के साथ कर दी थी पर उसको उनमें से एक भी पसन्द नहीं थी। राजा उसकी इस बात से बहुत गुस्सा था।

उसने यह घोषणा करा रखी थी कि अगर कोई लड़की उसके बेटे की पत्नियों से ज़्यादा सुन्दर होगी और वह उसके बेटे को अच्छी लग गयी तो वह उसको और उसके माता पिता दोनों को मार देगा।

---

[4] A Tortoise With a Beautiful Daughter – a folktale from Southern Nigeria, Africa.
Translated from the book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910.
Hindi translation this book is available from : hindifolktales@gmail.com .

[5] Ekpenyon – name of the Prince

अब राजा के राज्य में एक कछुआ भी रहता था जिसकी बेटी बहुत ही सुन्दर थी। मॉ ने सोचा कि इतनी सुन्दर लड़की को घर में रखना ठीक नहीं क्योंकि अगर कहीं राजकुमार ने उसको देख लिया और वह उसको पसन्द करने लगा तो वे सब बहुत मुश्किल में पड़ जायेंगे।

उसने अपने पति से कहा कि या तो वह अपनी बेटी को मार दे या फिर उसे कहीं जंगल में छोड़ आये। पिता कछुआ अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था इसलिये वह उसको मारना नहीं चाहता था सो किसी तरीके से उसने उसको तीन साल तक घर में छिपा कर रखा।

एक दिन जब कछुआ और उसकी पत्नी दोनों अपने खेतों पर गये हुए थे राजकुमार शिकार खेलने के लिये जंगल में उनके घर की तरफ आ निकला।

उसको एक चिड़ा कछुए के घर की बाड़ पर बैठा दिखायी दे गया। चिड़ा कछुए की उस सुन्दर बेटी की तरफ इतनी मग्न हो कर देख रहा था कि उसको राजकुमार के आने का पता ही नहीं चला।

राजकुमार ने एक तीर चलाया और वह चिड़ा मर कर उस घर की बाड़ के अन्दर की तरफ गिर पड़ा। राजकुमार ने अपने एक नौकर को उसे उठाने के लिये भेजा।

जब वह नौकर उस चिड़े को ढूँढ रहा था तो उसको कछुए की वह लड़की दिखायी दे गयी। वह भी उस लड़की की सुन्दरता से

इतना ज़्यादा प्रभावित हुआ कि वह तुरन्त ही राजकुमार के पास भागा गया और जा कर उसे जो कुछ उसने देखा था बता दिया।

राजकुमार भी तुरन्त भागा भागा इसको देखने आया और उस बच्ची को देखते ही उसको उससे प्यार हो गया। उसने वहाँ रुक कर तब तक उससे बातें कीं जब तक कि वह उससे शादी के लिये राजी नहीं हो गयी।

बाद में वह घर चला गया पर उसने अपने पिता को यह नहीं बताया कि वह उस कछुए की लड़की को प्यार करने लगा था।

अगले दिन उसने अपने खजांची को बुलाया और साठ कपड़े के टुकड़े और तीन सौ डंडियॉ[6] कछुए को भिजवायीं। फिर दोपहर बाद वह खुद कछुए से मिलने गया और उससे कहा कि वह उसकी बेटी से शादी करना चाहता था।

कछुआ तुरन्त भॉप गया कि जिस पल से वह डर रहा था वही सामने खड़ा था और अब उन तीनों की ज़िन्दगी को खतरा था।

पर वह धीरज रख कर राजकुमार से बोला — "अगर राजा को इस बात का पता चल गया तो वह न केवल मुझे बल्कि मेरी पत्नी और बेटी को भी मार देंगे।"

राजकुमार बोला कि उन लोगों के मारे जाने से पहले वह खुद को मार लेगा। काफी जिद के बाद आखिर कछुआ मान गया और

[6] Translated for the word "Rods" – maybe used as currency in Nigeria in those times.

उसने कहा कि वह अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर देगा पर जब उसकी बेटी शादी के लायक हो जायेगी तब।

उसके बाद राजकुमार घर चला गया और जा कर अपनी मॉ को बताया कि वह क्या कर के आया था।

सुन कर तो उसकी मॉ को बहुत चिन्ता हो गयी कि अब तो उसका बेटा गया। वह अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी। उसको विश्वास था कि जब राजा इस सबके बारे में सुनेगा तो वह जरूर ही उसको मार देगा।

हालॉकि रानी जानती थी कि राजा जब यह सब सुनेगा तो कितना गुस्सा होगा फिर भी वह चाहती थी कि उसका बेटा उस लड़की से शादी जरूर करले जिसको वह इतना प्यार करता था।

यह सोच कर वह कछुए के पास गयी और उसको कुछ और पैसे, कपड़े, याम[7] और पाम का तेल[8] अपने बेटे की तरफ से दे आयी ताकि वह अपनी बेटी की शादी किसी और से न कर दे।

अगले पॉच साल तक राजकुमार कछुए की बेटी ऐडैट[9] से बराबर मिलता जुलता रहा।

[7] Yam is kind of root vegetable widely eaten in Nigeria. It reaches up to even 10 pound of weight each piece. See its picture above.

[8] Palm oil – extracted from palm tree nuts and is most used cooking oil in Nigeria

[9] Adet – name of the daughter of the Tortoise

ऐडैट को शादी के घर[10] में रखने से ठीक पहले राजकुमार ने अपने पिता से कहा कि वह ऐडैट से शादी करने जा रहा था।

यह सुन कर तो राजा आग बबूला हो गया। उसने अपने सारे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि फलॉ दिन सारे लोग फैसला सुनने के लिये चौराहे पर आयें।

निश्चित दिन पर सारे लोग चौराहे पर इकट्ठा हुए और राजा और रानी भी सबके बीच में अपने अपने पत्थरों पर बैठ गये। बैठने के बाद राजा और रानी ने अपने नौकरों को ऐडैट को वहॉ लाने के लिये कहा।

जब ऐडैट वहॉ आयी तो राजा खुद भी उसकी सुन्दरता देख कर हैरान रह गया। फिर उसने अपने आये हुए लोगों से कहा कि उसने उन सबको यह कहने के लिये बुलाया है कि वह अपने बेटे से बहुत नाराज है क्योंकि उसने राजा का कहना नहीं माना है और वह बिना उसकी जानकारी के ऐडैट से शादी करने को तैयार है।

पर अब जब उसने ऐडैट को देख लिया है तब वह यह यकीन से कह सकता हूॅ कि वह वाकई बहुत सुन्दर है और उसके बेटे ने बहुत ही अच्छी लड़की चुनी है। इसलिये वह अपने बेटे को माफ करता है।

[10] Translated for the words “Marriage House”. In Nigeria this is a custom that a few years (or for a few months depending up on the custom) before the marriage the girl is kept in a separate house with her friends. She is kept there well and is fed well so that when she is married she looks good, happy and healthy and there she is taught how to live in in-law’s house also.

जब लोगों ने लड़की को देखा तो उनको भी लगा कि लड़की बहुत अच्छी है और राजकुमार की पत्नी बनने के लायक है। उन्होंने राजा से प्रार्थना की कि अब वह उस घोषणा को वह बिल्कुल ही खत्म कर दे जो उसने पहले करायी थी। राजा ने मान लिया।

पर क्योंकि यह घोषणा ईबो के नियमों[11] के अनुसार हुई थी इसलिये राजा ने आठ ईबो को बुलवाया और उनको बताया कि अब राज्य भर में से वह घोषणा हटा ली गयी है और अब कोई भी माता पिता और उनकी बेटी जो राजकुमार की पत्नियों से ज़्यादा सुन्दर होगी नहीं मारी जायेगी।

फिर राजा ने ईबो को उस घोषणा को हटाने के लिये पाम की शराब और पैसे दिये और उनको आदर सहित वापस भेज दिया। उनको भेजने के बाद राजा ने अपने बेटे और ऐडैट की शादी की घोषणा की और दोनों की शादी उसी दिन कर दी गयी।

दोनों की शादी की शानदार दावत दी गयी जो पचास दिन तक चली। राजा ने पॉच गाय मारीं। दावत में बहुत सारा फू फू था, पाम के तेल के चौप थे और सड़कों पर पाम की शराब के बड़े बड़े बर्तन रखे हुए थे ताकि किसी को पीने की कोई कमी न रहे।

कुछ स्त्रियों ने राजा के सामने एक नाटक पेश किया और सारे समय गाना और नाचना चलता रहा। राजकुमार और उसके साथियों ने भी चौराहे पर कई खेल खेले।

[11] Laws of Igbos

जब शादी की दावत खत्म हो गयी तो राजा ने राज करने के लिये कछुए को अपना आधा राज्य दे दिया और उसके खेत में काम करने के लिये तीन सौ दास दे दिये।

राजकुमार ने भी अपने ससुर को उसकी सेवा के लिये दो सौ स्त्रियॉ और सौ सुन्दर लड़कियॉ दीं। इस सबको पा कर कछुआ राज्य का सबसे अमीर आदमी हो गया।

राजकुमार और कछुए की बेटी दोनों बहुत दिनों तक आराम से रहे। फिर जब राजा मर गया तो उसके बाद राजकुमार राजा बन गया।

यह कहानी बताती है कि कछुआ सारे आदमियों और जानवरों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द होता है।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सबको अपनी सुन्दर बेटी अपने पास ही रखनी चाहिये क्योंकि कौन जाने कब कोई राजकुमार आ जाये और उसका हाथ पकड़ कर ले जाये और कब वे शाही परिवार में शामिल हो जायें और वे खुद भी अमीर हो जायें और अपने परिवार को भी अमीर बना दें।

3 कछुआ और गिरगिट[12]

कछुए की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार कछुए के घर में नमक खत्म हो गया और नमक के बिना कछुए को खाना नहीं भा रहा था सो उसने सोचा कि क्यों न मैं अपने भाई से थोड़ा सा नमक माँग लाऊँ।

उसके भाई के पास बहुत नमक था सो वह अपने भाई से थोड़ा सा नमक माँगने गया। उसके भाई ने उसको थोड़ा सा नमक दिया और पूछा — "पर तुम यह नमक घर तक ले कर कैसे जाओगे?"

कछुआ बोला — "अगर तुम इस नमक को किसी खाल के टुकड़े में बाँध दो तो मैं इसे रस्सी से घसीटते हुए घर तक ले जाऊँगा।"

"अरे तुम तो कमाल के आदमी हो, बड़ा अच्छा सोचा है तुमने।" कह कर उन लोगों ने उस नमक की एक गठरी बनायी और रस्सी से उस गठरी का मुँह कस कर बाँध दिया।

रस्सी कछुए ने अपने कन्धे पर डाली और अपनी धीमी चाल से उस गठरी को घसीटते हुए अपने घर की तरफ चल दिया।

[12] Tortoise and Chameleon – a folktale from Africa

चलते चलते अचानक उसे बोझ कुछ भारी सा लगा तो उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसने देखा कि एक गिरगिट उसकी गठरी पर बैठा हुआ था।

कछुआ बोला — "ओ गिरगिट भाई, तुम मेरी नमक की गठरी के ऊपर क्या कर रहे हो? इसके ऊपर से उतर जाओ। मैं तुमको इस गठरी पर बिठा कर इस गठरी को नहीं खींच सकता।"

गिरगिट बोला — "यह तुम्हारा नमक नहीं है यह मेरा नमक है। मैं तो इधर टहलने निकला था कि यह गठरी मुझे जंगल में पड़ी मिली इसलिये मैंने इस पर अपना अधिकार जमा लिया और अब यह गठरी मेरी है।"

कछुआ बोला — "यह तुम क्या बेकार की बातें कर रहे हो। तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि यह गठरी मेरी है क्योंकि मैं इसे रस्सी से खींच रहा हूँ और यह रस्सी इस गठरी से बँधी है।"

काफी कहने सुनने के बाद भी जब गिरगिट नहीं माना तो आखिर कछुए को गाँव के बड़े लोगों के पास जाना पड़ा। गिरगिट भी कछुए के साथ गया। वहाँ एक बूढ़े आदमी के सामने यह मामला रखा गया।

पहले कछुआ बोला कि वह अपने हाथ पैर छोटे होने की वजह से उस गठरी को केवल खींच कर ही ले जा सकता था इसलिये वह अपनी उस गठरी को केवल खींच कर ही ले जा रहा था।

फिर गिरगिट बोला कि उसे तो यह गठरी जंगल में पड़ी मिली थी और पड़ी हुई चीज़ को जो भी उठायेगा उस पर उसी का अधिकार होगा।

बड़े लोगों ने कुछ देर सोचा विचारा। परन्तु अधिकतर लोग गिरगिट की तरफ थे इसलिये यह निश्चय किया गया कि नमक की गठरी को कछुए और गिरगिट में आधा आधा बॉट दिया जाये। वे सब यह सोच रहे थे कि शायद गिरगिट उनको भी थोड़ा सा नमक दे देगा।

कछुआ इस फैसले से बड़ा नाउम्मीद हो गया क्योंकि वह जानता था कि नमक उसका है लेकिन फिर भी वह कुछ नहीं कर पा रहा था और कछुए का नमक कछुए और गिरगिट में आधा आधा बॉट दिया गया।

गिरगिट ने तुरन्त ही नमक की गठरी सॅभाल ली और कछुए के लिये नमक का एक छोटा सा टुकड़ा तथा जमीन पर बिखरा हुआ थोड़ा सा नमक छोड़ कर अपने घर चल दिया।

जो नमक खाल के टुकड़े में नहीं बॅध सका वह गिरगिट ने पास में पड़ी पत्तियों में बॉध लिया था और इस तरह कछुए का नमक का हिस्सा बहुत ही कम रह गया था। पर कछुआ बेचारा क्या करता वह बेचारा उसी नमक को ले कर घर चला गया।

उधर बड़े लोगों ने भी गन्दा होने के बावजूद वह बिखरा हुआ नमक उठा लिया और अपनी अपनी पत्नियों को दे दिया।

कछुए की पत्नी उस थोड़े से नमक को देख कर बहुत नाउम्मीद हुई। और जब उसने रास्ते में घटी घटना को सुना तो उसे बड़े लोगों के बर्ताव पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

हालॉकि कछुए की चाल बहुत धीमी थी परन्तु उसका दिमाग बड़ी तेजी से दौड़ रहा था। उसने गिरगिट से बदला लेने की तरकीब सोच ली थी।

पत्नी से विदा ले कर और ऑखों में चमक ले कर कछुआ गिरगिट के घर चल दिया। कुछ दूर जाने पर ही गिरगिट उसे जंगल में घूमता हुआ दिखायी दे गया। वह वहॉ उड़ने वाली चींटियॉ खा रहा था।

धीरे से बिना आवाज किये कछुआ उसके पीछे से आया और गिरगिट के शरीर पर बीच में अपना हाथ रखा और ज़ोर से बोला — "देखो मुझे क्या मिला, देखो मुझे क्या मिला।"

गिरगिट परेशान सा बोला — "यह तुम क्या कर रहे हो कछुए भाई?"

कछुआ बोला — "मैं यहॉ से गुजर रहा था कि मुझे कुछ पड़ा हुआ मिला सो मैंने उठा लिया और अब यह मेरा है। ठीक उसी तरह से जैसे उस दिन तुम्हें मेरा नमक पड़ा हुआ मिला था और तुमने मेरा नमक उठा लिया था।"

गिरगिट उस दिन की बात याद कर के डर गया। वह कछुए के सामने गिड़गिड़ाने लगा और उसकी पकड़ से आजाद होने की

कोशिश करने लगा। पर कछुआ तो आज उसको छोड़ने वाला था नहीं।

गिरगिट ने कछुए से बहुत प्रार्थना की परन्तु कछुए ने तो जिद पकड़ ली थी कि यह फैसला तो अब बड़े लोगों के सामने ही होगा।

बूढ़े लोगों ने एक बार फिर से दोनों तरफ की कहानियॉ सुनी। उनमें से एक बोला — "अगर हम लोग न्याय करना चाहते हैं तो हमें आज भी वही फैसला सुनाना पड़ेगा जो हमने नमक बॉटने के समय सुनाया था।" दूसरे लोगों को भी यही कहना पड़ा।

वही आदमी फिर से बोला — "नमक की गठरी की तरह से इस गिरगिट को भी हमें दो हिस्सों में बॉटना चाहिये और उसमें से आधा हिस्सा कछुए को मिलना चाहिये।"

कछुआ बोला — "हॉ, यह ठीक है।"

इससे पहले कि गिरगिट यह फैसला सुन कर वहॉ से भागता, कछुए ने एक बूढ़े आदमी की कमर से चाकू निकाला और तुरन्त ही गिरगिट के दो टुकड़े कर दिये। इस तरह कछुए ने लालची गिरगिट का अन्त किया।

4 कछुआ और बबून[13]

कछुए की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक शाम को कछुआ अपनी धीमी चाल से अपने घर की तरफ चला जा रहा था कि रास्ते में उसको बबून मिला।

बबून ने कछुए से पूछा — "क्या बात है कछुए भाई, आज तुम कुछ उदास लग रहे हो। आज तुमको ठीक से खाना नहीं मिला क्या?"

कछुआ बोला — "नहीं भाई, आज तो बहुत थोड़ा ही खाना मिल पाया।"

बबून के दिमाग में एक विचार उठा और वह हॅस हॅस कर नाचने लगा, फिर बोला — "कछुए भाई, चलो तुम मेरे साथ मेरे घर चलो। मेरे घर में तुम्हारे लिए खाना बिल्कुल तैयार है।"

[13] Tortoise and Baboon – a folktale from Nigeria, West Africa

कछुए ने कहा — "धन्यवाद भाई।" और वह बबून के पीछे पीछे उसके घर की तरफ जाने वाले रास्ते पर चल दिया।

अब कछुआ बेचारा जितनी तेज़ी से चल सकता था चल रहा था परन्तु फिर भी उसकी चाल बबून की चाल से तो धीमी ही थी, खास कर के जब जबकि उसको पहाड़ी पर चढ़ना होता था।

एक दो बार रुक कर वह थोड़ा सा सुस्ताया भी परन्तु कब तक, जमीन बहुत पथरीली थी इसलिये भी उसको चलने में बहुत परेशानी हो रही थी। पर मरता क्या न करता शानदार खाने के लालच में वह चलता ही रहा।

आखिरकार वह उन झाड़ियों के पास तक पहुँच गया जिनको बबून अपना घर कहता था।

बबून तो कछुए से बहुत पहले ही पहुँच गया था। वह वहाँ पहुँच कर उछल कूद कर रहा था। जैसे ही उसने कछुए को देखा तो बोला — "भगवान मेरी पूँछ बनाए रखे तुमने यहाँ आने में कितनी देर कर दी कछुए भाई। यह तो अगला दिन हो गया।"

लम्बी यात्रा की हॅपहॅपी के बाद कछुआ बोला — "मुझे इस देर का बहुत दुख है भाई परन्तु अब तक तो खाना तैयार करने के लिए तुमको काफी समय मिल गया होगा इसलिये अब तुम नाराज न हो कर मुझे खाना खिला दो तो बड़ा अच्छा हो। मुझे बहुत भूख लगी है।"

बबून हाथ मलते हुए बोला — "हॉ वह तो तुम ठीक कहते हो। खाना बिलकुल तैयार है। आओ इस पेड़ पर चढ़ जाओ। यहॉ बाजरे की शराब के तीन घड़े मैंने तुम्हारे लिये ही रखे हैं।"

कछुए ने ऊपर की ओर देखा तो देख कर तुरन्त ही समझ गया कि वह इतना ऊॅचा कभी नहीं चढ़ पायेगा। उधर बबून भी यह बात अच्छी तरह जानता था कि कछुआ वहॉ तक कभी भी नहीं चढ़ पायेगा।

कछुआ गिड़गिड़ाते हुए बोला — "बबून भाई, तुम ही मेरे लिए एक घड़ा नीचे उतार दो न। मैं बहुत थक गया हूॅ।"

परन्तु बबून एक पल में ही ऊपर चढ़ गया और ज़ोर ज़ोर से बोला — "जिसको मेरे साथ खाना खाना है तो उसे पेड़ पर तो चढ़ना ही पड़ेगा।"

यह सुन कर बेचारा कछुआ भूखे पेट ही अपने घर की तरफ चल दिया। वह अपने आपको कोस रहा था कि वह पेड़ पर क्यों नहीं चढ़ सकता। मगर चलते चलते इस बेरहम बबून से इसका बदला लेने के लिए उसके दिमाग में एक तरकीब आयी।

कुछ दिनों बाद कछुए ने बबून को अपने घर खाना खाने का न्यौता दिया। बबून को पहले तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कछुआ तो इतना कंजूस है यह मुझे दावत कैसे दे रहा है।

फिर उसने सोचा कि कछुआ तो बहुत ही धीमा और भला आदमी है उसके मन में मेरे लिए कोई बुराई नहीं हो सकती इसलिये

मुझे उसके घर खाना खाने जाने में कोई हरजा नहीं है। यह सोच कर वह तय किये गये समय पर कछुए के घर की तरफ चल दिया।

उस समय सूखे का मौसम था और लोगों ने अपने खेतों के सूखे पत्ते, डंडियॉ और घास आदि को आग लगा कर जला दिया था। और जब आग लगती है तो जमीन तो काली हो ही जाती है।

नदी के उस पार ऐसी ही जली हुई काली जमीन का एक बड़ा सा मैदान था जिसे पार कर के कछुए का घर था और वहीं बबून को कछुए के घर खाना खाने जाना था।

कछुए के पास सोंधी सोंधी खुशबू वाले खाने का बर्तन भरा रखा था। कछुए ने जब बबून को आते देखा तो बोला — "आओ बबून भाई आओ, तुमको अपने घर में देख कर आज मुझे बहुत खुशी हुई। आओ खाना खायें बहुत भूख लगी है।"

दोनों खाना खाने बैठे तो कछुए ने देखा कि बबून के तो दोनों हाथ काले हैं।

कछुआ बोला — "अरे बबून भाई, तुम्हारे तो दोनों हाथ काले हैं। क्या तुम्हारी मॉ ने तुम्हें यह नहीं सिखाया कि खाना खाने से पहले हाथ धो लेने चाहिए?

देखो तो तुम्हारे हाथ कितने गन्दे हैं। सारी कालिख उन पर लगी है। जाओ पहले हाथ धो आओ फिर खाना खायेंगे। और हॉ ज़रा जल्दी आना मुझे बहुत भूख लगी है।"

बबून ने अपने हाथ देखे तो वे तो सचमुच ही बहुत काले थे और वे इतना बड़ा काला मैदान पार करने के बाद तो बिल्कुल ही काले हो गए थे।

बबून भागा भागा गया और नदी से नहा कर लौटा तो उसे फिर से उसी काले मैदान को पार करना पड़ा इसलिये उसके हाथ फिर से काले हो गए थे।

कछुआ बोला — "यह नहीं चलेगा बबून भाई, यदि मेरे साथ खाना खाना है तो सफाई से ही खाना खाना होगा और हॉ जल्दी करो खाने का समय निकला जा रहा है मैंने तो अपना खाना खाना शुरू भी कर दिया है।"

बेचारा बबून बार बार नदी में नहा कर आता मगर कछुए के घर तक आते आते उस काले मैदान की वजह से उसके हाथ बार बार गन्दे हो जाते। और कछुए ने उसे गन्दे हाथों खाना खाने से मना कर दिया था।

आखिर खाना खत्म हो गया। अब बबून को लगा कि उसको तो छला गया है इसलिये अबकी बार जब वह हाथ धोने के लिए नदी पर गया तो वापस नहीं आया।

वह सीधा अपने घर भाग गया। और कछुआ भी इधर खाना खा कर अपने हाथ पैर सिकोड़ कर अपने खोल में सो गया। इस तरह से कछुए ने बबून से अपने अपमान का बदला लिया।

5 तुमने बुलाया है[14]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार नाइजीरिया के एक जंगल में एक कछुआ और एक बबून बहुत अच्छे दोस्त थे और अक्सर ही खाना एक साथ खाया करते थे।

उन दिनों जानवरों की दुनियॉ में बहुत बड़ा अकाल पड़ा हुआ था और किसी को भी खाना काफी नहीं मिल पा रहा था।

ऐसे समय में भी एक दिन बबून ने कछुए के साथ एक मजाक करने की सोची और उसको अपने घर खाने पर बुलाया।

"खट खट खट खट।"

कछुए ने पूछा — "कौन है।"

बबून बोला — "मैं हूँ।"

[14] You Asked For It – an Igbo folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories" by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

कछुआ बोला — "यह मैं कौन? क्या तुम्हारा कोई नाम नहीं है?"

बबून बोला — "मैं तुम्हारा दोस्त... ।"

कछुआ ने उसे चिढ़ाया — "अरे कौन सा दोस्त?"

बबून कुछ गुस्से से बोला — "मुझे नहीं लगता तुम्हारा कोई दोस्त है भी। कई दोस्तों को तो छोड़ दो।"

कछुआ हॅसते हुए बोला — "आओ बबून, मैं तो यूॅ ही ज़रा मजाक कर रहा था।"

बबून ने अन्दर आ कर पूछा — "आज कल तुम इस अकाल के दिनों में कैसे गुजारा कर रहे हो?"

कछुआ बोला — "बहुत ही मुश्किल हो रही है। ऐसा लग रहा है कि बस मैं तो मर ही जाऊॅगा। मेरा अनाज का भंडार घर खाली है और अब तो पेड़ की छाल भी मुझे अच्छी लगती है।"

बबून मुस्कुराया जैसे उसने गोरिल्ला के साथ कुश्ती का कोई मुकाबला जीत लिया हो। और अन्दर तो वह इतनी ज़ोर से हॅसा कि उसकी थोड़ी सी हॅसी बाहर भी निकल गयी और कछुए ने भी उसे सुन लिया।

बबून उछल उछल कर हॅसा — "हो हो हो हो।" और बोला — "आज तुम्हारी किस्मत बहुत अच्छी है कछुए दोस्त। आज शाम का खाना तुम मेरे साथ खाओ।"

कछुआ खुश हो कर बोला — "ओह बबून, यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

बबून आगे बोला — "आज तुम दोपहर का खाना मत खाना ताकि तुम मेरे घर ज़्यादा खाना खा सको। इस तरह से तुम्हारे पास मेरे घर में वह खाना खाने के लिये ज़्यादा जगह रहेगी जो मैं खास तुम्हारे लिये शाम को बनाने वाला हूँ। यह मेरी एक खास चीज़ है जो मेरे परिवार में बहुत सालों से बनती चली आ रही है।"

यह सुन कर कछुए के मुँह में पानी भर आया और वह बबून के घर का खाना खाने के लिये बेचैन हो उठा।

कछुआ बोला — "अच्छा बबून मेरे दोस्त, अब तुम मुझको ज़्यादा मत तरसाओ। बस अब तुम भाग जाओ और हमारे खाने की तैयारी करो। अब हम शाम को खाने पर मिलते हैं।"

बबून तुरन्त ही जितनी जल्दी भाग सकता था वहाँ से अपने घर भाग गया और खाना बनाने का सामान जुटाने में लग गया।

इस बीच कछुआ भी उसके पीछे पीछे हो लिया। बबून का घर कछुए के घर से क्योंकि थोड़ी दूर पर था तो कछुए ने सोचा कि क्यों न थोड़ा जल्दी ही बबून के घर के लिये रवाना हुआ जाये। क्योंकि उसको पहुँचने में तो देर लगती।

जब वह गर्मी में रेंगता जा रहा था तो उसको लगा कि वह वहाँ न जाये और घर वापस चला जाये क्योंकि गर्मी बहुत थी पर वह

यह याद कर के चलता रहा कि बबून ने उसको बढ़िया खाना खिलाने का वायदा किया था।

सो आखिरकार वह बबून के घर आ पहुँचा।

बबून ने उसको देख कर कहा — "आओ दोस्त।"

कछुए ने पूछा — "धन्यवाद दोस्त। क्या खाना तैयार है?"

बबून बोला — "नहीं, अभी नहीं। आखिरी चीज़ें डालने के लिये बस मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। इसके अलावा मैं उसको ठंडा भी नहीं होने देना चाहता था। तुम बैठो बस मैं खाना अभी तैयार कर के लगाता हूँ।"

कछुए ने पूछा — "मैं तुम्हारी कोई सहायता करूँ?"

बबून बोला — "नहीं नहीं बिल्कुल नहीं। बस तुम आराम से बैठो। मैं खाना अभी ले कर आया। आज तुम मेरे मेहमान हो।"

सो कछुआ आराम से बैठ गया और बबून खाना बनाने चला गया। जब कछुआ इन्तजार कर रहा था तो उसको खाने की बहुत ही अच्छी खुशबू आ रही थी।

उसने सोचा — "क्या यह मुर्गी का रसा है या फिर मक्का की रोटी? कितना समय हो गया ये सब चीज़ें खाये हुए।"

कुछ देर बाद बबून आया और बोला — "आओ दोस्त खाना तैयार है।"

"अरे वाह। चलो। मैं तो इस लम्बे रास्ते से आते आते थक गया हूँ। तुम मेरे घर से काफी दूरी पर रहते हो। या पता नहीं गर्मी

और भूख दोनों ने शायद इस रास्ते को ज़रा ज़्यादा ही लम्बा बना दिया था।"

"कोई बात नहीं, तुम चिन्ता मत करो और खाना खाओ। देखो वह ऊपर रखा है खाना। चढ़ो और ले लो।" इतना कह कर बबून ने पेड़ के ऊपर की तरफ इशारा किया जहॉ उसने खाना लगाया हुआ था।

कछुआ सोच रहा था कि वह ऊपर कैसे चढ़े। बबून तो पहले ही वहॉ चढ़ चुका था और उसने खाना खाना शुरू भी कर दिया था।

कछुआ नीचे से ही बोला — "दोस्त, मैं इतनी ऊपर तो चढ़ नहीं सकता तुम थोड़ा सा खाना मेरे लिये ऊपर से ही नीचे फेंक दो।"

"नहीं, मैं यह तो सह सकता हूॅ कि तुम मेरे साथ खाना न खाओ पर मैं इतना अच्छा खाना नीचे फेंक कर बर्बाद नहीं कर सकता।"

कछुआ बोला — "तो मैं तो उतना ऊपर चढ़ नहीं सकता तुमको तो यह मालूम ही है।"

"यह तो बड़े शर्म की बात है। खाना तो यहीं इसी पेड़ की शाख पर रखा है। यही मेरी खाने की मेज है। अगर तुमको खाना खाना है तो आओ और ले लो।"

कछुए ने सोचा यह तो बड़ी बेरहमी और बेशर्मी की बात है। फिर भी उसने उस पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की पर जब तक वह वहॉ पहुँचा तब तक बबून ने वह सारा खाना खत्म कर लिया था।

जब बबून ने खाना खा लिया तो कछुए ने अपनी छड़ी उठायी और बड़े दर्द के साथ वापस अपने घर की तरफ चल दिया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह गर्मी थी या भूख थी या फिर बबून का धोखा था जो उसको परेशान कर रहा था।

वह जब तक अपने घर पहुँचा तब तक उसे बहुत ज़ोर की प्यास लग आयी थी और उसके पैर गर्म रेत से जल रहे थे। वह घर आ कर ठंडा पानी पी कर लेट गया और बबून से इसका बदला लेने के बारे में बहुत देर तक सोचता रहा।

कई बाजार हफ्ते[15] बाद बबून को कछुए का खाना खाने के लिये बुलावा आया। पहले तो उसने सोचा कि शायद कछुआ उससे उस दिन का बदला लेने की सोच रहा हो पर फिर उसने सोचा कि कछुए ने उस दिन की घटना को मजाक में ही लिया होगा।

इसके अलावा कछुए के पास तो कोई ऐसी जगह ही नहीं है जहॉ वह खाना रख सके और मैं वहॉ न पहुँच सकूँ। सो उसने सोचा कि वह उसका बुलावा मान लेगा।

[15] In many African village markets are still organized on weekly basis that is why it is called market week.

कछुए का घर बहुत दूर था। बबून ने भी कछुए की तरह अपनी यात्रा उस खाने के स्वाद से ही शुरू की जो उसके मेजबान कछुए ने उसको खिलाने का वायदा किया था।

गर्मी वाकई बहुत थी। यह उस दिन से भी कहीं ज़्यादा थी जब उसने कछुए को खाने के लिये बुलाया था क्योंकि अब तो जंगलों में आग भी लगनी शुरू हो गयी थी।

काफी घास फूस और झाड़ियॉ सूख चुकी थीं और आग की वजह से सारी जमीन काली हो रही थी।

उसके और कछुए के घर के बीच में एक झील पड़ती थी और झील के बाद एक मैदान था जो झाड़ियों के जला देखने की वजह से सारा काला हो गया था।

बबून ने उस झील को बिना किसी मुश्किल के पार कर लिया। जब वह कछुए के घर पहुॅचा तो उसने आराम की सॉस ली कि आखिर वह कछुए के घर आ ही गया था।

उसने देखा कि कछुआ एक बर्तन में कुछ चला रहा था। उसे लगा कि वह दलिया रहा होगा। वहॉ पहुॅच कर वह कछुए से बोला — "लगता है कि तुम तो बहुत ही अच्छे रसोइये हो।"

कछुए ने उसको घर के अन्दर लाते हुए कहा — "आओ बबून भाई, मुझे लग रहा है कि तुमको यहॉ समय पर आने में कोई मुश्किल नहीं हुई। मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गये। आओ बैठो। मैं अभी खाना लगाता हूॅ।"

कछुए ने बर्तन में से खाना निकाला और पेड़ के एक कटे हुए तने पर सजा कर लगा दिया और बबून उस पेड़ के तने के पास बैठ गया।

वह खाना खाना शुरू करने ही वाला था कि कछुए ने उसके हाथ देखे तो वह चिल्लाया — "रुक जाओ। क्या तुमको खाने का ढंग भी नहीं आता? तुम्हारे तो हाथ ही बहुत काले हो रहे हैं। और ये तो उतने ही काले है जितना कि कोई पकाने वाला बर्तन। मेरा तो दो साल का बच्चा भी यह जानता है कि खाना कैसे खाना चाहिये।"

यह सुन कर बबून ने खाने से तुरन्त ही अपने हाथ खींच लिये और उनकी तरफ देखा। उसको भी लगा कि उसके हाथ तो वाकई बहुत गन्दे थे।

वह बोला — "मुझे लगता है कि ये मेरे हाथ गन्दे तब हो गये जब मैं वह मैदान पार कर के यहाँ आ रहा था।"

"यकीनन ये तभी गन्दे हुए होंगे। अब तुम झील पर जाओ और अपने हाथ धो कर आओ तब तक मैं खाने के लिये तुम्हारा इन्तजार करता हूँ।"

बबून भागा भागा उस काले मैदान में से हो कर झील पर गया, अपने हाथ धोये और वापस लौटा। पर जब वह वापस लौट रहा था तब भी उसको वही काला मैदान पार कर के आना था।

सो जब तक वह कछुए के पास आया उसके हाथ फिर से काले हो गये थे। अबकी बार उसके हाथ पहले से भी ज़्यादा काले थे क्योंकि वे गीले थे।

कछुआ ने उसको चिढ़ाया — "दोस्त तुम्हारे हाथ तो पहले से भी ज़्यादा गन्दे हैं। क्या बात है? ऐसा लगता है कि यह कालिख तुम्हें बहुत भा गयी है। तुम कालिख से कुश्ती लड़े थे या फिर उसमें तैरे थे?

जाओ फिर से जाओ और साफ हो कर आओ। और अच्छा हो अगर तुम जल्दी से आ जाओ क्योंकि नहीं तो मेरा यह खाना बस अब खत्म होने ही वाला है।"

सो बबून अपने हाथ धोने के लिये फिर से झील की तरफ भागा। उसको भूख भी बहुत लग रही थी। पर जब भी उसने कछुए के घर तक पहुँचने के लिये वह काला मैदान पार किया उसके हाथ उस मैदान की कालिख से काले हो गये।

इस बीच कछुआ अपने घर में दावत खा रहा था और खाना भी अब करीब करीब खत्म होने पर आ रहा था।

जब तक बबून तीसरी बार कछुए के घर आया खाना खत्म हो गया था पर हाथ उसके अभी भी काले ही थे। अब उसकी समझ में आ गया कि यह मजाक कछुए ने उससे बदला लेने के लिये किया था।

गुस्से से भरा भूखा बबून कछुए को गालियॉ देता हुआ अपने घर लौट आया।

कछुए ने अपना खाना खत्म किया और केले के पत्ते ओढ़ कर लेट गया। इस तरह से बबून से अपना बदला लिया।

कछुआ बोला — "दोस्तों, न तो तुमको खिलाड़ी वाला खेल खेलना चाहिये और न ही कभी चीते को उसकी पूँछ से पकड़ना चाहिये। तुम्हारी बड़ी हिम्मत है जो तुमने ऐसा किया।

ज़िन्दगी भर मैंने उन लोगों को धोखा दिया है जो ज़िन्दगी भर वापस मुझे धोखा देने का प्लान बनाते रहे हैं। और तुमने मुझे पहले ही धोखा दे दिया? तुम क्या अपने आपको कुछ ज़्यादा ही होशियार समझते हो?"

6 एक की ताकत[16]

बहुत पुरानी बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक राजा राज करता था जिसका नाम था ऐटुकूडो[17]। उसके पास वह सब कुछ था जो एक राजा के पास होना चाहिये।

उसके पास बहुत सारे याम[18] थे, जानवर थे, बकरिया थीं, भेड़े थीं, चॉदी के सिक्के थे, सोने के सिक्के थे। उसके पास हजारों एकड़ जमीन में खेत थे और उनकी देखभाल करने के लिये सैंकड़ों किसान भी थे।

राजा ऐटुकूडो बहुत ही दयालु था और अक्सर अपने काम करने वालों को उनकी तनख्वाह के ऊपर से इनाम भी दिया करता था।

एक साल राजा के खेत में बहुत ही अच्छी उपज हुई और उसने अपने दुश्मन को भी जीता तो वह लोगों को उनकी मेहनत के लिये कुछ इनाम देना चाहता था सो उसने अपने नौकरों के सरदार अकपन[19] को बुलाया — "अकपन।"

"जी सरकार।"

---

[16] The Power of One – a folktale from Calabar, Nigeria, Africa. Taken from the book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Guchi. 2001. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com .

[17] Etukudo – the name of the King

[18] Yam is a root vegetable which is very common and staple food in Nigeria. Sometimes its one tuber goes to weigh even up to 10 pounds. See its picture above.

[19] Akpan – Nigerian name of a male

राजा ने अकपन से कहा — "देखो खजाने की तरफ जाओ और उन चीज़ों को ले आओ जिनको तुमने कल रात गिना था। मुझे उम्मीद है कि उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं होगा।"

अकपन बोला — "नहीं मेरे सरकार, किसी ने नहीं छेड़ा। मैंने यह पहले ही देख लिया है।" और वह पीछे के कमरे में चला गया।

कुछ ही देर बाद वह उस कमरे में से बारह दूसरे नौकरों के साथ बाहर आया। ये सारे बारह नौकर एक एक टोकरी सिक्कों की लिये हुए थे। वह बोला — "सरकार, ये रहे वे सिक्के।"

राजा बोला — "अब तुम गॉव के मैदान में चले जाओ और इन सबको मेरे गॉव में रहने वालों में बॉट दो क्योंकि इस साल उन्होंने बहुत मेहनत की है। उनको उनकी मेहनत का फल तो उन्हें मिलना ही चाहिये।

जैसा कि हमारे लोग कहते हैं जब किसी डाक्टर की किस्मत चमकती है तो वह उसके दवाओं के थैले में जा कर गिरती है।"

अकपन बोला — "सरकार आप बहुत ही अक्लमन्द और दयालु राजा हैं।"

कह कर अकपन ने वे टोकरियॉ दूसरे नौकरों की सहायता से उठवायीं और उन सबको गधों पर लाद दिया। और फिर वे सब उन टोकरियों को ले कर गॉव के मैदान की तरफ चल दिये।

जब तक वे सब गॉव के मैदान में पहुॅचे तो हर कोई, जानवर भी, वहॉ खड़े हुए थे और बड़ी उत्सुकता से राजा के पैसे का इन्तजार कर रहे थे।

इससे पहले भी राजा ने उनको उनके काम के अनुसार भेंटें दे चुका था पर इस बार उसने निश्चय किया था कि वह सबको उतना देगा जितना वे मॉगेंगे।

सो जब सारे गधे वहॉ पहुॅच गये तो अकपन ने भीड़ के सामने यह घोषणा की कि हर एक को उसका मुॅह मॉगा पैसा मिलेगा।

यह सुन कर हाथी चिल्लाया — "वाह। मुझे लगता है कि मैं उतने सोने के सिक्के मॉग लूॅ जो गिने ही न जा सकें। एक ऐसा नम्बर जो इतना बड़ा हो कि उसको गिनने से पहले ही तुम्हारा जबड़ा टूट जाये।"

खरगोश बोला — "इसका मतलब है कि तुमको उतने सारे खाने की जरूरत है। मुझे तो केवल सौ चॉदी के सिक्के चाहिये।"

शेर बोला — "और मुझे तो दो सौ चॉदी के सिक्के चाहिये।"

बन्दर बोला — "मैं समझता हूॅ कि पॉच सौ सोने के सिक्के मेरे लिये काफी होंगे।"

गोरिल्ला बोला — "एक हजार चॉदी के सिक्कों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?"

अकपन बोला — "तुम समझो कि ये सब तुमको मिल गये।" और उसने गोरिल्ला के पैर के तलवे पर एक निशान बना दिया

ताकि वह उन लोगों को पहचान सके जिनकी मॉग पूरी हो चुकी थी।

आखीर में वह कछुए के पास आया और उससे पूछा — "ओ बूढ़े कछुए, तुमको कितना चाहिये?"

कछुआ बोला — "एक।"

अकपन ने पूछा — "एक क्या? एक हजार, एक सौ, एक क्या?"

कछुआ बोला — "केवल नम्बर एक।"

"ठीक है, ओ सब कुछ जानने वाले, जो तुम चाहो।"

बाकी भीड़ इस बात पर हॅसे बिना न रह सकी। एक बार को तो उन सबने सोचा कि कछुआ शायद या तो बहुत ही तमीज से बोल रहा है या फिर वह सन्तुष्ट है और या फिर बेवकूफ है।

कछुए ने अपने मन में कहा — "देखते हैं कि आखीर में कौन हॅसता है।"

चीता बोला — "रुको ज़रा। क्या तुम इतने सारे सिक्कों में से केवल एक सिक्का चाहते हो?"

कछुआ बोला — हॉ, केवल एक।"

चीता बोला — ठीक है ठीक है। मैं देखता हूॅ। तुम किसी शरारत पर तो नहीं हो? क्या...?

अकपन ने सब लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिये अपना गला साफ किया और बोला — "मैं अब तुम लोगों को तुम्हारी इच्छा के अनुसार सिक्के बॉटना शुरू करता हूँ।"

कह कर वह लाइन के शुरू में चला गया और कछुआ अपनी टोकरी ले कर उसके पीछे पीछे चला।

जब अकपन हाथी के पास आया तो उसने उसको उसके मॉगे हुए सोने के सिक्के देने के लिये सोने के सिक्कों की टोकरी में हाथ डाला और गिनना शुरू किया — "एक,... ।"

कछुआ तुरन्त बोला — "यह मैं हूँ।" और अकपन से वह सिक्का ले कर उसने अपनी टोकरी में रख लिया।

अकपन ने हाथी के लिये फिर से सिक्के गिनने शुरू किये — "एक... ।"

कछुआ बोला — "यह मैं हूँ फिर से।" और उसने अकपन के हाथ से वह सिक्का भी ले कर अपनी टोकरी में डाल लिया।

अकपन ने फिर गिनना शुरू किया — "एक... ।"

"फिर मैं..." और वह सिक्का भी कछुए ने अकपन से ले कर अपनी टोकरी में डाल लिया।

इस तरह से जब भी अकपन एक कहता तो कछुआ उसके हाथ से वह सिक्का ले कर अपनी टोकरी में डाल लेता।

अब तो भीड़ का धीरज टूट गया। कुछ बड़े बड़े जानवर कछुए और अकपन के पास तक आ गये और अकपन से बोले — "दूसरों की भी तो बारी आनी चाहिये।"

कछुए ने गोरिल्ले से कहा — "जब वह आवाज लगायेगा दो हजार तब तुम्हारी बारी आयेगी। इस समय तो वह एक की आवाज लगा रहा है तो यह तो मेरी बारी है।"

नौकर बोला — "एक।"

"मैं यहाँ हूँ जनाब।" कछुआ बोला।

अब तक भीड़ इस खेल को समझ चुकी थी और वहाँ से छँटने लगी थी। कछुए ने एक एक कर के सारे सिक्के अपनी टोकरी में इकट्ठे कर लिये थे और जब वह उनको उठा कर नहीं ले जा सका तो उसने उनको ले जाने के लिये राजा के गधे भी उधार ले लिये।

इस तरह कछुए ने अपनी अक्लमन्दी से राजा से केवल एक माँग कर उसके सारे सिक्के ले लिये।

7 बात करने वाला पेड़[20]

कछुए की शरारतों की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार नाइजीरिया में जानवरों के देश के सारे जानवर लड़ाई पर गये और वहाँ से वे बहुत सारा सामान लूट कर लाये। हाथी सारी फौज का नेता था और वही उन सबको जिता कर भी लाया था।

जब वे वापस आ रहे थे तो वे सब जंगल से आती एक बहुत ही ज़ोर की आवाज से डर गये जो एक बड़े से ओक के पेड़[21] में से आ रही थी।

अगर यह हाथी है तो आये और चिल्लाये मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

यह सुन कर हाथी तो डर के मारे काँपने लगा। वह पीछे हट कर बोला — "मैंने बहुत लड़ाइयाँ लड़ी हैं, मैंने बहुत सारे लड़ाई के गीत सुने हैं पर मैंने इतनी भयानक आवाज कभी नहीं सुनी।"

शेर बोला — "यह इतना ताकतवर जानवर कौन हो सकता है जो हाथी जैसे ताकतवर जानवर को भी धमका रहा है?"

---

[20] The Talking Tree – an Igbo folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com .

[21] Oak Tree – a kind of shady tree

उन्होंने सबने चारों तरफ देखा पर उनको कहीं कोई दिखायी नहीं दिया। वहाँ किसी को न देख कर उनको सबको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि जब वहाँ कोई था ही नहीं तो फिर वहाँ बोल कौन रहा था।

पर तभी उन्होंने देखा कि एक पेड़ की एक शाख उन्हीं की तरफ हिली।

उस हिलती हुई शाख को देख कर ज़िराफ घबरा कर बोला — "अरे देखो देखो यह तो पेड़ है। लगता है यह तो पेड़ बोल रहा है और लगता है कि यह तो हम पर हमला भी करने वाला है।"

हिप्पोपोटेमस[22] बोला — "अरे बेवकूफों, पेड़ भी कहीं बोला करते हैं। इस गीत की आवाज तो इस पेड़ के छेद में से आ रही है।"

शेर बोला — "अगर यह गीत इस पेड़ के छेद में से आ रहा है तो मैं अपने पंजे इस गाने वाले का गला घोटने के लिये इस्तेमाल कर सकता हूँ।" कह कर वह पेड़ के उस छेद की तरफ कूद गया।

पर जैसे ही वह उधर कूदा तो उस गीत और उसके साथ के ढोल की आवाज तो और ज़्यादा तेज़ हो गयी –

अगर यह शेर है तो आये और चिल्लाये, मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

[22] Hippopotamus – a very large animal. See his picture above.

यह सुन कर शेर दहाड़ा और अपने पिछले दोनों पैरों पर खड़ा हो कर तुरन्त ही अपनी पूँछ अपनी टाँगों के बीच में दबा कर जो बाकी बचे जानवर खड़े थे उनकी तरफ भाग लिया।

हिप्पोपोटेमस बोला — "अगर हम इस ढोल बजाने वाले को नहीं हरा पाये तो हम जनता में अपना मुँह कैसे दिखायेंगे?"

चीता बोला — "पर हम उसे देख तो पा ही नहीं रहे कि वह है कौन। फिर हम उससे लड़ें कैसे?"

बन्दर बोला — "ऐसा लगता है कि हमने जितनी लड़ाइयों में लोगों को मारा है यह हमारे उन्हीं दुश्मनों का भूत है।" कह कर वह भी उस ढोल बजाने वाले को देखने के लिये उस पेड़ की तरफ बढ़ा।

जैसे ही बन्दर ने उस बड़े ओक के पेड़ पर चढ़ना शुरू किया ढोल बजने की आवाज और तेज़ हो गयी। उसके बजने की आवाज अब इतनी तेज़ थी कि ओक का पेड़ और ज़ोर से हिलने लगा। बन्दर की पकड़ छूट गयी और वह डर के मारे नीचे गिर पड़ा। पेड़ से फिर आवाज आयी —

अगर यह बन्दर है तो आये और चिल्लाये, मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

सारे जानवरों ने उस घुसपैठिये के साथ अपनी अपनी किस्मत आजमा कर देखी पर कोई उसको देखने में सफल न हो सका। वह किसी को दिखायी ही नहीं दे रहा था।

इस बीच एक टिड्डा[23] उसी ओक के पेड़ के दूसरी तरफ बैठा हुआ बड़ी सावधानी से उस पेड़ की छाल को वहॉ से खुरच रहा था जहॉ से ढोल की आवाज आ रही थी।

जितना ज़्यादा वह टिड्डा ऊपर चढ़ता जाता था ढोल बजने की आवाज उतनी ही तेज़ होती जाती थी और जितना ढोल बजने की आवाज तेज़ होती जाती थी टिड्डे की ऊपर चढ़ने की चाल उतनी ही धीमी होती जाती थी।

सबको ऐसा लग रहा था जैसे कि दुश्मन को पकड़ने की यह कोशिश कभी खत्म ही नहीं होगी पर फिर भी जानवर अपनी अपनी कोशिश तो कर ही रहे थे पर साथ में वे डर भी रहे थे।

मगर वह टिड्डा हार नहीं माना। बहुत देर तक वह उस पेड़ की चोटी पर पहुॅचने की कोशिश करता रहा।

जब वह आधे रास्ते तक पहुॅच गया तो घुसपैठिये ने उसको देख लिया। अब उसके ढोल की ताल और उसके लड़ाई के गीत की आवाज और ज़्यादा तेज़ हो गयी।

यह सब वह उन जानवरों को डराने के लिये और टिड्डे को पेड़ से नीचे उतारने के लिये कर रहा था पर टिड्डा नीचे ही नहीं उतर रहा था।

[23] Translated for the word “Praying Mantis”. See its picture above.

अब घुसपैठिये ने बहुत ही ज़ोर से और बहुत ही डरावने ढंग से ढोल बजाना शुरू किया और अपना लड़ाई का गीत गाया –

अगर यह टिड्डा है तो आये और चिल्लाये, मैं उसको कुचल कर मार दूँगा

यह सुन कर टिड्डे की चाल थोड़ी धीमी हो गयी पर वह वहाँ से गया नहीं। उसने पेड़ पर चढ़ना जारी रखा ताकि वह यह जान सके कि वह कौन है जो जानवरों को डरा रहा है।

आखिर चढ़ते चढ़ते वह पेड़ की चोटी पर उस छेद के पास पहुँच गया जहाँ से वह गाने और ढोल बजाने की आवाज आ रही थी। उसने उस छेद में झाँका तो उसने देखा कि वहाँ तो कछुआ अपने गले में ढोल लटकाये खड़ा था।

टिड्डा वहीं से चिल्लाया — "अरे यह तो अपना कछुआ है। अरे यह तो अपना कछुआ है।"

हाँ वहाँ इस समय और कौन हो सकता था सिवाय कछुए के? कछुआ अपनी चालाकी और लालच से जानवरों की लड़ाई की सारी लूट खुद ही हड़प जाना चाहता था।

इसी लिये वह इन जानवरों के आने से पहले ही जानवरों की सेना में से गायब हो कर इस पेड़ की चोटी पर बने इस छेद में घुस कर बैठ गया था।

उसने सोचा कि वह गीत गा कर और ढोल बजा कर सब जानवरों को डरा लेगा ताकि वे डर कर अपनी लूट यहाँ छोड़ कर भाग जायें और फिर वह उनकी सारी लूट खुद ही ले लेगा।

कछुए का नाम सुनते ही पलक झपकते ही बन्दर उस ओक के पेड़ पर चढ़ गया और उसने कछुए को उसके छेद में से बाहर निकाल लिया। जानवरों ने कछुए को उसकी इस धोखाधड़ी की सजा देने का निश्चय किया।

हाथी ने पूछा — "हमको इसे क्या सजा देनी चाहिये।"

बन्दर चिल्लाया — "मार दो इसको, मार दो इसको।"

एक और जानवर बोला — "हाँ हाँ। इसको चट्टान पर पटक कर उसी तरह मसल दो जैसे हम और धोखा देने वालों को मसलते हैं।"

सब जानवर इस बात पर राजी हो गये कि कछुए को चट्टान पर पटक कर मसल दिया जाये।

कछुआ हाथी से बोला — "जहाँपनाह, मुझे मालूम है कि मैंने अपने लोगों के साथ पाप किया है और उस पाप की जो भी सजा आप मुझे देंगे मैं उसी सजा के लायक हूँ।

पर फिर भी मैं आपको यह याद दिला दूँ कि मैं एक बार आसमान से पत्थरों के ढेर पर गिर कर बच चुका हूँ[24] इसलिये मुझे

[24] Read this story in "Africa Se Kachhua Aaya-1" book by Sushma Gupta in Hindi. This book is available from : hindifolktales@gmail.com .

यकीन है कि मैं इस चट्टान पर मसले जाने के बाद भी ज़िन्दा रहूँगा।"[25]

शेर बोला — "यह बात तो कछुआ ठीक कह रहा है।"

कछुआ फिर बोला — "मैं यह खुद मानता हूँ कि मैंने अपने लोगों को धोखा दिया है और मैं उनको मुँह दिखाने के लायक नहीं हूँ इसलिये मैं अपने लोगों के साथ रहने के लायक भी नहीं हूँ।

तो फिर आप लोग मुझे मरने के लिये किसी ऐसी जगह देश निकाला क्यों नहीं दे देते जहाँ कोई नहीं रहता हो।"

गोरिल्ला बोला — "नहीं नहीं यह सजा नहीं। यह तो बहुत आसान सजा है। यह सजा तुम्हारे लिये नहीं है। इसके अलावा हम को यह कैसे विश्वास हो कि तुम बाद में हम लोगों के साथ चालाकी खेलने के लिये वापस नहीं आ जाओगे?"

कछुआ ने फिर सलाह दी — "मैं अपने ऊपर इतना शर्मिन्दा हूँ कि मैं अपनी इस शर्मिन्दगी से बहुत जल्दी छुटकारा पाना चाहता हूँ। मुझे ज़िन्दा रहने का वाकई कोई हक नहीं है।

और अगर आपको इसका यह सबूत चाहिये कि मैं आपको फिर से तंग नहीं करूँगा और मैं अपने लालच के लिये मर जाना चाहता हूँ तो फिर आप लोग मुझे नदी के किनारे कीचड़ वाले पानी में मसल दें।"

---

[25] Read this story "Har Ek" in the book "Africa Se Kachhua Aaya-1". by Sushma Gupta written in Hindi language. This book is available from : hindifolktales@gmail.com .

हिप्पोपोटेमस बोला — "नहीं नहीं, वहॉ भी नहीं। वहॉ से तो यह बदमाश बच कर भाग जायेगा।"

कछुआ बोला — "ठीक है। जैसे आप सबकी मर्जी। पर जैसे ही मैं उस कीचड़ से टकराऊँगा तो सारी कीचड़ मेरी ऑखों और नाक को ढक लेगी और मुझे दम घोट कर मार देगी।"

थोड़ी देर की बहस के बाद जानवरों ने कछुए को कीचड़ वाले पानी में ही डुबोने का निश्चय किया। पर यह पक्का करने के लिये वह कीचड़ में ज़ोर से गिरा या नहीं यह देखने के लिये हाथी को चुना गया।

बाकी जानवर पीछे की तरफ यह देखने के लिये खड़े हो गये कि हाथी कछुए को नीचे कैसे फेंकता है। हाथी ने अपनी बड़ी सूँड़ से कछुए को उसकी गर्दन से पकड़ा, उसको कई बार हवा में घुमाया और जोर लगा कर उसको कीचड़ वाले पानी में फेंक दिया।

"धम्म।" की आवाज से कछुआ उस कीचड़ में गिर पड़ा।

तुरन्त ही जानवर इस उम्मीद में उस कीचड़ वाले पानी की तरफ दौड़े कि वे उसको उसका दम घुटते हुए मरता देखें पर वह तो वहॉ कहीं था ही नहीं।

कछुआ तो चुपचाप से कीचड़ में से होता हुआ समुद्र में खिसक गया था जहॉ वह आराम से तैर रहा था। उसने जानवरों को एक बार फिर से बेवकूफ बना दिया था।

हाथी ने अपनी लम्बी सूँड़ उस कीचड़ में डाल कर बहुत इधर उधर घुमा कर देखा तो कछुआ तो उसे कहीं मिला नहीं उलटे उसकी तो सूँड़ ही कीचड़ में फँस गयी। उसने कछुए को वहाँ बहुत ढूँढा पर वह उसको कहीं नहीं मिला।

हाथी ने कीचड़ में से अपनी सूँड़ निकालने की कोशिश की तो उसकी सूँड़ में बहुत सारी कीचड़ तो लिपट ही गयी थी पर साथ में एक केंकड़ा भी उसकी सूँड़ में चिपक गया था।

वह केंकड़ा उसको गुदगुदी कर रहा था। वह उन दोनों को अपनी सूँड़ से झाड़ता हुआ हँसता हुआ वहाँ से चला गया।

जैसे ही केंकड़ा हाथी की सूँड़ से नीचे गिरा वह बोला — "यह तुमको सिखायेगा कि अगर कोई अपने घर में शान्ति से सो रहा हो तो उसको तंग नहीं करना चाहिये।"

जब जानवरों को वहाँ सब जगह ढूँढने के बाद भी कछुआ नहीं मिला तो उन्होंने उसको और ढूँढने की कोशिश छोड़ दी और अपने अपने घर चले गये।

बाद में काफी सारे जानवरों ने उस दिन को भूलने की बहुत कोशिश की और शायद वे उसे भूल भी गये हों पर टिड्डा वह दिन नहीं भूल सका।

आज भी टिड्डा बहुत धीरे और हिलते हुए चलता है क्योंकि आवाज की वे लहरें जो उसने उस दिन ओक के पेड़ पर चढ़ने में

समेट ली थीं अभी भी उसके साथ हैं और उसके शरीर को हिलाती रहती हैं। वह हमेशा अपने हाथ भी घुसपैठिये से लड़ने के लिये तैयार रखता है।

उस दिन के बाद से वह कछुआ बहुत सारे ईबो[26] लोगों में ओचे ओगु[27] यानी "वह जो हमेशा लड़ने के लिये तैयार हो" के नाम से मशहूर हो गया।

[26] Ibo or Igbo – one of the three main tribes of Nigeria – Yoruba, Hausa, and Ibo
[27] Oche Ogu

8 कछुआ और दवा वाला सूप[28]

इजापा कछुआ और उसकी पत्नी योरींपो[29] बहुत दिनों से साथ साथ रहते थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। इस बात से योरींपो बहुत दुखी रहती थी।

सो इजापा ने इस बारे में किसी डाक्टर को देखने का निश्चय किया। वह एक बहुत अच्छे डाक्टर के पास गया और उसको अपनी समस्या बतायी तो उसने इजापा को विश्वास दिलाया कि वह उसके लिये एक सूप बनायेगा जिससे उसकी इच्छा पूरी होगी।

उसने इजापा के लिये दवाओं का एक सूप बनाया जो योरींबो को एक बच्चा दे देता। उसने दवाओं वाला वह सूप बना कर गाय के स्वादिष्ट सूप में मिला दिया ताकि इजापा की पत्नी को उसे पीने में कोई परेशानी न हो। फिर उसने वह सूप इजापा को दे दिया और कहा कि वह सूप वह अपनी पत्नी को पिला दे।

सूप का वह बर्तन ले कर इजापा घर चला। रास्ते में उस सूप की खुशबू उड़ी तो वह इजापा की नाक में पहुँची। उसको लगा कि कम से कम उसे उस बर्तन में झाँक कर तो देखना ही चाहिये कि वह सूप है कैसा।

[28] Tortoise and the Medicinal Soup – a folktale from Nigeria, Africa.
Taken from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php
[29] Ijapa tortoise and his wife Yorinpo

उसने सूप के बर्तन का ढक्कन खोला और अन्दर झॉका तो देखा कि उस सूप में तो बड़े बड़े रसीले मॉस के टुकड़े पड़े थे और उस सूप की खुशबू भी बहुत अच्छी थी।

इजापा ने सोचा कि मुझे यकीन है कि योरींबो इस सूप को सारा नहीं पी पायेगी क्योंकि वह तो खाती ही बहुत कम है। मुझे उसकी सहायता करनी चाहिये। सो उसने उसमें से एक बड़ा सा मॉस का टुकड़ा निकाला और खा लिया।

वह मॉस का टुकड़ा उसको इतना अच्छा लगा कि उसने एक और मॉस का टुकड़ा निकाला और खा लिया, और फिर तीसरा, और फिर चौथा। वह दवा का सूप तो वाकई बहुत ही स्वाददार था।

उस सूप के स्वाद को चख कर इजापा को लगा कि वह डाक्टर गलत काम कर रहा था। उसको तो डाक्टर न हो कर रसोइया होना चाहिये था।

फिर उसने पॉचवॉ टुकड़ा खाया और उसके बाद तो उसने गिनना ही छोड़ दिया। जब उसका पेट काफी भर गया तो उसने फिर उस बर्तन में झॉक कर देखा तो उसमें तो अब मॉस का केवल एक ही टुकड़ा बचा था।

यह देख कर उसने वह बर्तन फिर से ढक दिया और घर की तरफ बढ़ता रहा। पर चलते चलते उसके पेट में दर्द होने लगा।

उसके पेट में दर्द इतना ज़्यादा हुआ कि बीच रास्ते में ही उसने डाक्टर को देखने का निश्चय किया।

जब तक वह डाक्टर के पास पहुँचा तब तक उसका पेट बहुत बड़ा हो गया था और वह बात भी नहीं कर पा रहा था। किसी तरह से वह डाक्टर को बता पाया कि रास्ते में उसने क्या किया था और उससे सहायता माँगी।

इजापा की बदकिस्मती से वह डाक्टर उसकी कोई सहायता नहीं कर सका और इजापा को अपने किये का फल भोगना पड़ा। उसका पेट बढ़ता ही रहा और साथ में दर्द भी।

कुछ दिनों बाद इजापा मर गया। बेचारा इजापा कछुआ।

9 हिप्पोपोटेमस और कछुआ[30]

कछुए की अक्लमन्दी की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत साल पुरानी बात है कि इसान्टिम नाम का एक हिप्पोपोटेमस[31] उस देश का सबसे बड़ा राजा हुआ करता था। वह केवल बस हाथी से ही छोटा था।

इस हिप्पो की सात मोटी मोटी पत्नियॉ थीं जिनको वह बहुत चाहता था। अक्सर ही वह लोगों को दावत भी दिया करता था जिसमें वहॉ के सारे जानवर आया करते थे।

इस हिप्पो के बारे में एक खास बात यह थी कि हालॉकि सभी हिप्पो को बहुत अच्छी तरह जानते थे पर उसका नाम उसकी सातों पत्नियों के अलावा और कोई नहीं जानता था।

एक बार हिप्पो ने दावत दी सो खाना खाने के लिये बैठने से ठीक पहले हिप्पो बोला — "आप सब मेरे यहॉ खाना खाने आये हैं पर आप सबमें से कोई भी मेरा नाम नहीं जानता। यह बात तो ठीक

---

[30] The Affair of the Hippopotamus and the Tortoise OR Why Hippopotamus Lives in the Water? – a folktale of Southern Nigeria, Africa.
Translated from the Book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com .

[31] Isantim named Hippopotamus

नहीं है कि आप में से कोई अपने मेजबान का नाम ही न जाने और वह उसके घर खाना खाने चला आये।

सो अगर आप लोग मेरा नाम नहीं बता सकते तो आप सब बिना खाना खाये घर जा सकते हैं। किसी के घर खाना खाने से पहले कम से कम उस आदमी का नाम तो जान ही लेना चाहिये न जिसके घर आप खाना खा रहे हैं।"

और क्योंकि कोई भी हिप्पो का नाम नहीं बता सका सो सारे ही लोग अच्छा खाना और टोम्बो[32] वहीं छोड़ कर अपने अपने घर चले गये।

अब यह तो उन सबकी बहुत बड़ी बेइज़्ज़ती थी कि मेजबान ने घर पर उनको खाना खाने के लिये बुला कर बिना खाना खिलाये ही घर वापस भेज दिया था। पर वे कुछ कर नहीं सकते थे क्योंकि किसी को उसका नाम ही पता नहीं था।

पर कछुआ हार मानने वाला नहीं था। उसने सोच लिया था कि वह अपनी इस बेइज़्ज़ती का बदला जरूर लेगा। जाने से पहले कछुआ उठा और बोला — "तुम क्या करोगे अगर अगली दावत के दिन मैं तुम्हारा नाम बता दूँ तो?"

[32] Tombo is a kind of Nigerian alcoholic drink

हिप्पो बोला — "इस पर मैं इतना शर्मिन्दा होऊँगा कि मैं और मेरा परिवार यह जमीन छोड़ देंगे और पानी में जा कर रहने लगेंगे।"

कछुए को यह मालूम था कि हिप्पो की सातों पत्नियों को उसका नाम मालूम है और उसको यह भी मालूम था कि हिप्पो और उसकी सातों पत्नियॉ सुबह सुबह नदी पर नहाने और पानी पीने जाया करते थे। हिप्पो आगे आगे जाता था और उसकी सातों पत्नियॉ उसके पीछे पीछे जातीं थीं।

बस कछुए ने एक प्लान बना लिया।

एक दिन जब हिप्पो और उसकी पत्नियॉ नदी पर गये हुए थे तो कछुए ने उसी रास्ते पर एक छोटा सा गड्ढा खोद दिया और एक जगह बैठ कर उन सबका नदी से लौटने का इन्तजार करने लगा।

जब हिप्पो नदी पर से लौट रहा था तो उसकी दो पत्नियॉ उसकी दूसरी पत्नियों से थोड़ा पीछे थीं।

कछुए ने हिप्पो और उसकी पॉच पत्नियों को तो निकल जाने दिया पर उन पीछे आने वाली दो पत्नियों के आने से पहले वह अपनी जगह से निकला और उस गड्ढे में जा कर छिप कर बैठ गया।

गड्ढा बहुत ही छोटा था सो उसके खोल का बहुत सारा हिस्सा बाहर दिखायी दे रहा था। जब हिप्पो की वे दोनों पत्नियॉ वहॉ तक

आयीं तो हिप्पो की आगे वाली पत्नी कछुए के खोल से टकरा गयी।

उसने तुरन्त ही अपने पति को पुकारा — "ओ इसान्टिम, मेरे पति, देखो न मेरे पैर में चोट लग गयी।"

बस कछुए को और क्या चाहिये था उसको हिप्पो का नाम मालूम पड़ गया था। वह खुशी खुशी घर वापस चला गया।

जब हिप्पो ने दूसरी दावत दी तब भी उसने वही शर्त रखी कि जो कोई भी उसका नाम नहीं जानता था उसको वहाँ खाना नहीं मिलेगा।

सो कछुआ उठा और बोला — "वायदा करो कि अगर मैं तुम्हारा नाम बता दूँ तो तुम मुझे मारोगे नहीं।"

हिप्पो ने वायदा किया कि वह उसको मारेगा नहीं।

कछुआ बोला — "इसके अलावा तुम अपना वह पुराना वायदा भी पूरा करोगे कि अगर मैंने तुम्हारा नाम बता दिया तो तुम और तुम्हारा परिवार यह जमीन छोड़ कर पानी में चला जायेगा।"

हिप्पो ने इस बात का भी वायदा किया।

तब कछुआ अपनी सबसे ऊँची आवाज में चिल्लाया — "तुम्हारा नाम इसान्टिम है।"

यह सुन कर सब लोग तो बहुत खुश हो गये और खाना खाने बैठ गये।

जब दावत खत्म हो गयी तो हिप्पो अपने वायदे के अनुसार अपनी सातों पत्नियों के ले कर नदी में चला गया और तबसे ले कर आज तक वह पानी में ही रहता है।

हालॉकि हर रात वे खाना खाने के लिये किनारे पर आते हैं पर अब वे दिन में कभी पानी से बाहर नहीं आते इसलिये अब तुम उनको कभी दिन के समय में जमीन पर नहीं देखोगे।

10 कछुए ने हाथी पकड़ा[33]

एक बार की बात है कि एक राजा एक हाथी को अपने पास रखने के लिये पकड़ना चाहता था। उसने उस हाथी को पकड़ने के लिये इनाम भी रखा पर सब बेकार क्योंकि उसका कोई भी शिकारी उस हाथी को पकड़ ही नहीं पा रहा था।

फिर राजा ने उस इनाम को बढ़ा कर अपना आधा राज्य कर दिया कि जो कोई भी उस हाथी को पकड़ कर उसके पास लायेगा वह उसको अपना आधा राज्य देगा।

एक कछुए ने यह सुना तो वह बोला "मैं लाऊँगा वह हाथी पकड़ कर।" राजा को यह सुन कर बड़ा मजा आया। वह बोला — "तुम उस हाथी को पकड़ोगे जिसको मेरे इतने सारे शिकारी नहीं पकड़ सके?"

कछुआ बोला — "हॉ सरकार, मैं हाथी को पकड़ने के लिये बिल्कुल तैयार हूँ। आप देखियेगा मैं उसको जरूर पकड़ कर ले आऊँगा और मैं उस हाथी को आपको अड़तालीस घंटे में ला कर भी दे दूँगा।" राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

कछुए ने गॉव से जंगल के रास्ते पर एक बहुत बड़ा गड्ढा खोदा। इतना बड़ा गड्ढा जिसमें एक हाथी आ जाये। उसने उसको

[33] The Tortoise Captures the Elephant – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php
[My Note: It is similar to the tale "Kachhua Aur Hathi" given after this tale.]

डंडियों और पत्तियों से ढक दिया ताकि वह ऊपर से किसी को दिखायी न दे जब तक कि उसको ध्यान से न देखा जाये।

जब यह सब हो चुका तो वह हाथी की खोज में निकला। हाथी उसको जंगल में आराम करता मिल गया।

कछुआ हाथी से बोला — "क्या तुम जानते हो कि तुम जंगल के सबसे बड़े जानवर हो और तुमको राजा होना चाहिये?"

हाथी ने तो इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था पर उसको यह विचार बुरा नहीं लगा।

कछुए ने फिर कहा — "क्या तुमको यह भी पता है कि गॉव वालों ने अबकी बार जंगल के सबसे बड़े जानवर को अपना राजा बनाने का निश्चय किया है। वे सब लोग तुम्हें राजा बनाने के लिये तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।"

"अच्छा?" जितना ज़्यादा हाथी ने इसके बारे में सुना उतना ही ज़्यादा वह अपने राजा बनने के सपने देखने लगा।

कछुए ने हाथी को बहुत सारे रंगीन मोतियों से सजाया और उसके राजा बनने की खुशी में राज तिलक वाले गाने गाते हुए वह उसको गॉव की तरफ ले चला।

जल्दी ही वे उस गड्ढे की तरफ आ गये जो कछुए ने हाथी को पकड़ने के लिये बनाया था।

कछुआ तो छोटा सा था और हल्का भी सो वह तो उस गड्ढे के ऊपर से गुजर गया पर जैसे ही हाथी उसके पीछे उस गड्ढे पर चला वह उसमें नीचे गिर गया।

कछुआ राजा के पास गया और राजा से कहा कि आपका हाथी बाहर गड्ढे में पड़ा है जा कर उसे ले आइये। राजा तो यह सुन कर बहुत खुश भी हुआ और आश्चर्य में भी पड़ गया कि जिस हाथी को मेरे इतने बड़े बड़े शिकारी आदि नहीं पकड़ सके उसको यह छोटा सा कछुआ पकड़ लाया।

राजा ने अपने आदमी भेज कर हाथी को मॅगवा लिया।

इस तरह एक छोटे से कछुए ने अपनी अक्लमन्दी से इतना बड़ा हाथी पकड़ लिया और फिर वह राजा के आधे राज्य का मालिक बन गया।

11 कछुआ और हाथी[34]

यह बहुत पहले की बात है जब जानवर भी बात करते थे। एक राजा नाइजीरिया के बोगन गॉव[35] में राज करता था।

एक बार वह राजा बहुत बीमार पड़ा और काफी दिनों तक बीमार रहा यहॉ तक कि वह मरने वाला हो गया। कई डाक्टर उसको देखने आये पर कोई उसको ठीक नहीं कर सका।

एक दवा वाले को जो जंगल में रहता था और बहुत सारे पौधे जड़ें आदि अपनी दवा बनाने के लिये इकट्ठा करता था बुलाया गया तो उसने उसको देख कर कहा कि अगर राजा को हाथी के शरीर के कुछ हिस्सों का काढ़ा बना कर पिलाया जाये तो वह बच सकता है नहीं तो वह सात दिनों के अन्दर मर जायेगा।

राजा के सरदारों ने सोचा कि वे हाथी जैसा बड़ा और खूॅख्वार जानवर कैसे लायेंगे।

सो राजा और उसके सरदारों ने मिल कर गॉव मे मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी सात दिन के अन्दर अन्दर हाथी पकड़ कर राजा के पास लायेगा राजा उसको अपना आधा राज्य दे देगा और अपनी बेटी की शादी भी उसके साथ कर देगा।

---

[34] A Tortoise and an Elephant – a folktale from Nigeria.
Taken from the Web Site : http://allfolktales.com/wafrica/tortoise_and_elephant.php
[My Note: It is similar to the tale "Kachhue Ne Hathi Pakada" given before this tale.]
[35] Gbogan village

इतने बड़े इनाम के बावजूद राज्य में किसी आदमी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह हाथी पकड़ सकता।

राजा बहुत परेशान था कि एक दिन एक कछुआ राजा के पास आया और बोला — "महाराज, मैं आपके लिये हाथी पकड़ कर ला सकता हूँ पर आपको भी उसमें मेरी सहायता करनी पड़ेगी।"

"हाँ हाँ। वह क्या? तुम बताओ मैं वह सब करूँगा जो तुम कहोगे। बस तुम मुझे हाथी पकड़ कर ला दो।" राजा बोला।

"आप मेरे लिये एक गहरा गड्ढा खुदवा दीजिये। उसे ऊपर से घास फूस और चटाई से ढक दीजिये ताकि वह गड्ढा उसके नीचे छिप जाये। और उसके ऊपर राजा के बैठने लायक एक सिंहासन रखवा दीजिये।" राजा राजी हो गया और उसने वह सब कर दिया जो कछुआ चाहता था।

अब कछुए ने थोड़े से अकारा[36] पकौड़े बनाये और जंगल की तरफ हाथी ढूँढने चल दिया। वह अपने दोस्तों और दूसरे जानवरों से भी हाथी के बारे में पूछता चलता रहा।

[36] Black-eyed beans or red beans are soaked, its skin is removed, and the beans are ground in a paste form. Some onion, green pepper and salt is added to the paste and its small balls are fried in hot oil. That is called Akara. It is very common food in Nigeria. See its picture above.

आखिरकार तीसरे दिन उसको एक हाथी एक पेड़ के नीचे आराम करता हुआ मिल गया।

कछुए ने हाथी को जगाया और बोला — "अरे हाथी भाई, तुमने यह खबर नहीं सुनी क्या?"

हाथी उनींदा सा बोला — "कौन सी खबर? तुम मेरी नींद मत खराब करो और जाओ यहॉ से। मुझे यह सब गपशप अच्छी नहीं लगती।"

कछुआ बोला — "अरे यह गपशप नहीं है। यह तो सच है। पर यह बड़े आश्चर्य की बात है कि एक राजा यहॉ पेड़ के नीचे सो रहा है।"

राजा के नाम से हाथी कुछ जागा और बोला — "कौन सा राजा? कैसा राजा? कहॉ का राजा कछुए भाई?"

कछुआ बोला — "हाथी भाई, तुम राजा, बोगन गॉव का राजा और कौन? यही तो खबर है कि इस गॉव का राजा मर गया है और बड़े लोगों ने तुमको राजा बनाने का फैसला किया है।"

अब तक हाथी जाग चुका था। वह ज़ोर से हॅसा और बोला — "तुम मजाक कर रहे हो कछुए भाई। मुझ जैसे बूढ़े बदसूरत जानवर को राजा कौन बनायेगा?"

कछुआ बोला — "मैं इस समय तुमको ज़्यादा कुछ नहीं बता सकता हाथी भाई□बस यह समझ लो कि तुम्हारे राज तिलक की तैयारियॉ ज़ोरों पर हैं और हमको यहॉ से जल्दी चलना चाहिये। देखो, यह अकारा पकौड़ा उसका एक सबूत है।"

कह कर उसने हाथी को एक अकारा पकौड़ा दिया और फिर बोला — "यह अकारा पकौड़ा तो उन तैयारियों का एक छोटा सा नमूना है। वहॉ तो और बहुत तरह के स्वादिष्ट खाने बन रहे हैं।"

हाथी ने वह अकारा पकौड़ा अपने मुँह में रखते हुए कहा — "ओह, यह तो बहुत ही स्वाद है। इसका मतलब है कि वहॉ और भी ज़्यादा स्वादिष्ट खाना बन रहा होगा। चलो जल्दी चलते हैं।"

यह सुन कर कछुआ हाथी को गॉव की तरफ ले चला। रास्ते में वह उसको बीच बीच में अकारा पकौड़ा देता जाता था और उसके लिये राज तिलक वाले गाने गाता जाता था।

जैसे जैसे हाथी राजा के महल के पास आता गया उसके आने की खबर सारे गॉव में फैल गयी। सारे लोग अपने अपने घरों से बाहर निकल आये और कछुए और हाथी के पीछे पीछे राज तिलक के गीत गाते चल दिये।

इस सबसे हाथी को भरोसा हो गया कि कछुआ झूठ नहीं बोल रहा था और अब वह उस सबमें आनन्द महसूस कर रहा था।

हाथी बोला — "तुम्हारी कहानी तो सच लगती है कछुए भाई। सारे लोग मुझे देख कर कितना खुश हो रहे हैं।"

कछुआ बोला — "मैं तुमसे झूठ क्यों बोलूँगा हाथी भाई। देखो इनके गीतों से लग रहा है कि तुम्हारा राज बहुत दिनों तक चलेगा।"

तभी हाथी को कछुए का रखवाया गया सिंहासन दिखायी देने लगा। वह देख कर तो वह बहुत ही खुश हो गया और वह उस पर जा कर बैठ गया। पर जैसे ही वह उस पर बैठा कि वह नीचे गड्ढे में गिर गया।

राजा के सिपाही तुरन्त ही वहाँ आ गये और अपने भालों से कोंच कोंच कर उस हाथी को मार डाला। वह जड़ी बूटी दवा वाला डाक्टर भी वहाँ आ गया और उसने हाथी के शरीर के हिस्सों का काढ़ा बना कर राजा को पिलाया तो राजा ठीक होता चला गया।

इस तरह एक छोटे से कछुए ने इतने बड़े हाथी को पकड़ा और अपने राजा के ठीक होने में सहायता की। बाद में अपने वायदे के मुताबिक राजा ने कछुए को अपना आधा राज्य दे दिया और उससे अपनी बेटी की शादी भी कर दी।

12 कछुआ और ढोल[37]

कछुए की यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के देशों में कही सुनी जाती है।

एक दिन एक कछुआ जंगल के रास्ते पर चला जा रहा था कि रास्ते में उसे एक पाम का पेड़[38] दिखायी दिया जिस पर बहुत सारे पाम के फल लगे हुए थे।

कछुए को भूख लगी थी और पाम के फल रसीले और मीठे दिखायी दे रहे थे जो खाने के लिये तैयार थे।

पाम का पेड़ बहुत ऊँचा था और वह उस पेड़ पर चढ़ नहीं सकता था। पर उन फलों को देख कर उसने सोचा कि काश वह उनमें से एक फल भी ले सकता।

फिर उसको एक तरकीब सूझी। उसने एक लम्बा सा डंडा उठाया और उन पाम के फलों में मारा तो कुछ पाम के फल नीचे तो गिर गये। पर बदकिस्मती से उसके उन फलों को उठाने से पहले ही वे पास के एक छेद में लुढ़क गये।

---

[37] The Tortoise and the Drum – a folktale from West Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[38] Palm tree and its fruits. See their picture above.

यह देख कर उसने कुछ और फलों को गिराने के लिये उनमें डंडा मारा। कुछ फल फिर गिर गये पर उनका भी वही हाल हुआ जो पहले वाले फलों का हुआ था। वे भी उसी छेद में लुढ़क गये।

यह देख कर कछुए ने सोचा कि यह देखने के लिये कि वे जाते कहाँ हैं वह उन फलों का पीछा करेगा सो वह उन फलों के पीछे पीछे उस छेद में उतर गया। पर उसको तो वहाँ कोई फल दिखायी नहीं दिया। वे सारे फल पता नहीं कहाँ चले गये थे।

पर क्योंकि उसको मालूम था कि वे फल उसी छेद में गये हैं सो उसने उन फलों का और ज़्यादा आगे तक पीछा करने का फैसला किया और वह और आगे आगे ही बढ़ता गया।

वह घन्टों तक चलता रहा और आखिर में उस छेद से बाहर आ गया। बाहर आ कर उसने देखा कि वह तो एक बाजार में खड़ा था। वह आत्माओं की दुनियाँ में आ गया था और वह उन्हीं का बाजार था।

कछुए ने इधर उधर देखा तो एक आत्मा वैसा ही पाम का फल खा रही थी जैसा कि उसने तोड़ा था और जिसका पीछा करते करते वह यहाँ तक आ गया था।

उसको देख कर वह तुरन्त चिल्ला पड़ा — "अरे यह तो मेरा पाम का फल है। मेरा पाम का फल वापस दो।"

उस आत्मा ने उससे यह कहते हुए माफी माँगी कि वह नहीं जानती थी कि वे पाम के फल उस कछुए के थे और उन पाम के फलों के बदले में उसने उसे एक खास ढोल देने का वायदा किया।

वह आत्मा उसको एक बड़े से मकान में ले गयी जहाँ दीवार के साथ साथ बहुत सारे ढोल कई लाइनों में लगे रखे थे। उसने कछुए से कहा कि वह उनमें से कोई सा एक ढोल ले ले।

कछुए ने उनमें से एक छोटा सा ढोल ले लिया जिसे वह आसानी से ले जा सकता था क्योंकि उसको बहुत दूर जाना था।

जब वह अपने घर लौटने लगा तो रास्ते में एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये रुका। वह जब वहाँ आराम कर रहा था तो उसने अपना वह ढोल उठा लिया और उसको डंडियों से बजाना शुरू कर दिया।

उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब ढोल के बजते ही उसके सामने बहुत अच्छे अच्छे खाने आ कर सज गये। उसके सामने वे सब खाने थे जो उसको अच्छे लगते थे। उसने खूब पेट भर कर खाना खाया।

खा पी कर उसको नींद आने लगी और वह वहीं सो गया। अब वह और आगे नहीं जा सकता था। वह सोता रहा और सोता रहा और सुबह तक सोता रहा। सुबह उठ कर उसने अपना ढोल उठाया और अपने घर चला गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने अपने गॉव के सब जानवरों को अपने घर बुलाया। जब सारे जानवर उसके घर में इकट्ठा हो गये तो उसने अपना ढोल पीटना शुरू कर दिया। बस तुरन्त ही स्वाददार खानों से भरे बहुत सारे बर्तन वहॉ आ गये।

उस स्वाददार खाने को देख कर सारे जानवर बहुत खुश हुए। सबने वहॉ तब तक खूब पेट भर कर खाना खाया जब तक वे सब खाते खाते थक नहीं गये।

अगले दिन वे सारे जानवर फिर से कछुए के घर आ गये। कछुए ने फिर अपना ढोल पीटा और फिर से बहुत सारा बढ़िया बढ़िया खाना सबके लिये आ गया। सबने फिर खूब पेट भर कर खाना खाया।

कछुए ने यह सब काफी दिनों तक किया और दूसरे जानवरों ने भी काफी दिनों तक उसके घर बढ़िया खाना खाया।

इसके बाद कछुआ ढोल पीटते पीटते थक गया तो उसने हाथी को अपना ढोल पीटने वाला बना दिया। पर जब हाथी जितने बड़े जानवर ने वह ढोल पीटना शुरू किया तो वह छोटा सा ढोल टूट गया और अब वहॉ कोई दावत नहीं हो पा रही थी।

कछुए ने फिर से उस आत्मा के पास जाने का निश्चय किया ताकि वह वहॉ से एक नया ढोल ला सके। और वह अपनी यात्रा पर चल दिया।

अपनी खुशकिस्मती से उसको वह जगह याद थी जहॉ वह पाम का पेड़ खड़ा था। वह वहीं पहुँच गया और वहॉ जा कर उसने फिर वही किया जो उसने पहले किया था।

उसने एक लम्बा सा डंडा उठाया और उससे पाम के फल तोड़ने की कोशिश की। पाम के फल तो उस डंडे से टूटे और नीचे जमीन पर बिखर भी गये पर वे पिछली बार की तरह से अबकी बार वे अपने आप उस छेद में नहीं गये।

सो कछुए ने वे सारे फल उठाये और अपने आप ही उन सारे फलों को उसी छेद में डाल दिया। फिर वह उनके पीछे पीछे चल दिया। काफी देर चलने के बाद वह वहीं निकल आया जहॉ वह पहले निकला था।

इत्तफाक से उसको वहॉ फिर वही आत्मा भी मिल गयी जिसने पहले उसको वह ढोल दिया था। उसके हाथ में पाम के फल देख कर वह उस आत्मा के ऊपर चिल्लाया — "अरे तुम फिर से? तुमने मेरे पाम के फल फिर से खा लिये? तुमको मेरे वे फल वापस देने पड़ेंगे।"

आत्मा ने पाम के वे सारे फल उसको वापस करते हुए कहा — "लो ये रहे तुम्हारे पाम के फल। मैंने तुम्हारे पाम का एक भी फल नहीं खाया है। मैं तो अभी अभी आयी हूँ और मैंने तो इनको अभी अभी नीचे से उठाया है।"

पर कछुए ने कहा — "तुम झूठ बोल रही हो तुमने मेरे कुछ पाम के फल जरूर खाये हैं।" और उसने उससे अपने पाम के उन खाये हुए फलों के बदले में कुछ माँगा।

उस आत्मा ने फिर उसको एक ढोल देने का वायदा किया।

वह उसको फिर उसी मकान में ले गयी जहाँ वह उसको पहले ले गयी थी और उसको वहाँ से कोई सा एक ढोल लेने के लिये कहा।

इस बार कछुए ने एक काफी बड़ा वाला ढोल चुना क्योंकि वह चाहता था कि हाथी उस ढोल को पीट सके और उसने यह भी सोचा कि शायद जितना बड़ा ढोल होगा वह उतना ही ज़्यादा वह खाना भी देगा।

उस ढोल को उस छेद से ऊपर लाते लाते भी कछुए को कई दिन लग गये। उसको खींचते खींचते वह बहुत थक गया था सो वह सुस्ताने के लिये एक साफ सुथरी जगह बैठ गया।

उसको अब भूख भी लग आयी थी सो उसने अपना नया ढोल पीटना शुरू किया। पर यह क्या? उसमें से तो खाने की बजाय बहुत सारे कोड़े निकल पड़े।

उनको देख कर तो कछुआ डर गया और अपने घर की तरफ भाग लिया पर कोड़ों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उन्होंने उसका उसके घर तक पीछा किया।

बड़ी मुश्किल से अपने घर का दरवाजा बन्द कर के उसने उन कोड़ों से अपने आपको बचाया।

13 जादू का ढोल[39]

बहुत साल पुरानी बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक राजा राज करता था जिसका नाम था ओबिओमा[40]। ओबिओमा का मतलब होता है दयालु।

एक बार वह राजा बहुत बीमार पड़ा। इतना बीमार कि लोगों को लगा कि वह मरने वाला था। लोग यह देख कर बहुत दुखी हुए।

पर एक दिन उसको सपने में एक आवाज सुनायी दी — "ओ राजा ओबिओमा, क्योंकि ज़िन्दगी भर तुम सबके लिये बहुत दयालु रहे हो इसलिये मैं तुम्हारी ज़िन्दगी तुमको बख्शता हूँ और तुमको एक चीज़ देता हूँ।

तुम्हारे अपने कमरे के एक कोने में एक जादू का ढोल रखा है। तुम उससे जो कुछ भी माँगोगे वह तुमको देगा पर तुम उस ढोल को कभी धोना नहीं।"

सुबह को जब राजा उठा तो सीधा अपने कमरे में गया तो देखा तो वाकई उस कमरे के एक कोने में एक छोटा सा

---

[39] The Magic Drum – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[40] Obioma – the name of the Nigerian King

ढोल रखा हुआ था। उसने उस ढोल को अपने गले में लटकाया और कमरे से बाहर निकल आया।

उसको वह ढोल बहुत अच्छा लगा। वह ढोल चमड़े का बना हुआ था। उस समय क्योंकि खाने की बहुत कमी थी सो उसने ढोल से खाना मॉगा। उसने उसको एक होशियार ढोल बजाने वाले की तरह से बजाया और गाया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

तुरन्त ही उस ढोल से बहुत सारा स्वादिष्ट खाना और शराब प्रगट हो गयी। राजा और उसके आदमियों ने वह खाना खूब पेट भरकर खाया।

एक दिन दूसरे गॉव के लोगों ने राजा ओबिओमा पर हमला कर दिया। उनके सिपाहियों के पास भाले और तीर थे। उनके चेहरे लाल स्याही से रंगे हुए थे और उनकी ऑखों के चारों तरफ सफेद चौक से घेरे बने हुए थे।

उनके कमान्डर ने हाथी की शक्ल का चेहरा पहना हुआ था। बाकी सिपाहियों ने शुतुरमुर्ग और सफेद तोते[41] के पंख लगे टोप पहने हुए थे और वे सब लड़ाई के गाने गाते हुए चले आ रहे थे —

उनको हिला दो, दुश्मनों को हिला दो
उनको रौंद दो कुचल दो, दुश्मन को कुचल दो

[41] Translated for the word “Cockatoo”

राजा ओबिओमा ने उनके लड़ाई के गीत सुने तो अपना जादू का ढोल बजा दिया। इससे वह सारी जगह ऐसे बढ़िया बढ़िया स्वादिष्ट खानों से भर गयी जैसे कभी उन दुश्मनों ने देखे भी नहीं थे। उन्होंने अपने भाले और तीर तो फेंक दिये और खाना खाने बैठ गये।

जब उन्होंने खाना खा लिया तो उन्होंने राजा ओबिओमा को उस स्वादिष्ट खाने के लिये धन्यवाद दिया और बिना लड़े ही अपने गॉव वापस चले गये।

हर आदमी और जानवर राजा के इस जादू के ढोल को लेना चाहता था पर राजा इसकी बड़ी सावधानी से रक्षा करता था।

पर कछुआ चुप नहीं बैठा। उसको तो राजा का वह ढोल चाहिये था सो उसने राजा से उस ढोल को लेने की एक तरकीब सोची।

उसको मालूम था कि नदी के किनारे राजा की पत्नी और बेटी अक्सर नहाने और पानी भरने आया करती थीं। सो वह रोज सबेरे सबेरे उस नदी के किनारे वाले पाम के पेड़ पर चढ़ जाता और वहॉ बैठ कर उनके आने का इन्तज़ार करता।

एक दिन रानी और राजकुमारी नदी पर नहाने आयीं। नहा कर राजकुमारी नदी के किनारे खड़ी ठंडी हवा का आनन्द ले रही थी

और कछुआ पाम के पेड़ की चोटी पर बैठा पाम की गिरी[42] तोड़ रहा था। धीरे से उसने पाम की एक गिरी उस लड़की के पैरों के पास गिरा दी।

उस गिरी को देख कर वह लड़की चिल्लायी — "मॉ, देखो यह पाम की गिरी जो मैं बहुत दिनों से खाना चाह रही थी आज मेरे पैरों के पास आ गिरी है।

इसको मैं तबसे देख रही हूँ जब मैं नहा रही थी। मुझे लगता है कि मेरी नजरों ने इसको पेड़ से तोड़ कर नीचे गिरा दिया है। मैं खा लूँ इसे?"

मॉ बोली — "हॉ हॉ, खा ले पर पहले इसको धो ले। लगता है कि आज तेरी किस्मत अच्छी है इसी लिये कुछ देर पहले तेरे दाहिने हाथ की हथेली भी खुजा रही थी।"

राजकुमारी बोली — "तब तो मुझे आज कुछ और भी मिलना चाहिये। है न?"

जैसे ही राजकुमारी ने वह पाम की गिरी धो कर खायी कछुआ पाम के पेड़ से नीचे उतर आया और बोला — "कहॉ है मेरी पाम की गिरी? मेरी पाम की गिरी मुझे दो। वह पाम की गिरी तो मेरी थी।"

---

[42] Palm Nut – from the palm tree. See their picture above. It is a very popular food in West African countries

राजकुमारी बोली — "वह तो मेरे पेट में है। और वह तो बहुत ही स्वाद थी।"

कछुआ रोते हुए बोला — "नहीं। तुमने मेरी पाम की गिरी चुरायी है। वह तो मैंने अपने परिवार के खाने के लिये तोड़ी थी। मैं क्या पाम के पेड़ पर तुम्हारे खाने के लिये पाम की गिरी तोड़ने के लिये चढ़ता और अपनी मौत को दावत देता?"

राजकुमारी ने अपनी सफाई दी — "पर मैंने जब यह गिरी उठायी थी तो मुझे यह नहीं पता था कि यह गिरी तुम्हारी है।"

रानी बोली — "ओ अजनबी कछुए, इसमें कोई नुकसान नहीं है। मेरे पति राजा हैं। वह तुमको इस पाम की गिरी के बदले में जो कुछ भी तुम चाहोगे वह तुम्हें दे देंगे। मेरी बेटी को पता नहीं था कि यह पाम की गिरी तुम्हारी है।"

कछुआ बोला — "हॉ यह ठीक है। चलो राजा के पास चलते हैं। मुझे यकीन है कि वह जान जायेगा कि इतने मुश्किल के दिनों में अपने पड़ोसियों की चीज़ें चुराना कितना बड़ा जुर्म है।

और यह कानून तो उसने अपने हाथ से खुद लिखा है। आज उसके अपने परिवार ने इस कानून को तोड़ा है। कोई भी परिवार इस कानून को नहीं तोड़ सकता है। देखते हैं कि यह कानून केवल गरीब लोगों के लिये ही है या फिर देश में सबके लिये है।"

सो वे सब राजा के पास पहुँचे। वहॉ पहुँचने पर कछुए ने राजा को बताया कि राजकुमारी ने उसकी पाम की गिरी चुरा ली है।

दयालु और ईमानदार आदमी होने के नाते राजा यह पक्का कर लेना चाहता था कि कछुए को उसकी मुश्किलों का बदला ठीक से मिलना चाहिये सो उसने कछुए से उसकी पाम की गिरी की कीमत पूछी।

राजा बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि तुमको यह लगा कि राजकुमारी ने तुम्हारी पाम की गिरी चुरायी है। बोलो, मैं तुम्हारे नुकसान का बदला कैसे चुकाऊँ?

तुम्हें जानवर चाहिये, बकरियॉ चाहिये, सोने के सिक्के चाहिये, या खाना चहिये? मैं तुमको उसका सौ गुना वापस कर दूँगा। तुम बस यह बताओ कि तुमको क्या चाहिये।"

कछुआ बोला — "धन्यवाद राजा जी। मुझे केवल आपका जादू का ढोल चाहिये।"

यह सुन कर एक बार तो राजा के दिल की धड़कन रुक सी गयी और उसने कछुए की तरफ बुरी नजर से देखा भी पर क्योंकि वह एक राजा था और इज़्ज़तदार आदमी था और अपने वायदे के खिलाफ नहीं जा सकता था इसलिये उसने अपना जादू का ढोल उस कछुए को दे दिया।

कछुआ तो उस ढोल को ले कर बहुत खुश हो गया और मन ही मन में हॅसा कि उसकी तरकीब काम कर गयी। उसने वह जादू का ढोल उठाया और घर चला गया।

घर पहुँच कर उसने अपने परिवार वालों को बुलाया और उनको बताया कि किस तरह से आज उसने राजा को चकमा दे कर उससे उसका यह जादू का ढोल ले लिया।

इसके बाद कछुए ने वह ढोल बजाया और गाया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

और उस ढोल में से बहुत तरह के बहुत सारे स्वादिष्ट खाने निकल पड़े। कछुए का पूरा घर बढ़िया बढ़िया खानों से भर गया। उसके पूरे परिवार ने उस दिन खाना ऐसे खाया जैसे पहले कभी खाया ही न हो। कछुए के परिवार को कछुए पर बहुत घमंड हो आया और वे सब उसकी बहुत तारीफ करने लगे।

इस तरह से उस जादू के ढोल की वजह से कछुए के घर में कई दिनों तक रोज दावत होती रही और वे सब कछुए की रोज ही तारीफ करते रहे।

पर कछुए के लिये यही सब काफी नहीं था। उसको तो यह सब तारीफ और आदर जंगल के सारे जानवरों से भी चाहिये था सो एक दिन उसने जंगल के सारे जानवरों को अपने घर दावत दी।

जंगल के जानवरों को कछुए के ऊपर बिल्कुल भी विश्वास नहीं था इसलिये उस दिन उसके यहाँ बहुत थोड़े से जानवर आये। जब वे सब अपनी अपनी जगह बैठ गये तो कछुआ अपने जादू के

ढोल के साथ बाहर आया और सबके बीच में बैठ कर अपना जादुई ढोल बजाना शुरू कर दिया।

सारा मैदान खाने की बहुत अच्छी अच्छी प्लेटों से भर गया। जानवर तो अपनी ऑखों पर और कछुए की दया पर विश्वास ही नहीं कर पाये और खाना खाते रहे। उसकी दया देख कर उनके दिल में भी कछुए के लिये प्यार उमड़ आया।

अब कछुआ अमीर था, दयालु था और जंगल में एक इज़्ज़तदार जानवर था। दूसरे जानवरों ने अब उसको अपने घरों में बुलाना शुरू कर दिया था और वह अब उनमें काफी लोकप्रिय हो गया था।

कई महीनों तक कछुए ने सारे जानवरों को खूब खाना खिलाया और खूब शराब पिलायी। पर काफी दिनों के इस्तेमाल के बाद वह ढोल गन्दा हो गया सो वह उसको नदी पर धोने ले गया। वहॉ उसने उस ढोल को पानी से खूब मल मल कर धोया और घर ले आया।

शाम को जब वे सब खाना खाने बैठे तो उसने वह ढोल बजाना शुरू किया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

असल में जैसे ही कछुए ने वह ढोल धोया था उसका जादू टूट गया सो बजाय खाने के उस ढोल में से गुस्से में भरे लड़ने वालों का

एक झुंड निकल पड़ा। उन सभी ने अपनी लड़ने वाली पोशाक पहन रखी थी।

उन सभी के हाथों में बजाय तलवारों और तीर कमानों के गाय की पूँछ का एक एक कोड़ा था जो जब वे उसे मारने के लिये हवा में फटकारते थे तो वह बहुत ही डरावना शोर करता था।

बस निकलते ही उन्होंने सबको मारना शुरू कर दिया। उनकी मार इतनी ज़ोर की थी कि कुछ लोगों की पीठ से तो खून भी बहने लगा।

जब कछुए के परिवार वालों ने हिलना भी बन्द कर दिया तो वे समझे कि वे मर गये और वे सब उस जादू के ढोल में जा कर गायब हो गये।

अगले दिन सुबह जा कर कछुए के परिवार को कहीं होश आया और उनके घाव आदि ठीक होने में तो कई हफ्ते लग गये। उसकी पत्नी ने गर्म पानी कर कर के सबके घाव धोये और घर की बनी दवा लगायी तब कहीं जा कर वे सब ठीक हुए।

कछुआ बोला — "पता नहीं उस ढोल में क्या गड़बड़ हुई।" एक बार फिर से पक्का करने के लिये कछुए ने उसे फिर से सावधानी से बजाया पर मगर फिर वही हुआ। वे लड़ने वाले फिर उसमें से निकल आये और उन सबको बड़ी बेरहमी से पीटा।

अब उसको विश्वास हो गया कि इस जादू के ढोल की जादुई ताकत खत्म हो चुकी थी सो उसके नीच दिमाग ने फिर एक चाल

खेली कि इस जादू के ढोल से केवल उसका परिवार ही क्यों पिटे। अगर जंगल के सारे जानवरों ने इसका आनन्द लूटा है तो वे इसकी मार भी सहें।"

सो कछुए ने एक बार फिर से जंगल के जानवरों को दावत के लिये बुलाया।

अब तक क्योंकि कछुए ने अपनी साख जानवरों में खूब जमा ली थी। इसके अलावा उसकी पहली दावत बहुत अच्छी रही थी तो इस बार जानवरों को बुलाने में उसको कोई तकलीफ नहीं हुई।

बल्कि पिछली बार जो जानवर नहीं आ पाये थे पिछली दावत की तारीफ सुन कर इस बार वे भी आ गये।

कुछ जानवरों ने तो कछुए की दावत खाने के लिये अपना नाश्ता भी नही खाया ताकि वे वहॉ अच्छी तरह से खा सकें। इस तरह वहॉ बहुत सारे जानवर आ गये।

कछुए ने अपने परिवार को उनकी सुरक्षा के लिये दूसरी जगह भेज दिया और एक जंगली चूहे को बुला कर उससे अपने लिये अपने घर से ले कर बाजार के मैदान तक एक बड़ी सी सुरंग खुदवा ली।

फिर वह अपना ढोल ले कर बाजार के मैदान के बीच में बैठ गया और जानवर उसके चारों तरफ बैठ गये। कछुए ने बन्दर से कहा — "मैं तुमको अपना ढोल पीटने के लिये देता हूॅ। मैंने तो खाना खा लिया है। तुम लोगों का जब खाना हो जाये तो मुझे मेरा

ढोल वापस कर देना।" इतना कह कर कछुआ उस सुरंग में गायब हो गया।

बन्दर तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उसने कछुए से वह ढोल ले लिया और उसको बजाना शुरू किया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

ढोल का बजना था कि उसमें से बहुत सारे गुस्से में भरे लड़ने वाले निकल पड़े और वहॉ बैठे जानवरों को मारने लगे। दावत का आनन्द लेने की बजाय सारे जानवर चीखने चिल्लाने लगे।

बाजार का मैदान लड़ाई का मैदान बन गया। सारे मैदान में सारे जानवर वहॉ से भागने के चक्कर में एक दूसरे के ऊपर गिरने पड़ने लगे।

कुछ जानवर बहुत भूखे थे और वे भागने के लिये बहुत थके हुए भी थे। जब कि हाथी जैसे बड़े जानवर दूसरे छोटे जानवरों को रौंद कर जा रहे थे, जैसे कि खरगोश। कुछ उन लड़ने वालों की मार से मर गये। जो भाग सकते थे वे कछुए को बुरा भला कहते हुए भाग गये।

जब उन लड़ने वालों ने देखा कि सारे जानवर मर गये तो वे भी ढोल में जा कर गायब हो गये।

जब सब कुछ शान्त हो गया तब कछुआ अपनी छिपी हुई जगह से निकल आया। उसने मरे हुए जानवरों को उठाया और अपने घर ले गया। उसने और उसके परिवार वालों ने उस दिन बहुत अच्छी तरह से खाना खाया।

अब उसे पूरा विश्वास हो गया था कि अब उस ढोल का काम खत्म हो गया था। कछुए ने निश्चय किया कि वह इस ढोल को अब राजा को वापस कर देगा।

इस बीच जादू के ढोल और उसमें से निकले लड़ने वालों की कहानियॉ चारों तरफ फैल चुकी थीं सो राजा भी अब कछुए के किसी भी दिन आने की उम्मीद कर रहा था।

राजा सोने के लिये लेटा हुआ था और कछुए के आ कर ढोल लौटाने के इन्तजार में था। वह सोच रहा था कि वह उस ढोल का अब क्या करेगा। तभी वही आवाज फिर आयी और बोली — "उसका जादू फिर से लाने के लिये तुम उसका जादू का गाना उलटा गाना।"

जैसा कि राजा ने सोचा था वैसा ही हुआ। सुबह सवेरे ही कछुआ राजा का ढोल ले कर राजा के महल में आ गया।

कछुआ बोला — "ओ राजा, यह रहा आपका ढोल। मैं बहुत ही न्यायप्रिय जीव हूॅ। मैंने सोचा कि मुझको यह ढोल हमेशा के लिये अपने पास नहीं रखना चाहिये क्योंकि इसकी जगह तो राजा के पास ही है। इसी लिये मैं इसे आपको वापस करने आया हूॅ।"

राजा बोला — "ठीक है। तुम बहुत ही न्यायप्रिय जीव लगते हो। धन्यवाद। पर जाने से पहले खाना तो खाते जाओ।"

कह कर उसने अपने हाथ ऊपर उठाये जैसे वह उस ढोल को बजाने के लिये उठा रहा हो।

यह देख कर पहले तो कछुआ डर के मारे अपने खोल में छिप गया पर जब उसने ढोल बजाने की कोई आवाज नहीं सुनी तो फिर उसने धीरे धीरे अपना सिर बाहर निकाला और अपने घर चला गया।

राजा भी हॅसता हुआ अपने कमरे में गया। वहॉ उसने उसे बहुत धीरे से बजाया और उस जादू के गीत को उलटा गया।

पुटु पाम, पुटु पाम, ढोल जादू के ओ मेरे
पुटु पाम, पुट पाम, जो स्वादिष्ट हो पानी दे, खाना दे मुझे

उस दिन के बाद से उस ढोल में से राजा और उसके आदमियों के लिये फिर से बहुत सारा खाना निकलने लगा। राजा ओबिओमा लोगों पर फिर से और ज़्यादा अच्छी तरह से राज करने लगा।

उसकी दया के चर्चे दूर पास सब जगह फैलने लगे। उसके दुश्मन अब उससे लड़ना नहीं चाहते थे और सब खुशी खुशी रहने लगे।

14 राजा का जादू का ढोल[43]

यह लोक कथा हमने अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा में भी एक ढोल की करामात दिखायी गयी है और यह लोक कथा भी पिछली लोक कथा जैसी ही है।

बहुत दिनों पुरानी बात है कि नाइजीरिया के कैलैबार[44] प्रदेश में ऐफ्रियाम ड्यूक[45] नाम का एक राजा राज करता था। वह बहुत ही शान्तिप्रिय राजा था और उसको लड़ाई बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती थी।

उसके पास जादू का एक ढोल था। वह जब भी उस ढोल को बजाता था तो उसमें से बहुत अच्छा अच्छा खाना और पीने के लिये शराब आदि निकलते थे।

सो जब भी कोई राजा उस पर चढ़ाई करता था तो बजाय लड़ने के वह अपने शत्रुओं को बुलाता और अपना ढोल

पीटता। तुरन्त ही उन सबके सामने बड़ी बड़ी मेजें लग जाती।

उन पर मजेदार स्वादिष्ट खाना और शराब आदि लग जाते – फू फू, मछली, सूप, पकाया हुआ याम[46], भिंडी,

[43] The King's Magic Drum – a folktale from Calabar, Southern Nigeria, Africa
[44] Calabar is one of the provinces of Nigeria
[45] Efriam Duke
[46] Yam is root vegetable and is a very popular stable food of West African countries especially of Nigeria. See the picture of one of the cooked dish of yam.

कई प्रकार की बीयर आदि लग जाते। यह सब देख कर शत्रु की सेना बहुत ताज्जुब करती।

शत्रु की सेना इतना अच्छा खाना खा कर बहुत खुश होती। सारे सैनिक सन्तुष्ट हो जाते क्योंकि उनका पेट भर जाता और वे बिना लड़े ही चले जाते। इस तरह वह राजा अपने शत्रुओं को खुश और दूर रखता था।

उस ढोल में बस एक ही कमी थी और वह यह कि यदि उसके मालिक का पैर सड़क पर पड़ी किसी लकड़ी की डंडी पर पड़ जाये या फिर किसी गिरे हुए पेड़ पर पड़ जाये तो उस ढोल से निकला हुआ सारा खाना खराब हो जाता था और तीन सौ ईबो[47] लोग डंडे ले कर प्रगट हो जाते थे और उस ढोल के मालिक और खाने वालों को बहुत मारते थे।

ऐफ़ियाम इ्यूक एक बहुत अमीर आदमी था। उसके पास बहुत सारे खेत थे, सैंकड़ों गुलाम थे और समुद्र के किनारे एक बहुत बड़ा अन्न का गोदाम था।

उसके पास पाम के तेल के बहुत सारे डिब्बे थे। उसकी पचास पत्नियॉ थीं और उनसे उसके बहुत सारे बच्चे थे। उसकी सब पत्नियॉ बहुत अच्छी मॉऐं थीं और वे अपने बच्चों को तन्दुरुस्त रखतीं थीं।

[47] Igbo people are to maintain discipline

हर कुछ महीनों में राजा अपनी सब प्रजा को अपने घर बुलाता था और एक शानदार दावत देता था। यहाँ तक कि वह अपने राज्य के जंगली जानवरों को भी नहीं छोड़ता था – शेर, चीते, भालू, जंगली गायें, बारहसिंगे आदि आदि सभी जानवरों को वह उस दावत में बुलाता था।

उन दिनों जंगली जानवरों से आदमियों को कोई परेशानी नहीं होती थी क्योंकि सभी आपस में दोस्ती से रहते थे और कोई एक दूसरे को मारता नहीं था।

सारे लोग राजा के ढोल से जलते थे और उसको पाना चाहते थे पर राजा उस ढोल को किसी को देता नहीं था।

एक सुबह राजा की एक पत्नी ऐक्वोर एडेम[48] अपनी बेटी को एक खास झरने पर नहलाने के लिये ले जा रही थी क्योंकि उसके शरीर पर बहुत सारी फुन्सियाँ हो रही थीं।

उस झरने के पास ही पाम का एक पेड़ था और उस पेड़ के ऊपर एक कछुआ बैठा था। वह कछुआ वहाँ बैठा बैठा अपने दोपहर के खाने के लिये पाम की कुछ गिरी[49] तोड़ रहा था।

गिरी तोड़ते समय उसकी एक गिरी नीचे गिर गयी। बच्ची ने जैसे ही पाम की गिरी जमीन पर देखी तो वह उसे खाने के लिये

[48] Ekwor Edem – name of the king's wife

[49] Palm nuts. See their picture above. It is a very popular food in West African clountries

चिल्लायी। मॉ को और कुछ नहीं सूझा तो उसने वह गिरी उठा कर बच्ची को दे दी।

कछुआ ऊपर बैठा यह सब देख रहा था। वह तुरन्त ही पेड़ से नीचे उतरा और उस स्त्री से पूछा कि उसकी पाम की गिरी कहॉ है। मॉ ने भोलेपन से जवाब दिया कि वह गिरी तो नीचे पड़ी थी सो वह तो मैंने बच्ची को खाने के लिये दे दी।

यह कछुआ भी राजा का ढोल लेना चाहता था तो उसने सोचा कि यह अच्छा मौका है। वह इस बात को ले कर खूब हल्ला गुल्ला मचायेगा और राजा को उसका ढोल उसको देने पर मजबूर कर देगा।

वह बच्ची की मॉ से बोला — "मैं तो बहुत ही गरीब हूॅ। बड़ी मुश्किल से मैं अपने और अपने परिवार के लिये खाना लाने के लिये पेड़ पर चढ़ कर पाम की कुछ गिरी तोड़ रहा था कि तुमने मेरी गिरी ले ली और अपनी बच्ची को दे दी।

अब मैं यह सब मामला जा कर राजा को बताता हूॅ। जब वह यह सुनेगा कि उसकी पत्नी ने मेरा खाना चुराया है तब मैं देखता हूॅ कि वह क्या कहता है।"

जब मॉ अपनी बच्ची को झरने में नहला चुकी तो अपने साथ वह कछुए को भी अपने घर ले गयी और राजा को बताया कि उसके साथ क्या हुआ।

राजा ने कछुए से पूछा कि वह अपनी गिरी के बदले में क्या लेगा – धन, कपड़े, पाम का तेल, अनाज? पर कछुए ने इन सबके लिये मना कर दिया। राजा ने फिर कहा जो भी कुछ तुमको चाहिये तुम वह माँग लो।

अबकी बार कछुए ने तुरन्त राजा के ढोल की तरफ इशारा करते हुए कहा — "मुझे तो केवल आपका यह ढोल ही चाहिये।"

कछुए से बचने के लिये राजा ने वह ढोल कछुए को दे दिया पर उसने उसे यह नहीं बताया कि उसकी क्या कमी थी – जैसे कि उसको सड़क पर पड़े किसी लकड़ी के डंडे पर या किसी गिरे हुए पेड़ पर पैर नहीं रखना चाहिये।

कछुआ वह ढोल ले कर खुशी खुशी घर चला गया और जा कर अपनी पत्नी को अपनी जीत की कहानी सुनायी।

उसने घर जा कर अपनी पत्नी से कहा — "मैं अब बहुत अमीर हो गया हूँ अब मुझे काम करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अब जब भी चाहूँ तभी खाना खा सकता हूँ। मुझे तो बस इस ढोल को बजाने की जरूरत है और यह ढोल मेरे सामने बहुत सारा खाना और शराब ला कर दे देगा।"

कछुए की पत्नी और बच्चे तो यह सुन कर बहुत ही खुश हुए और उन्होंने उससे उस ढोल को पीटने के लिये कहा ताकि वे सब खूब अच्छा अच्छा खाना खा सकें क्योंकि वे सभी भूखे थे।

कछुआ यह सुन कर ढोल बजाने के लिये तुरन्त ही राजी हो गया क्योंकि वह जो चीज़ ले कर आया था और जो अब उसकी अपनी थी उसका कमाल वह अपने परिवार को दिखाना चाहता था।

इसके अलावा वह खुद भी बहुत भूखा था सो उसने वह ढोल उसी तरीके से बजा दिया जैसे उसने राजा को दावत देने के समय बजाते देखा था।

जैसे ही कछुए ने ढोल बजाया बहुत सारा स्वादिष्ट खाना प्रगट हो गया। कछुए का पूरा परिवार बैठ गया और उन सबने खूब पेट भर कर खाना खाया। यह सब तीन दिन तक ठीक ठाक चलता रहा। उसके सारे बच्चे अच्छा और खूब खाना खा खा कर मोटे हो गये।

अब इस सबको दिखाने के लिये एक दिन कछुए ने सब आदमियों को, जानवरों को और राजा को भी दावत दी। जब सबको यह बुलावा मिला तो सब बहुत हँसे क्योंकि वे यह जानते थे कि कछुआ तो बहुत ही गरीब है वह इतने सब लोगों को खाना कैसे खिलायेगा। इसलिये बहुत ही थोड़े लोग उसके यहाँ आये।

पर राजा को तो मालूम था कि कछुए के पास ढोल है और वह कितनी भी बड़ी दावत दे सकता है इसलिये राजा उसके घर आया। जैसे ही कछुए ने ढोल बजाया बहुत सारा मजेदार खाना हाजिर हो गया। सारे लोगों ने खूब खाना खाया।

वे सब यह देख कर हैरान थे कि कछुए के पास इतना सारा खाना आया कहॉ से? उन्होंने अपने जानने वालों को भी बताया कि उन्होंने कछुए के घर कितना सारा और कितना अच्छा खाना खाया था। ऐसा खाना तो उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं खाया था।

जो लोग कछुए के घर नहीं गये थे वे बहुत दुखी हुए कि वे इतना अच्छा खाना खाने क्यों नहीं गये क्योंकि इतना अच्छा मुफ्त का खाना रोज रोज थोड़े ही मिलता है।

अब इस दावत को देने के बाद तो कछुआ राज्य का सबसे अमीर आदमी हो गया था और अब सब उसकी बहुत इज़्ज़त करने लगे थे।

सिवाय राजा के किसी और को इस भेद का पता नहीं था कि कछुए ने यह दावत कैसे दी पर सबने यह सोच लिया कि अब यदि कछुआ उनको दावत पर बुलायेगा तो वे कभी ना नहीं करेंगे।

जब ढोल लिये हुए कछुए को कुछ हफ्ते बीत गये तो वह बहुत आलसी हो गया। अब वह कोई काम करने नहीं जाता था बल्कि हर समय अपनी अमीरी की ही शान बघारता रहता था। वह अब पीने भी बहुत लगा था।

एक दिन कछुआ दूर किसी खेत पर ताड़ी[50] पीने गया तो वहॉ वह अपना ढोल भी साथ ले गया। वहॉ जा कर उसने बहुत ताड़ी

[50] Translated for the word “Palm Wine”

पी। पर वह जब घर लौट रहा था तो रास्ते में पड़ी एक डंडी पर उसका पैर पड़ गया।

डंडी पर पैर पड़ते ही उस ढोल का जूजू[51] तुरन्त ही टूट गया पर उसको इस बात का पता ही नहीं चला क्योंकि उसको तो यह सब कुछ मालूम ही नहीं था।

वह जब घर आया तो बहुत थका हुआ था। घर आ कर उसने अपना वह ढोल एक कोने रख दिया और सोने चला गया। सुबह को जब वह उठा तो उसे बहुत भूख लगी थी। उसकी पत्नी और बच्चे भी खाने के लिये शोर मचा रहे थे सो तुरन्त ही उसने अपना ढोल बजाया।

पर यह क्या? बजाय खाना निकलने के वहॉ तो तीन सौ ईबो लोग डंडा ले कर आ गये और उन्होंने कछुए और उसके परिवार वालों को अपने डंडों से बहुत पीटा।

यह देख कर कछुआ बहुत गुस्सा हुआ। उसने सोचा मैंने तो बहुत सारे लोगों को दावत के लिये बुलाया था पर बहुत कम लोग आये थे और हर एक को उस दावत में खूब पेट भर कर खाना मिला और जब मैंने केवल अपने परिवार के लिये खाना मॉगा तो ये ईबो आ गये और उन्होंने हमें मारा।

[51] Ju Ju magic in West Africa. In Hindi it is called “Jaadoo Tonaa”. To read many folktales about Ju Ju read the book “Nigeria Mein Ju Ju-1” by Sushma Gupta in Hindi language – available from : hindifolktales@gmail.com .

अब मैं सब लोगों को इसी तरह मारूँगा। क्योंकि इस ढोल की दावत तो सारे लोग उड़ायें और मार केवल मैं ही खाऊँ यह नहीं हो सकता।

अगले दिन उसने फिर सबको शाम को तीन बजे दावत के लिये बुलाया। इस बार बहुत सारे लोग आये क्योंकि वे इतनी अच्छी दावत को खोना नहीं चाहते थे।

बीमार लोग, लँगड़े लोग और अन्धे लोग भी आये पर राजा और उसकी पत्नियाँ नहीं आये। राजा को पता चल गया था कि उसके ढोल का जू जू टूट चुका है इसलिये अब वहाँ खाने की बजाय मार मिलने वाली है।

जब सब लोग आ गये तो कछुए ने अपना ढोल बजाया और ढोल बजा कर जल्दी से एक बैन्च के नीचे छिप कर बैठ गया जहाँ उसको कोई देख नहीं सकता था।

उसको तो मालूम था कि ढोल बजने पर क्या होने वाला है सो उसने अपनी पत्नी और बच्चों को पहले ही दूर भेज दिया।

जैसे ही उसने ढोल बजाया तीन सौ ईबो लोग डंडा लिये प्रगट हो गये और उन्होंने सब मेहमानों को मारना शुरू कर दिया।

कोई भी मेहमान वहाँ से भाग नहीं सका क्योंकि कछुए ने अपने घर के आँगन का दरवाजा पहले से ही बन्द कर दिया था।

यह पिटाई करीब दो घंटे तक चलती रही। बहुत सारे लोग तो इतने अधिक घायल हो गये थे कि उनको उठा उठा कर उनके घर ले जाना पड़ा।

एक चीता ही था जो इस पिटाई से बचा रहा क्योंकि जैसे ही उसने ईबो लोगों को देखा वह समझ गया कि अब यहाँ कुछ गड़बड़ होने वाली है सो उसने एक ऊँची छलाँग लगायी और वह कछुए के घर के आँगन से बाहर कूद गया।

जब कछुआ सबकी पिटाई से सन्तुष्ट हो गया तब वह अपनी बैन्च के नीचे से बाहर निकला और उसने अपने घर के आँगन का दरवाजा खोला। तब सारे लोग बाहर निकले। फिर उसने ढोल को एक खास तरीके से बजाया तो वे सारे ईबो लोग गायब हो गये।

कछुए की इस तरह की दावत से सारे लोग कछुए से बहुत गुस्सा थे सो कछुए ने निश्चय किया कि वह अगले दिन वह ढोल राजा को वापस कर देगा। अगले दिन सुबह ही कछुए ने वह ढोल उठाया और राजा के महल की तरफ चल दिया।

राजा के महल में पहुँच कर वह राजा से बोला कि वह उस ढोल से सन्तुष्ट नहीं था और वह अपनी गिरी के बदले कुछ और लेना चाहता था।

अब उसको इस बात की कोई ज़्यादा फिकर नहीं थी कि अब राजा उसे क्या देता है क्योंकि राजा की दी हुई पहली चीज़ की तो उसने पूरी कीमत वसूल कर ली थी। अब वह अपनी गिरी के बदले

में कुछ गुलाम या कुछ खेत या कुछ कपड़े या कुछ धन लेने के लिये भी तैयार था।

राजा ने उसे यह सब देने से इनकार कर दिया और क्योंकि राजा कछुए के लिये सचमुच ही बहुत दुखी था इसलिये अबकी बार उसने उसको जादू का एक फू फू[52] का पेड़ देने का विचार किया। कछुआ भी यह जादू का पेड़ लेने के लिये तुरन्त तैयार हो गया।

यह जादू का फू फू का पेड़ साल में फल तो एक बार ही देता था परन्तु फू फू और सूप रोज गिराता था।

उस पेड़ की शर्त यही थी कि कछुए को दिन में केवल एक बार ही यह फू फू और सूप उस पेड़ के नीचे से पूरे दिन के लिये इकट्ठा करना होता था। वह दोबारा उसी दिन फू फू और सूप इकट्ठा करने नहीं जा सकता था।

कछुए ने राजा को उसकी दया के लिये धन्यवाद दिया, फू फू का वह पेड़ लिया और घर चला गया।

उसने अपनी पत्नी को बुलाया और उससे कैलेबाश[53] लाने के लिये कहा। उस दिन कछुए ने दिन भर के लिये काफी फू फू और सूप इकट्ठा कर लिया और वे सब उस खाने से बहुत खुश थे। खुशी खुशी वे सब पेट भर कर खाना खा कर सो गये।

[52] Foo Foo is kind of Nigerian food

[53] Calabash is the dry cover of a pumpkin like fruit which can be used to keep dry or wet things. It looks like Indian clay pitcher. See its picture above.

लेकिन कछुए के बच्चों में से उसका एक लड़का बहुत लालची था। वह रात भर यही सोचता रहा कि उसका पिता यह सब अच्छी अच्छी चीज़ें कहाँ से लाता है।

सो सुबह उठते ही उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, आप यह इतना अच्छा फू फू और सूप कहाँ से लाये?"

उसका पिता तो चुप रहा पर उसकी चालाक पत्नी बोली — "यदि हम अपने बच्चों को फू फू के पेड़ का भेद बता दें तो हमारे बच्चों को यदि ज़्यादा भूख लगी तो वे दोबारा उस पेड़ के पास चले जायेंगे और फू फू और सूप इकट्ठा कर लायेंगे। इससे उस पेड़ का जू जू टूट जायेगा।"

लेकिन उस लालची लड़के ने अपने लिये खूब सारा खाना लाने की सोची और अगले दिन वह अपने पिता के पीछे पीछे यह देखने के लिये गया कि उसका पिता कहाँ जाता है और क्या करता है।

यद्यपि यह काम ज़रा मुश्किल था क्योंकि उसका पिता अक्सर बाहर अकेला ही जाता था और बहुत ही होशियारी से यह देखते हुए जाता था कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा पर फिर भी कछुए के उस बेटे ने उसका पीछा करने की तरकीब निकाल ही ली।

उसने एक लम्बी गर्दन वाला कैलेबाश लिया जिसमें दूसरी तरफ एक छेद था। उसमें उसने लकड़ी की राख भर

ली। उसने एक थैला भी ले लिया जैसा कि उसका पिता ले कर जाता था।

थैले में उसने एक छेद कर लिया और राख भर कर उसने वह कैलेबाश उलटा कर यानी कैलेबाश की गर्दन नीचे कर के उस थैले में रख लिया। ताकि जब उसका पिता उस पेड़ की तरफ जाये तो वह उसके पीछे पीछे राख बिखेरता जाये।

सो जब उसका पिता अपना थैला लटका कर खाना लेने के लिये चला तो उसके पीछे उसका लालची बेटा भी अपना कैलेबाश वाला थैला ले कर चला।

वह बहुत होशियारी से जा रहा था ताकि उसके पिता को ज़रा सा भी शक न हो जाये कि कोई उसका पीछा कर रहा था।

आखिर कछुआ उस फू फू के पेड़ के पास आ पहुँचा। उसने अपने कैलेबाश उस पेड़ के नीचे रखे और दिन भर के लिये खाना इकट्ठा कर लिया।

उसका बेटा यह सब छिप कर देख रहा था। जब कछुए ने खाना अपना दिन भर का खाना इकट्ठा कर लिया तो वह घर की तरफ चल पड़ा। यह देख कर कछुए का बेटा भी वापस चल दिया। घर आ कर उसने दूसरों की तरह पेट भर कर खाना खाया और सो गया।

अगली सुबह उसने अपने कुछ भाइयों को साथ लिया और जब उसके पिता ने दिन भर का खाना इकट्ठा कर लिया तो वह अपने

भाइयों के साथ और अधिक खाना इकट्ठा करने के इरादे से उस पेड़ की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसने जैसे ही दोबारा खाना इकट्ठा किया उस पेड़ का जू जू टूट गया और उसको दोबारा खाना नहीं मिल सका।

अगले दिन जब कछुआ रोज की तरह उस पेड़ से खाना लेने के लिये गया तो वह पेड़ तो वहॉ था ही नहीं। वह पेड़ तो नजरों से ही गायब हो गया था। वहॉ केवल कॉटे वाले पाम के पेड़ खड़े थे।

कछुआ तुरन्त ही समझ गया कि किसी ने उस पेड़ का जूजू दोबारा खाना इकट्ठा कर के तोड़ दिया था। वह बेचारा दुखी मन से घर वापस आ गया और अपनी पत्नी को बताया कि क्या हुआ था।

फिर उसने अपने परिवार के सब लोगों को इकट्ठा किया और सबसे पूछा कि यह किसने किया पर सबने मना कर दिया कि उन्होंने किसी ने ऐसा नहीं किया।

बेचारा कछुआ फिर उन सबको उस फू फू पेड़ के पास ले कर आया जहॉ अब कॉटों वाला पाम का पेड़ खड़ा हुआ था और उन सबसे बोला — "मेरी प्यारी पत्नी और बच्चो, मैंने तुम लोगों के लिये जो कुछ भी कर सकता किया पर तुम लोगों ने इस पेड़ का जू जू तोड़ दिया इसलिये अब तुम सब लोग इसी कॉटों वाले पाम के पेड़ के नीचे रहो और आनन्द करो।"

उस दिन से कछुए अब वैसे ही कॉटों वाले पाम के पेड़ों के नीचे रहते पाये जाते हैं क्योंकि उनको कहीं और खाना ही नहीं मिलता। बेचारे कछुए।

15 गाता हुआ ढोल[54]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में अटीलोला[55] नाम का एक लड़का रहता था। उसके माता पिता उसे बहुत प्यार करते थे क्योंकि वह अपने माता पिता का अकेला बच्चा था। वह हमेशा यही ख्याल रखते थे कि उसको किसी बात की कोई कमी न महसूस हो।

वे उसको एक बहुत ही कोमल अंडे की तरह से रखते थे और किसी को भी उसको डॉटने नहीं देते थे चाहे उसने किसी के साथ कितना भी बुरा व्यवहार क्यों न किया हो।

इसी वजह से अटीलोला बहुत ही मतलबी और एक बिगड़ा हुआ बच्चा हो गया था। वह किसी का कहना भी नहीं मानता था।

एक बार की बात है कि बारिश के दिनों में जब अटीलोला दस साल का था उसने अपनी मॉ से कहा कि वह अपने दोस्तों के साथ बाहर खेलने जा रहा है।

मॉ ने उसे सावधान किया — "यहॉ पास में ही खेलना। घाटी में नहीं घूमना। आसमान में बादल घुमड़ रहे हैं बारिश आने वाली है।"

---

[54] The Singing Drum – a folktale from Nigeria, Africa. Taken from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/357/preview

[55] Atilola – name of the boy

पर हर बार की तरह से अटीलोला ने मॉ की बात को अनसुना कर दिया और अपने दोस्तों के पास चला गया।

जब अटीलोला को गॉव के किनारे पर उसके दोस्त मिल गये तो उसने उनसे कहा — "चलो ओयिन घाटी[56] चल कर शहद की मक्खी के छत्ते से शहद ढूँढते हैं।"

सब लड़के तैयार हो गये और वे सब चार मील के सफर पर शहद ढूँढने ओयिन घाटी चल दिये। जब वे ओयिन घाटी के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि आसमान के बादल तो काले हो गये हैं। तभी पहली बिजली की कड़क हुई तो अटीलोला के दोस्त तो घबरा गये।

उनमें से एक लड़का आगे बढ़ा और बोला — "इससे पहले कि बारिश शुरू हो हमको घर पहुँच जाना चाहिये।"

यह ठीक सलाह थी सो बाकी सारे बच्चे घर लौटने के लिये तैयार हो गये। पर अटीलोला चिल्लाया — "पर मैं नहीं जाऊँगा। मैं तो यहॉ शहद ढूँढने आया हूँ और मैं यह जगह छोड़ कर नहीं जाऊँगा जब तक मुझे थोड़ा सा शहद नहीं मिल जायेगा।"

एक लड़के ने पूछा — "पर तुम इस बारिश में शहद पाओगे कैसे?"

अटीलोला बोला — "अगर मुझे बारिश में शहद नहीं मिला तो मैं यहॉ तब तक रुकूँगा जब तक बारिश रुकती है।"

---

[56] Oyin Valley

और जैसे ही वह यह कह कर चुका तो बारिश की छोटी छोटी बूँदें पड़नी शुरू हो गयीं और उसकी नंगी पीठ को गुदगुदाने लगीं।

वारिश देख कर दूसरे लड़के अटीलोला को वहीं शहद ढूँढने के लिये छोड़ कर वहाँ से घर की तरफ भाग लिये। जल्दी ही वे छोटी छोटी बूँदें बड़ी बड़ी हो गयीं और जमीन पर पानी के छोटे छोटे तालाब बनाने लगीं।

अटीलोला ने उनके अन्दर कूदना शुरू कर दिया। वह उनमें कभी छपाके मारता कभी नाचता और कभी अपने हाथ हिलाता।

कुछ किसान अपने खेतों से घर लौट रहे थे उन्होंने अटीलोला को पानी के उन छोटे छोटे तालाबों में नाचते देखा तो उससे घर जाने के लिये कहा। पर वह बिगड़ा हुआ वच्चा तो किसी की सुनता ही नहीं था।

उनकी बात सुन कर उनको चिढ़ाने के मूड में उसने अपनी नाक सिकोड़ी और जीभ बाहर निकाल दी। उसने उन छोटे छोटे तालाबों में अपना नाचना जारी रखा। उधर बारिश भी तेज़ होती गयी होती गयी।

बहुत जल्दी ही बादलों ने अपना पानी नीचे जमीन पर खाली कर दिया और सारे गाँव में पानी ही पानी भर गया। अटीलोला को कहीं छिपने की भी जगह नहीं मिली। उसने चारों तरफ देखा तो

उसको ओडन[57] का एक पेड़ दिखायी दे गया। वह उसी की तरफ चल दिया।

पर जैसे ही वह उस पेड़ पर चढ़ने वाला था कि वह फिसल गया और नीचे पानी में गिर गया। पानी बहुत था बहाव तेज़ था बाढ़ उसे बहा कर ले चली।

अब वह घाटी में नीचे की तरफ बड़ी नदी की तरफ बहने लगा था। वह डर के मारे अपनी जान बचाने के लिये चीखने चिल्लाने लगा। पर वहॉ उस डरे हुए लड़के की चीख चिल्लाहट कौन सुनने वाला था।

उसने किसी चीज़ को पकड़ने के लिये अपने हाथ बढ़ाये ताकि वह उसके सहारे तैर सके – कोई भी चीज़ कोई डंडी कोई लट्ठा लकड़ी का कोई खम्भा। पर कोई फायदा नहीं। उसे वहॉ कोई चीज़ दिखायी नहीं दी। और वह बहुत तेज़ बहा चला जा रहा था।

तभी उसको थोड़ी दूर पर एक घर दिखायी दिया तो उसने अपनी सबसे ऊॅची आवाज में चिल्लाने का निश्चय किया। सो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "बचाओ बचाओ। मुझे बचाओ।"

अब उस मकान में इजापा कछुआ रहता था। उसने यह आवाज सुनी तो यह देखने के लिये अपने घर की खिड़की खोली कि यह आवाज कहॉ से आ रही थी।

[57] Odan tree

उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने इतनी भारी बारिश में एक लड़के को तैरने की नाकाम कोशिश करते देखा। वह तुरन्त ही अपने घर से उस बच्चे को बचाने के लिये निकल पड़ा।

उसने अपने शैड से एक लम्बा सा खम्भा लिया और उसको लड़के की तरफ बढ़ा दिया। इजापा चिल्लाया — "जल्दी पकड़ लो इसको जल्दी पकड़ लो।"

अटीलोला ने अपने दोनों हाथ बढ़ा कर उस लट्ठे को पकड़ लिया और इजापा ने उस लट्ठे को अपनी तरफ खींच लिया।

जैसे ही लड़का पानी से बाहर निकला तो इजापा उसको अपने घर के अन्दर ले आया। वहॉ उसने लड़के को गर्म रखने के लिये आग जलायी और उसको सूप पीने के लिये दिया।

पर इजापा स्वभाव से दानवीर नहीं था वह इस सारे समय यही सोचता रहा कि अपनी इस सहायता के बदले में वह उससे क्या ले सकता है।

इस सवाल का जवाब उसे जल्दी ही मिल गया। जैसे ही अटीलोला ने अपने सूप का कटोरा खाली किया तो वह वहीं कमरे में एक कोने में पड़ी एक चटाई पर लेट गया।

इससे पहले कि अटीलोला सोता अटीलोला ने अपनी सबसे मीठी आवाज में एक गीत गाना शुरू किया। यह एक लोरी थी जो जब वह बहुत छोटा था तब उसकी मॉ उसको सुलाने के लिये गाया करती थी।

इजापा तो यह गीत सुन कर खो सा गया। वह उस गीत पर झूमने लगा। जब वह उस गीत पर झूम रहा तो उसके दिमाग में चालाकी का एक प्लान आया और उसने सोच लिया कि वह अपने मेहमान से कैसे फायदा उठा सकता था।

इजापा ने तब तक इन्तजार किया जब तक वह लड़का गहरी नींद सो नहीं गया। जब वह लड़का गहरी नींद सो गया तो कछुआ अपने घर के पीछे की तरफ गया और लकड़ी का एक बड़ा सा ढोल बनाने लगा।

सारी रात वह उस ढोल पर काम करता रहा जब तक कि उसका ढोल बन कर पूरा हुआ। जब सुबह को अटीलोला जागा तो इजापा ने अटीलोला से उस ढोल में बैठ जाने के लिये कहा।

अटीलोला ने पूछा — "पर तुम मुझसे इस ढोल में बैठने के लिये क्यों कह रहे हो?"

चालाक कछुआ भोलेपन से मुस्कुराया और बोला — "मैं केवल ढोल की आवाज देखना चाह रहा था कि वह कैसा बजता है। मैंने बाढ़ से तुम्हारी जान बचायी है तो उसके बदले में मैं तुमसे यह कोई बहुत बड़ा काम करने के लिये तो नहीं कह रहा हूँ।"

अटीलोला को मानना पड़ा कि वाकई उसने बाढ़ से उसकी जान बचा कर उसके ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है। सो वह उस ढोल में चढ़ गया और कछुए ने उसका मुँह एक खाल से ढक दिया।

एक बार जब अटीलोला ढोल के अन्दर घुस गया और ठीक से छिप गया इजापा ने उसको वही गीत फिर से गाने के लिये कहा। उसने उसको यह भी बताया कि जब वह डंडी उस ढोल में मारे तब वह वह गीत गाये।

उधर अटीलोला के माता पिता उसका बड़ी चिन्ता से घर लौटने का इन्तजार कर रहे थे। लड़का रात भर बाहर रहा था। उसकी मॉ तो बिल्कुल आपे से बाहर थी वह बहुत चिन्तित थी।

जब बाढ़ का पानी उतर गया माता पिता दोनों ही अपने बेटे की खोज में घाटी में गये पर वहॉ वह उनको कहीं नहीं मिला। आखिर वे राजा के महल राजा को यह बताने गये कि अटीलोला खो गया था। वह कहीं नहीं मिल रहा था।

जब राजा ने यह दुखभरी खबर सुनी कि अटीलोला खो गया है तो उसने अपने नौकरों को अपने सारे गॉव में और आस पास के गॉवों मे उनको उसे ढूँढने भेजा। वे भी उस लड़के कहीं नहीं पा सके तो उसको ढूँढना छोड़ दिया गया।

इजापा इस हलचल के बारे में बिल्कुल अनजान था। वह गॉव के बाजार की जगह खड़ा खड़ा आते जाते लोगों से चिल्ला चिल्ला कर बड़ी शान से कह रहा था — "लोगों आओ और मेरा गाता हुआ ढोल सुनो। यह मेरी सबसे अनोखी चीज़ है जो तुम लोगों ने पहले कभी नहीं सुनी होगी।"

उसकी यह बात सुन कर बहुत सारे लोग उस अजीब ढोल को देखने के लिये वहॉ इकट्ठे हो गये। इजापा जब भी अपने ढोल पर एक डंडी मारता उसके अन्दर बैठा अटीलोला उसमें से गाना गाता।

जिसने भी उसका गाना सुना वही उसकी आवाज सुन कर उस पर मोहित हो गया। कुछ तो इतने खुश हुए कि उन्होंने अपने अपने सिर की टोपियॉ उस ढोल के ऊपर उछाल कर फेंकनी शुरू कर दीं और नाचते रहे जब तक वे नाचते नाचते थक नहीं गये।

कोई भी यह नहीं सोच सका कि ऐसा कैसे हो सकता था कि उसमें कोई बच्चा या कोई आदमी आदमी बन्द हो। सबको बस ऐसा लगा कि वह एक जादू का ढोल है और वह गा रहा हे। उन्होंने ऐसा तमाशा दिखाने के लिये उस चालाक कछुए को बहुत सारे पैसे भी दिये।

बहुत जल्दी ही सारे पड़ोस में यह बात फैल गयी कि इजापा कछुए के पास एक गाता हुआ ढोल है सो हर आदमी इजापा के पास उसका गाता हुआ ढोल देखने के लिये आने लगा।

अगले दिन इजापा को राजा ने अपने महल में बुलाया क्योंकि राजा भी ऐसे ढोल को देखने के लिये बहुत उत्सुक था।

इजापा जब महल पहुॅचा तो उसने देखा कि वहॉ तो बड़ी भीड़ जमा थी। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ। राजा ने यह तमाशा देखने के लिये सारे गॉव को वहॉ इकट्ठा कर रखा था। वहॉ कोई जगह ऐसी नहीं थी जहॉ कोई आदमी बैठ सके।

चालाक कछुए ने वहॉ पहुँच कर भीड़ का विश्वास जीत लिया और इस बात पर ज़ोर दिया कि ढोल बजाने से पहले ही उसको सोने में पैसा दिया जाये।

राजा ने ऐसा पहले कभी कुछ सुना नहीं था पर क्योंकि वह गाता हुआ ढोल सुनने के लिये बहुत उत्सुक था इसलिये उसने सोने से भरा एक थैला कछुए को उसके ढोल बजाने से पहले ही दे दिया और कछुए को हुक्म दिया कि अब वह अपना ढोल बजाये।

इजापा ने खुश हो कर ढोल पर एक डंडी मारी और अटीलोला ने अपनी मीठी आवाज में गाया। उस मीठे गीत को सुन कर राजा सरदार और वहॉ बैठे हुए दूसरे सभी लोग उस गीत पर नाचने के लिये उठ खड़े हुए।

इतने सब आनन्द और नाच में भी राजा अटीलोला की मॉ को नहीं भूल सका था कि उसका बेटा खो गया था। अटीलोला की मॉ भी वहॉ आयी हुई थी। वह वहीं एक कोने में बैठी थी और बराबर रोये जा रही थी। उसका पति भी उसको बराबर तसल्ली देने में लगा हुआ था पर वह चुप ही नहीं हो पा रही थी।

कुछ सोच कर राजा ने यह तमाशा रुकवा दिया और हुक्म दिया कि अटीलोला के माता पिता को उसके सामने लाया जाये। वहॉ पर यह बहुत बुरा समझा जाता था कि राजा के सामने कोई रोये।

अटीलोला की मॉ ने राजा के सामने सिर झुकाया और कहा कि इजापा का ढोल कोई जादुई ढोल नहीं था। उसको यकीन था कि उस ढोल के अन्दर उसका बेटा था जो यह गा रहा था।

उसने आगे कहा कि कोई भी मॉ यह सहन नहीं कर सकती थी कि उसके बेटे को इस तरीके से बन्दी बनाया जाये।

राजा ने अपने चौकीदारों को हुक्म दिया कि इजापा के ढोल की खाल फाड़ दी जाये ताकि वे सब यह देख सकें कि ढोल के अन्दर क्या था।

जब ढोल की खाल फाड़ी गयी तो उसमें से अटीलोला धीरे से बाहर निकला। उसकी ऑखें सूरज की तेज़ रोशनी में ठीक से देख न पाने की वजह से मिचमिचा रही थीं पर आखीर में वह ढोल में से बाहर निकालने के लिये राजा का कृतज्ञ था।

जब लड़के ने अपने माता पिता को देखा तो उनको गले से लगाने के लिये दौड़ पड़ा। दोनों की ऑखों में खुशी के ऑसू थे।

सारे महल में हलचल मच गयी क्योंकि बहुत सारे लोगों को यह देख कर धक्का लगा कि इजापा ने उनको इस तरह से धोखा दिया।

राजा ने अपने चौकीदारों को हुक्म दिया कि वे इजापा को पकड़ जेल में बन्द कर दें। पर इजापा तो बहुत चालाक था। उसने राजा को बताया कि अगर उसने लड़के को न बचाया होता तो वह तो बेचारा बाढ़ से मर ही जाता।

यह सुन कर राजा तो सोच में पड़ गया। उसने बहुत सोचने के बाद इजापा को आजाद कर दिया। पर अक्लमन्द राजा ने इजापा को यह भी चेतावनी दी कि आगे वह ऐसी कोई चाल न खेले और उससे अपना दिया हुआ सोने का थैला भी उसने वापस ले लिया।

जहॉ तक अटीलोला का सवाल था उसने तय किया कि बजाय बिगड़े हुए बच्चे की तरह से बर्ताव करने के माता पिता की बात मानने में ही फायदा था। इस सीख को सीख लेने से वह एक बहुत ही अक्लमन्द और होशियार आदमी के रूप में बड़ा हुआ।

16 कछुआ और इग्बाको[58]

यह उन दिनों की बात है जब जानवर जंगल पर राज किया करते थे और कछुए आदमियों की तरह बोला करते थे। उन दिनों अक्सर अकाल पड़ जाते थे और जो जानवर बेचारे इस सूखे को नहीं झेल पाते थे वे या तो बहुत कमजोर हो जाते थे या फिर मर जाते थे।

ऐसा ही एक समय आया जब जानवरों के देश में अकाल पड़ा और कछुआ खाना ठीक से न मिलने की वजह से बहुत ही दुबला हो गया।

वह जब तक अपने हॅसी मजाक पर ज़िन्दा रह सकता था रहा पर ऐसे वह कब तक ज़िन्दा रहता। आखिर वह भी दूसरे जानवरों की तरह ही हो गया। क्योंकि खाना मिलने के सारे रास्ते बन्द हो चुके थे।

आहा, सारे रास्ते नहीं। कछुए ने देखा कि चिड़ियों के परों के नीचे अभी भी खूब सारा मॉस है। सो उसने सोचा कि मुझे इन चिड़ियों से खाने के बारे में पता करना चाहिये।

एक दिन जब कछुए को चिड़ियों से बात करने का मौका मिला तो वह उनमें से एक चिड़िया से बोला कि वह बहुत भूखा था सो वह उसे अपने खाने की जगह ले चले।

---

[58] Tortoise and the Igbako – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

चिड़िया ने मना किया कि वह किसी खाने की जगह को नहीं जानती। इस पर कछुए ने उसको धमकी दी कि अगर वह उसको खाने की जगह नहीं बतायेगी तो वह सब जानवरों को बता देगा कि यह चिड़िया सबसे खाना छिपा रही है।

यह सुन कर वह चिड़िया मान गयी कि वह उसको अपनी खाने की जगह जरूर दिखायेगी। फिर उसने कहा — "अगर मैं तुमको अपने खाने की जगह दिखा देती हूँ तो वायदा करो कि तुम उसको किसी और को नहीं बताओगे।" कछुआ इस बात पर तुरन्त राजी हो गया।

अब कछुआ तो उड़ नहीं सकता था सो चिड़िया ने कुछ पंख कछुए को उधार दिये और वे दोनों बहुत सारी नदियॉ पार कर के समुद्र तक पहुँच गये। वहॉ उनको पानी की देवी[59] मिली।

पानी की देवी ने जब चिड़िया के साथ कछुए को देखा तो वह कुछ परेशान सी हुई। फिर भी उसने कछुए को जादू का एक इग्बाको[60] दिया और कहा — "तुम इस इग्बाको के जादू को अपने परिवार को अलावा और किसी को नहीं बताना।"

कछुआ बोला — "भेद खोलना? और मैं? नहीं नहीं कभी नहीं।"

---

[59] Water Goddess

[60] Igbako – something magical. It can be anything. It may look like the picture given above.

देवी बोली — "ठीक है। तो तुम इग्बाको से पूछना कि तुम्हारा क्या काम है?" और यह कह कर वह पानी में गायब हो गयी।

कछुए ने इग्बाको से पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

इग्बाको बोला —

मैं बहुत सारा इयान बनाता हूँ, मैं बहुत सारा ऐब्बा बनाता हूँ
और इतना सारा बनाता हूँ कि उसे पूरी दुनियॉ खा सकती है
और फिर भी बच जाये

और इसके बाद इयान, ऐब्बा और बहुत सारे सूप, मॉस और फल कछुए के सामने इकट्ठे हो गये। कछुआ भूखा तो था ही उसने तुरन्त ही सब कुछ खाना शुरू कर दिया।

इस बात से कोई मतलब नहीं कि उसने कितना खाया या कितनी जल्दी खाया पर बात यह है वह खाना उससे खत्म नहीं हुआ। जब उसकी भूख शान्त हो गयी तो वह उड़ कर उस इग्बाको को ले कर अपने घर आ गया।

घर आने पर उसने अपने पूरे परिवार को बुलाया और अपना इग्बाको निकाला और उससे पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

इग्बाको बोला —

मैं बहुत सारा इयान बनाता हूँ, मैं बहुत सारा ऐब्बा बनाता हूँ
और इतना सारा बनाता हूँ कि उसे पूरी दुनियॉ खा सकती है
और फिर भी बच जाये

और पहले की तरह बहुत सारा खाना कछुए के परिवार के सामने आ गया। सबने सारा दिन खूब पेट भर कर खाया। वे तब तक खाते रहे जब तक वे और नहीं खा सके।

अब कछुआ अपने मशहूर होने के बारे में सोचने लगा। उसको अपने इग्बाको का जादू जानवरों के राज्य में सब जानवरों को दिखाना था।

सो कछुआ गॉव के ओबा[61] के पास गया और बोला कि उसके पास इस अकाल का इलाज है। उसने ओबा को यकीन दिला दिया कि वह जंगल के सारे जानवरों को बुला ले और वह उन सबको खाना खिला देगा।

अब ओबा का हुक्म तो कोई जानवर टाल नहीं सकता था सो सारे जानवर वहॉ आ आ कर जमा हो गये।

कछुआ एक चबूतरे पर चढ़ गया और नाटकीय ढंग से उसने अपना इग्बाको निकाला और उससे पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

और इग्बाको बोला —

मैं बहुत सारा इयान बनाता हूँ, मैं बहुत सारा ऐब्बा बनाता हूँ
और इतना सारा बनाता हूँ कि उसे पूरी दुनियॉ खा सकती है
और फिर भी बच जाये

[61] Oba – the Nigerian word for King or Chief. Oba are rich and powerful.

और देखते देखते वहॉ बहुत सारा खाना प्रगट हो गया। सारे जानवरों ने शाम तक खूब पेट भर कर खाया जब तक कि उनको रात को नींद नहीं आने लगी।

अगले दिन फिर वही हुआ। कछुए ने फिर इग्वाको से पूछा कि "तुम्हारा क्या काम है?" और पिछले दिन की तरह से फिर से दावत खायी गयी। अब क्या था जानवर रोज कछुए का दिया हुआ खाना खाने लगे और उसकी तारीफों के पुल बॉधने लगे।

जब वे सब इस तरह के खाने के आदी हो चुके थे तो एक दिन वह इग्वाको टूट गया और कछुए के सवाल का जवाब नहीं दे सका। और इस तरह उस दिन किसी को खाना भी नहीं मिल सका। कछुआ बोला कि वह दूसरा इग्वाको ले कर आयेगा।

उसने चिड़िया से कुछ और पंख मॉगे और उनको लगा कर पहले की तरह से कई सारी नदियॉ पार कर उसी समुद्र के किनारे पहुॅचा जहॉ वह पानी की देवी रहती थी।

वहॉ जा कर उसने देवी को पुकारा — "ओ पानी की देवी, मेरा इग्वाको टूट गया है। मैं दूसरा इग्वाको लेने आया हूॅ।"

पानी की देवी प्रगट हुई और बोली — "ऐसा लगता है कि तुमने इग्वाको से बहुत ज़्यादा काम लिया है। तुमने गॉव भर को खाना खिलाया है।"

कछुए ने उससे प्रार्थना की — "नहीं नहीं, बस मैं और मेरा परिवार। मुझे नहीं मालूम कि वह कैसे टूटा पर मुझे एक नया इग्बाको दो कहीं ऐसा न हो कि मेरा परिवार भूखा मर जाये।"

पानी की देवी को कछुए पर दया आ गयी और उसने उसको एक नया इग्बाको दे दिया। पर इस बार यह नया इग्बाको बहुत छोटा सा था।

उसने कछुए को फिर सावधान किया — "याद रखो यह इग्बाको केवल तुम्हारे अपने परिवार के लिये है न कि गॉव भर के लिये।"

कछुआ ने वायदा किया — "ठीक है। मैं इसको किसी और के साथ नहीं बॉटूँगा।" और पानी की देवी वापस समुद्र में चली गयी।

कछुए ने पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

छोटे इग्बाकू ने जवाब दिया —

मैं थोड़ा सा इयान बनाता हूँ, मैं थोड़ा सा ऐव्बा बनाता हूँ
और इतना बनाता हूँ कि उसे पूरी दुनियॉ खा ले पर उसका पेट न भरे।

और इसके बाद वहॉ थोड़ा थोड़ा खाना प्रगट हुआ, जैसे किसी चींटी के लिये हो। कछुए ने उन छोटे छोटे टुकड़ों को खाया और जब तक उसको लगता कि उसने कुछ खाया वह सारा खाना तो खत्म ही हो गया।

उसने पानी की देवी को फिर बुलाया पर वह नहीं आयी। उसने अपने पंख उठाये, अपना वह छोटा इग्बाको उठाया और अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने अपने परिवार वालों को इकट्ठा किया और उस छोटे से इग्बाको से पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

छोटे इग्बाको ने जवाब दिया —

मैं थोड़ा सा इयान बनाता हूँ, मैं थोड़ा सा ऐब्बा बनाता हूँ
और इतना बनाता हूँ कि उसे पूरी दुनियॉ खा ले पर उसका पेट न भरे

कछुए के परिवार ने उसी थोड़े से खाने से सन्तुष्टि की पर किसी का पेट नहीं भरा।

कछुए ने सोचा — "जब मैंने उस इग्बाको से बहुत सारा खाना बनाया तो सारे लोगों ने खूब खाया अब उनको यह भूख भी सहनी चाहिये।

सो वह एक बार फिर ओबा के घर गया और उससे सारे जानवरों को इकट्ठा करने के लिये कहा। सारे जानवर फिर इकट्ठा हुए और कछुए ने उस छोटे से इग्बाको से पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

छोटे इग्बाको ने जवाब दिया —

मैं थोड़ा सा इयान बनाता हूँ, मैं थोड़ा सा ऐब्बा बनाता हूँ
और इतना बनाता हूँ कि उसे पूरी दुनियॉ खा ले पर उसका पेट न भरे

सारे जानवर इतने थोड़े खाने के लिये शिकायत करने लगे। वे चिल्लाये — "इग्बाको से कहो कि वह और खाना बनाये।" कछुए ने इग्बाको से ऐसा ही कहा और तब तक कहता रहा जब तक वह टूट नहीं गया।

तीसरी बार फिर कछुए ने चिड़िया से पंख उधार लिये और उड़ कर पानी की देवी के पास गया। वहॉ जा कर वह रो रो कर चिल्लाया — "मेहरबानी कर के मुझ पर दया करो। मेरी सहायता करो। मेरा परिवार भूखा मर रहा है। मेरा इग्बाको फिर से टूट गया है। मेहरबानी कर के मुझे दूसरा इग्बाको दो।"

पानी की देवी तीसरी बार समुद्र से बाहर आयी और कछुए से पूछा — "क्या तुमने अपना वायदा फिर से तोड़ा और उस इग्बाको को दूसरों के साथ बॉटा?"

कछुआ बोला — "नहीं नहीं। मैंने ऐसा नहीं किया। मैंने अपना वायदा रखा फिर भी इग्बाको टूट गया।"

देवी बोली — "इस बार मैं तुमको कुछ और देती हूॅ। मैं तुमको एक मजबूत डंडा देती हूॅ जो कभी नहीं टूटेगा।"

देवी ने कछुए को एक डंडा दिया और समुद्र में गायब हो गयी। कछुआ ने उससे पूछा — "डंडे तुम्हारा क्या काम है?"

डंडा बोला —

मैं हुक्म न मानने वालों को कोड़े मारता हूॅ, मैं लालची लोगों को कोड़े मारता हूॅ
जब तक कि उनकी खाल दर्द से सफेद नहीं हो जाती

और डंडे ने कछुए को पीटना शुरू कर दिया। कछुआ ज़ोर से चिल्लाया — "मैंने अपना बड़ा इग्बाको दूसरों के साथ बॉटा। मैंने अपना छोटा इग्बाको भी दूसरों के साथ बॉटा। अब यह डंडा भी मैं अपने पास ही नहीं रखूँगा। मैं इसे भी बॉटूँगा।"

कछुए ने यह कह कर अपने पंख उठाये, अपना डंडा उठाया और घर वापस आया। उसने अपने सारे परिवार को इकट्ठा किया और डंडे से पूछा — "डंडे तुम्हारा क्या काम है?"

डंडा बोला —

मैं हुक्म न मानने वालों को कोड़े मारता हूँ, मैं लालची लोगों को कोड़े मारता हूँ
जब तक कि उनकी खाल दर्द से सफेद नहीं हो जाती

कछुए के सारे परिवार को डंडे ने अच्छी तरह से पीटा। उसके बाद वह उस डंडे को ओबा के पास भी ले गया। वहॉ वे भूखे जानवर अभी भी उसका इन्तजार कर रहे थे।

कछुए ने वहॉ आ कर उस डंडे से पूछा — "डंडे तुम्हारा क्या काम है?"

डंडा बोला —

मैं हुक्म न मानने वालों को कोड़े मारता हूँ, मैं लालची लोगों को कोड़े मारता हूँ
जब तक कि उनकी खाल दर्द से सफेद नहीं हो जाती

और डंडे ने सबको मारना शुरू कर दिया। बड़ी मुश्किल से सारे जानवर अपनी अपनी जान बचा कर भागे।

इस तरह से देवी की बात न मानने से और मशहूर होने के लालच में कछुए ने कितना सारा खाना खोया और मार भी खायी। अगर वह देवी की बात मानता तो उसे और उसके परिवार को ज़िन्दगी भर खूब खाना मिलता रहता।

17 कछुआ और सूअर[62]

यह बहुत पहले की बात है कि एक कछुआ और एक सूअर बहुत ही गहरे दोस्त हुआ करते थे। वे बहुत सारे काम एक साथ करते थे जैसे खेत की जमीन जोतने का काम।

एक दिन वहॉ के राजा ने उन दोनों को अपने खेत की जमीन जोतने का काम सौंपा और उसका उनको बहुत अच्छे पैसे देने का वायदा भी किया।

जिस दिन उन लोगों को काम शुरू करना था उस दिन सूअर राजा के महल में आया और आ कर राजा की पत्नी को नमस्कार किया — "गुड मार्निंग रानी जी।"

रानी बोली — "गुड मार्निंग।"

उसी समय कछुआ भी राजा के महल में आ पहुॅचा। कछुआ बोला — "हम लोग राजा की जमीन जोतने के लिये आये हैं। कोई हमको वह खेत दिखा दे जो हमको जोतना है। हमारी मजदूरी रोज के दस चॉदी के सिक्के खाने के साथ है या फिर बारह चॉदी के सिक्के बिना खाने के।"

---

[62] The Tortoise and the Pig – an Igbo folktale from Nigeria, Africa.
Taken from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories.", by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com .

राजा की पत्नी ने एक नौकर को उनके साथ उनको खेत दिखाने के लिये भेज दिया। जब राजा का नौकर उनको खेत दिखा रहा था तो कछुए को लगा कि वह इस खेत जोतने के काम में घुसा ही क्यों। वह खेत तो बहुत बड़ा था।

जितना ज़्यादा वह उस खेत को देखता रहा उतना ही ज़्यादा उसको उस खेत जोतने में आलस आता रहा।

उसने सोचा — "उफ़, यह तो बहुत ही बड़ा खेत है। क्या ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे कोई इसका छोटा सा हिस्सा भी जल्दी से जोता जा सके, सारे खेत की तो बात ही छोड़ो।"

दूसरी तरफ सूअर बहुत ही मेहनती था। उसने ज़रा सा भी समय बर्बाद नहीं किया और वह उसी समय अपने काम पर लग गया।

उसने कछुए से कहा — "अगर हमको समय से काम खत्म करना है और अपनी मजदूरी लेनी है तो हमको अपना काम जल्दी ही शुरू कर देना चाहिये।"

पर अपने हिस्से का काम करने की बजाय कछुआ तो एक ऐसी स्कीम सोचने में लगा हुआ था जिससे वह कम से कम काम कर सके।

जब सूअर उस खेत पर काम करता होता तो कछुआ किसी न किसी बहाने से माफी माँग कर वहाँ से चला जाता। खेत के पास ही

एक बड़ा सा ओक का पेड़[63] था वह वहीं चला जाता और उसी पेड़ के नीचे पड़ा पड़ा धूप सेकता रहता।

जब वह वापस आता और सूअर उससे पूछता कि वह कहाँ था तो वह झूठ बोल देता कि वह तो जंगल गया[64] था।

सूअर कहता — "मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे साथ काम नहीं कर रहे हो। हमको यह काम जल्दी ही खत्म करना है।"

कछुआ कहता — "तुमको जितना काम करना है तुम अपना काम जल्दी खत्म कर लो। खास बात यह नहीं है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी शुरू करते हो खास बात यह है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी खत्म करते हो।

यह तो मैरैथौन[65] है कोई दौड़ नहीं। इसमें तो धीमे और आराम से चलने वाला ही जीतता है।"

यह सब कुछ दिन तक चलता रहा पर धीरे धीरे सूअर यह जान गया कि यह कछुआ किसी काम का नहीं था। सूअर को यह भी पता चल गया कि कछुआ यह सोच रहा है कि सूअर खुद ही इस काम को खत्म करे।

एक दिन सूअर कछुए से बोला — "मुझे लगता है एक दिन मुझे भी जंगल जाना चाहिये। मैं भी कोई लकड़ी का बना हुआ थोड़े

[63] Oak tree – a shady kind of tree

[64] To ease out by evacuating himself

[65] The marathon is a long-distance running event with an official distance of a little over 26 miles, that is usually run as a road race.

ही हूँ।" सो एक दिन वह एक मैदान में चला गया और वहाँ जा कर एक पेड़ की छाया में लेट गया और वहाँ खूब आराम किया।

फिर उसने सोचा "अब आराम काफी हो गया अब जल्दी करनी चाहिये क्योंकि अभी तो काफी काम करना बाकी है।"

जब सूअर आराम कर रहा था तो कछुए ने राजा की पत्नी और उसके नौकरों के खेत पर आने की आवाज सुनी। तुरन्त ही उनको प्रभावित करने के लिये वह जितनी मेहनत से काम कर सकता था उतनी मेहनत से उसने उस खेत पर काम करना शुरू कर दिया।

जब राजा की पत्नी वहाँ आयी तो उसने देखा कि वहाँ तो कछुआ बड़ी मेहनत से काम कर रहा था। वह काफी देर तक खड़ी खड़ी उसको देखती रही कि वह कितनी मेहनत से काम कर रहा था। उसको वह सब देखने में बहुत अच्छा लगा।

कछुए को पता था कि राजा की पत्नी उसको देख रही है सो वह भी थोड़ी थोड़ी देर बाद उसको अपनी थकान दिखाने के लिये अपना पसीना पोंछता रहा।

राजा की पत्नी पूछा — "तुम्हारा साथी कहाँ है?"

"काश मुझे पता होता कि वह कहाँ है। या तो वह जंगल गया होगा और या फिर कहीं आराम कर रहा होगा। मैं तो यहाँ अकेला ही काम कर कर के मर रहा हूँ।

यह पता लगाना तो बहुत ही आसान है कि वह कितना आलसी है। वह तो बस खाने के लिये तैयार रहता है। अगर आप यहाँ

खाना खोल कर रखेंगी तो मुझे यकीन है कि उस खाने की खुशबू से वह यहाँ तुरन्त ही आ जायेगा।"

यह सब सुन कर राजा की पत्नी सूअर पर बहुत गुस्सा हो गयी और जो खाना वह उन दोनों के लिये अपने साथ ले कर आयी थी उसको उसने तीन हिस्सों में बाँट दिया। उसमें से दो हिस्से तो उसने कछुए को दे दिये और बचा हुआ तीसरा हिस्सा सूअर के लिये छोड़ दिया।

फिर उसने कछुए को समझाया — "अगर वह सूअर अपने हिस्से का काम करना सीख जायेगा तो मैं उसको खाने का पूरा हिस्सा दे दूँगी।" इतना कह कर उसने कछुए को उसकी मेहनत के लिये धन्यवाद दिया और चली गयी।

उसके जाते ही कछुए ने तुरन्त ही अपने हिस्से का खाना खत्म कर लिया और बैठ कर सूअर का इन्तजार करने लगा।

जब सूअर वापस आया तो कछुआ राजा की पत्नी का लाया हुआ वह तीसरे हिस्से वाला खाना ले कर आया और सूअर से बोला — "आओ खाना खा लें।"

"खा लें? क्या खा लें?"

कछुआ बोला — "तुमने तो मेरे मुँह के शब्द ही छीन लिये। क्या तुम विश्वास कर सकते हो कि आज रानी हमारे लिये खुद ही खाना ले कर आयी थी?

वैसे यह तो तुम अपनी ऑखों से ही देख रहे हो कि यह जो खाना राजा की पत्नी हम दो ताकतवर आदमियों के लिये दे गयी है यह तो मेरे बच्चे के लिये भी काफी नहीं है।"

सूअर यह देख कर बहुत गुस्सा हुआ और बजाय इसके कि वह थोड़ा सा खाना खा कर अपने पेट की भूख को और उकसाता उसने खाना न खाने का निश्चय किया।

कछुए ने उससे नम्रता से कहा — "आओ साथी आओ, खाना खा लो। हम लोग इसी खाने से काम चला लेंगे। बिल्कुल ही कुछ न खाने से तो कुछ खाना अच्छा है।

इसके अलावा वह राजा की पत्नी भी बहुत नाउम्मीद होगी जब वह यह सुनेगी कि हम लोगों ने उसका लाया हुआ खाना नहीं खाया। और क्या पता वह हमारा केवल इम्तिहान ही ले रही हो। तुम उसको परेशान करना नहीं चाहते न?"

"यकीनन मैं उसको परेशान करना नहीं चाहता पर यह तो उसकी बड़ी बेरहमी की बात है कि वह हम दोनों के लिये इतना कम खाना दे कर गयी है।

अगर हमको यह पहले से पता होता कि वह खाना देने में इतनी कंजूस है तो हमने उससे तभी बारह चॉदी के सिक्के मॉग लिये होते और अपना खाना अपने आप ले आते।"

सो दोनों ने मिल कर सूअर के लिये रखा हुआ खाना खाया और फिर अपने काम पर लग गये। सूअर भूखा होने की वजह से

और साथ में तेज़ धूप की वजह से बहुत थका थका महसूस कर रहा था। दूसरी तरफ कछुआ बहुत ही ताजादम दिखायी दे रहा था।

कछुआ बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि खास बात यह नहीं है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी शुरू करते हो, बल्कि खास बात यह है कि तुम अपना काम कितनी जल्दी खत्म करते हो।

जब बिजली गिरती है तभी पता चलता है कि झाड़ियों के पीछे क्या है। कड़ी धूप में ही धीरे चलने का मजा है सुबह सवेरे में नहीं। उस समय तो कोई भी मेहनत कर सकता है।"

शाम को दोनों दोस्त अपने पैसे लेने राजा के महल को चल दिये।

कछुआ बोला — "राजा साहब, आपका काम हो गया है और जैसा कि तय हुआ था हमारी फीस दस चॉदी के सिक्के है। क्योंकि मैं इस काम में बड़ा भागीदार हूॅ इसलिये आप वह पैसे मुझे दे दें।"

फिर सूअर की तरफ घूमते हुए उसने सूअर से पूछा — "मैं ठीक कह रहा हूॅ न?"

"हॉ ठीक है।"

राजा ने कछुए को पैसे दे दिये और वे दोनों राजा से पैसे ले कर अपने घर चल दिये।

घर जाते समय कछुए ने अपने लालची तरीके से एक प्लान बनाया जिससे कि सारा का सारा पैसा वह खुद रख सके।

वह सूअर से बोला — "अभी तो यह पैसा हम आपस में बॉट लेते हैं। शुरू में ये दो सिक्के मैं रखता हूँ – एक तो पैसा लेने के लिये और दूसरा उसको रखने के लिये। बाकी बचा पैसा हम बराबर बराबर बॉट लेते हैं।"

सूअर को पहले तो अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि कछुआ कह क्या रहा था पर फिर उसने उस बॅटवारे को मान लिया क्योंकि वह जानता था कि अगर उसने कछुए से बहस की तो वह तो सारा ही पैसा रख लेगा।

कछुए ने सूअर से पूछा — "क्या तुम मेरे सच्चे दोस्त हो?"

सूअर ने जवाब दिया — "यह भी कोई पूछने की बात है। तुम तो जानते ही हो कि मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त हूँ।"

"तब तुमको मेरे साथ बाजार जाने में तो कोई ऐतराज नहीं होगा। मुझे अपनी पत्नी के लिये एक भेंट खरीदनी है।"

"ओह बिल्कुल नहीं।" कह कर सूअर कछुए के पीछे पीछे बाजार चल दिया।

बाजार जा कर कछुए ने अपनी पत्नी के लिये एक बहुत ही सुन्दर पोशाक खरीदी जिसे उसने उसकी कीमत नीची करा कर दस चॉदी के सिक्के की खरीदी।

अब उसके पास तो उस पोशाक को खरीदने के लिये पूरे पैसे थे नहीं सो उसने सूअर से पैसे उधार मॉगे। सूअर ने उसको पैसे दे दिये और कछुए ने वह पोशाक खरीद ली।

फिर वह सूअर से बोला — "इस समय तुम्हारा मेरे घर चलना ठीक नहीं है क्योंकि कल ही मेरी अपनी पत्नी से लड़ाई हो कर चुकी है और इसी लिये मैंने उसको खुश करने के लिये उसके लिये यह पोशाक खरीदी है सो तुम कल सुबह आना।

तब तक हम लोगों में सुलह भी हो गयी होगी और मैं तुमको तुम्हारा पैसा भी दे दूँगा।" सूअर बेचारा कछुए की बात मान गया और अपने घर चला गया।

अगले दिन सुबह वह कछुए के घर अपना पैसा लेने गया तो कछुआ तो अपने घर में था नहीं सो उसने कछुए की पत्नी से कहा कि वह अपना पैसा लेने के लिये अगले दिन आयेगा। पर अगले दिन भी कछुए ने उसको झॉसा मार दिया। वह घर पर नहीं था।

इस पर सूअर बहुत गुस्सा हो गया और उसने सोच लिया कि वह अगले दिन उससे अपना पैसा वापस जरूर ले लेगा चाहे कुछ भी हो जाये।

जब कछुआ वापस आया तो उसकी पत्नी ने उसको सूअर का सन्देश दिया। अगले दिन पहली बात उसने अपनी पत्नी से यह कही कि वह उसको कीचड़ में लपेट दे। उसकी पत्नी को आश्चर्य तो हुआ पर उसने वैसा ही किया जैसा कि उसके पति ने उससे करने के लिये कहा।

उसके बाद उसने कहा — "अब तुम सिल बट्टा[66] ले कर उस पर कुछ पीसना शुरू कर दो। जब सूअर यहाँ आये तो उससे बोलना कि मैं बहुत बीमार हूँ और बिस्तर में पड़ा हूँ और तुम मेरे लिये कोई दवा पीस रही हो।"

अगले दिन जब सूरज ऊपर चढ़ आया तो सूअर गुस्से से उफनते हुए कछुए के घर आया और कछुए की पत्नी से पूछा — "तुम्हारा वह आलसी पति कहाँ है? उससे कहो कि मैं अपना पैसा वापस लेने के लिये आया हूँ और मुझे वह अभी अभी चाहिये।"

कछुए की पत्नी बोली — "मुझे बहुत अफसोस है कि मेरे पति बहुत बीमार हैं और बिस्तर में पड़े हैं। मैं उन्हीं के लिये यह दवा पीस रही हूँ।"

सूअर बोला — "क्या तुम अपना यह पीसना बन्द कर के उसको बाहर निकाल कर लाओगी या फिर मैं...?"

कछुए की पत्नी ने यह न सुनने का बहाना किया और जो कुछ वह पीस रही थी वह वह पीसती रही। अब सूअर बहुत गुस्सा हो गया तो गुस्से में आ कर उसने उसका बट्टा उठाया और घर के बाहर की चहारदीवारी के बाहर फेंक दिया।

[66] Two pieces of stones for grinding. See its picture above.

यह सब सुन कर कछुआ उठा, उसने अपने शरीर पर लगी कीचड़ साफ की और एक डंडी उठा कर अपने घर के पिछले दरवाजे से अपने घर में लौटा।

फिर वह उस डंडी का सहारा लेते हुए और लॅगड़ाते हुए सूअर से मिलने आया। इस तरह से सूअर के सामने आ कर वह उसको यह दिखाना चाहता था कि वह वाकई बीमार था और उसे बहुत दर्द हो रहा था।

इस बीच सूअर अभी भी कछुए की पत्नी को डॉट रहा था कि वह अन्दर से अपने पति को ले कर आये।

कछुए ने बाहर आ कर पूछा — "क्या बात है सूअर भाई? क्या वह तुम्हारा पैसा देगी जो तुम उससे बहस कर रहे हो? तुम उसको छोड़ दो वह मेरे लिये दवा पीस रही है। और तुम्हारा पैसा तो मुझे देना है सो मैं तुमको तुम्हारा पैसा देता हूॅ।"

फिर वह अपनी पत्नी की तरफ घूम कर बोला — "तुम मेरी दवा पीसो इसका पैसा ला कर मैं इसे देता हूॅ। और हॉ वह बट्टा कहॉ है?"

उसकी पत्नी बोली कि वह तो सूअर ने गुस्से में आ कर बाहर फेंक दिया।

उसने सूअर से कहा — "कोई बात नहीं। तुम जा कर वह बट्टा उठा लाओ ताकि मैं तुमको पैसे दे सकूॅ। उस बट्टे के अन्दर ही मेरा

पैसा रखा है और इसके अलावा वह मेरी पत्नी को मेरी दवा पीसने के लिये भी चाहिये।"

सूअर उसका बट्टा लेने के लिये उसके मकान के पीछे की तरफ भागा पर उसको वह वहॉ मिला ही नहीं।

अब गुस्सा होने की बारी थी कछुए की। वह बोला — "ओह नहीं। न तुमने केवल मेरा पैसा खो दिया बल्कि तुमने तो मुझे ठीक होने से भी रोक लिया।

मैं तो तुमको तुम्हारा पैसा देना चाहता था पर उसके लिये मुझे पहले ज़िन्दा तो रहना चाहिये न। अब तुम पहिले मेरा बट्टा ढूँढ कर लाओ तभी मैं तुम्हारा पैसा दे सकूँगा।"

सूअर फिर उसके घर के पीछे गया पर उसको वह बट्टा कहीं नहीं मिला। उसने वहॉ के सारे पत्थर खोद लिये पर उसको वह बट्टा कहीं नहीं मिला। वह तो बस वहॉ बट्टा ढूँढता ही रहा ढूँढता ही रहा।

वह तो आज भी उस बट्टे को ढूँढ ही रहा है। इसी लिये आज भी सूअर अपने मुँह से चारों तरफ खोदता ही रहता है शायद कहीं उसको कछुए का वह बट्टा मिल जाये तो उसको अपने पैसे वापस तो मिल जायें।

18 बन्दर का पिछवाड़ा लाल क्यों[67]

एक बार एक कछुआ और एक बन्दर बात कर रहे थे कि बन्दर ने अपनी शान बघारनी शुरू की कि वह किस तरह जानवरों का राजा बन जायेगा।

वह सब जानवरों से कहेगा कि वह आदमी से कितना मिलता जुलता है और सारे जानवर उसे राजा बना लेंगे।

कछुआ बोला — "तुम राजा बन ही नहीं सकते क्योंकि शेर अभी भी जंगल का राजा है और वह बहुत ही ताकतवर है।"

बन्दर बोला — "फिर भी आदमी अभी भी शेर को अपने काबू में रखे है और मैं आदमी से बहुत मिलता जुलता हूँ।"

कछुए को इस बात में कुछ बदबू आयी और उसको लगा कि बन्दर उसको धमकी दे रहा है। उसके दिमाग में ही नहीं आया था कि अगर बन्दर ने आदमी की तरह से बर्ताव करना शुरू कर दिया तो क्या हो सकता था।

कछुआ बहुत ताकतवर तो नहीं था पर वह अपनी ताकत की कमी हँसी मजाक से पूरी कर लेता था। और उसको क्योंकि सब

[67] How the Chimpanzee's Bottom Got Swollen and Red? – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

जानवरों के बर्ताव का पता था इसलिये वह सबको पछाड़ भी देता था।

पर अगर बन्दर ने किसी ऐसे अनजाने जानवर का बर्ताव जिस को कछुआ नहीं जानता था तो? वह ऐसा कुछ नहीं चाहता था सो उसने निश्चय किया कि वह जल्दी ही इस बारे में कुछ करेगा ताकि वह बन्दर को आदमी बनने से रोक सके।

कछुआ अपने घर गया और जा कर उसने कुछ अकारा[68] बनाये। उसमें उसने थोड़ा सा ताजा शहद भी मिला दिया। जब उसके अकारा बन गये तो उसने उनको एक टोकरी में रखा और शेर के घर चला।

वहाँ जा कर उसने वह टोकरी शेर के घर के बाहर एक पेड़ के पीछे छिपा कर रख दी। अकारा गर्म थे सो उसकी भीनी भीनी खुशबू हवा में उड़ चली।

शेर को अकारा की खुशबू आयी तो वह यह देखने के लिये बाहर आया कि वह खुशबू कहाँ से आ रही थी। खुशबू सूँघते सूँघते वह उसी पेड़ के पीछे आ गया जिसके पीछे कछुए ने अकारा की टोकरी छिपा कर रखी थी।

[68] Akara - black-eyed beans or red beans are soaked, its skin is removed, and the beans are ground. Some onion, green pepper and salt are added to the paste and its small balls are fried in hot oil. That is called Akara (pronounced as Akaaraa). It is very common food in Nigeria. See its picture above.

उसने उस टोकरी में से एक अकारा खाया तो वह उसको उन सब अकारा से ज़्यादा मीठा लगा जो उसने अब तक खाये थे। उसने इतने स्वाददार अकारा कभी नहीं खाये थे।

उसने दूसरा अकारा खाया, फिर तीसरा, फिर चौथा, और यह लो उसने तो उस टोकरी के सारे अकारा खा कर खत्म कर दिये।

शेर का पेट तो बहुत बड़ा होता है और ऐसे मीठे अकारा तो उसने पहले कभी नहीं खाये थे। उसको तो अब और अकारा चाहिये थे। पर ये अकारा ले कर कौन आया था?

वह चिल्लाया भी पर उसके चिल्लाने का किसी ने कोई जवाब ही नहीं दिया। वह इधर उधर देखने को लिये गया तो उसको एक जगह एक कछुआ सिकुड़ा सा बैठा मिल गया।

उसने कछुए को गर्दन से पकड़ा और उससे पूछा कि वे अकारा कौन ले कर आया था। कछुआ बेचारा डर के मारे कॉप गया और धीरे से बोला — "मैंने किसी से वायदा किया है कि मैं नहीं बताऊँगा।"

पर शेर ने उससे कहा कि उसको बताना ही पड़ेगा नहीं तो... । सो कछुए को बताना ही पड़ा कि एक बन्दर उनको ले कर आया था लेकिन यह एक भेद की बात है कि यह अकारा नहीं थे बल्कि यह तो बन्दर की टट्टी थी जिसको उसने किसी को बताया नहीं था।

यह सुन कर शेर तुरन्त ही बन्दर के घर की तरफ चल पड़ा। वहॉ जा कर वह उससे बोला — "मुझे मीठी टट्टी दो।"

बन्दर तो यह सुन कर दंग रह गया और शेर की तरफ खाली खाली नजरों से देखने लगा। शेर उस पर दहाड़ा — "तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा? मैंने कहा कि मुझे मीठी टट्टी दो।"

बन्दर तो इतना डर गया कि उसकी तो अपनी टट्टी वहीं की वहीं निकल पड़ी। शेर ने तुरन्त ही उसको खा लिया तो बोला — "यह तो मीठी नहीं है। मैंने कहा कि मुझे मीठी टट्टी दो।"

अब वह बन्दर बेचारा मीठी टट्टी कहॉ से दे। उसको तो कछुए की चाल का कुछ पता ही नहीं था।

और शेर तो इधर पागल सा हो गया। उसने बन्दर के पिछवाड़े को पीटना शुरू कर दिया और उसको हुक्म दिया कि वह मीठी टट्टी बनाये।

वह उसको पीटता ही रहा जब तक उसका पिछवाड़ा सूज नहीं गया और लाल नहीं हो गया। उस दिन से बन्दर ने आदमी बनने का सपना देखना छोड़ दिया और कछुआ भी आराम से रहने लगा।

19 वुनगेलेमा[69]

कछुए की यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़ाम्बिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कहानी में कछुए की अक्लमन्दी दिखायी गयी है।

बच्चों, यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार अफ्रीका में बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। सभी जानवर भूख से मरने लगे। इससे बाकी बचे जानवर बहुत दुखी हुए क्योंकि उनकी गिनती दिन पर दिन कम होती जा रही थी।

उसी जंगल में एक खास किस्म का पेड़ था जिसके सामने खड़े हो कर अगर उस पेड़ का केवल नाम ही ले दिया जाये तो उस पेड़ से अनगिनत मीठे रसीले फल टपक जाते थे। सभी जानवर यह बात जानते थे पर मुश्किल यह थी कि कोई भी जानवर, बूढ़े से बूढ़ा जानवर भी, उस पेड़ का नाम नहीं जानता था।

एक दिन शाम को सभी भूखे और कमजोर जानवर एक पेड़ के नीचे इकट्ठा हुए और इस बात पर विचार करने लगे कि इस पेड़ का नाम जानने के लिये क्या किया जाये।

एक बूढ़े शेर ने कहा — "मेरे दादा कहा करते थे कि इस पेड़ का नाम तो केवल पहाड़ देवता ही जानते हैं सो क्यों न कोई जवान

[69] Vungalama – a folktale of Zambia, Southern Africa

और ताकतवर जानवर उन देवता के पास जाये और पहले उन देवता से इस पेड़ का नाम मालूम कर के लाये तभी हम सब इस परेशानी से बच सकते हैं।"

सभी जानवरों में इस सलाह पर कानाफूसी होने लगी कि कौन

उस पेड़ का नाम जानने के लिये उस देवता के पास जायेगा।

आखीर में यह तय किया गया कि खरगोश को इस पेड़ का नाम पता लगाने के लिये पहाड़ देवता के पास भेजा जाये क्योंकि वह सबसे तेज़ भागता है। वह उस पेड़ का नाम बहुत जल्दी से पूछ कर आ जायेगा।

अगले दिन सुबह सवेरे ही खरगोश महाशय अपने सफर पर चल दिये। छोटे तंग रास्तों से हो कर, जंगलों, झीलों, नदियों और नालों को पीछे छोड़ते हुए, भागते भागते आखिरकार वह पहाड़ देवता के सामने जा पहुँचे।

जा कर उन्होंने पहाड़ देवता को सिर झुकाया और बोले — "हे देवता, आपको तो मालूम ही है कि जानवरों के देश में अकाल पड़ा है और धीरे धीरे कर के बहुत सारे जानवर मर गये हैं।

इसलिये मैं आपसे उस जादुई पेड़ का नाम पूछने आया हूँ जिसका केवल नाम लेने से ही उसमें से अनगिनत मीठे रसीले फल झड़ पड़ते हैं। हम सब इस अकाल की वजह से भूखे मर रहे हैं।

अगर आप हमें उस पेड़ का नाम बता देंगे तो हम सब मरने से बच जायेंगे।"

पहाड़ा देवता ने कहा — "जरूर जरूर, मैं तुमको उस पेड़ का नाम जरूर बताऊँगा। उस पेड़ का नाम है वुनगेलेमा। तुम तुरन्त ही वापस चले जाओ ताकि तुम उसका नाम न भूल जाओ और जाओ जा कर खूब फल खाओ।"

"धन्यवाद" कह कर खरगोश अपनी पूरी ताकत के साथ जंगल की तरफ वापस भाग लिया। वह न दॉये देख रहा था न बॉये, बस वह तो सीधा जंगल जाने वाली सड़क पर भागा चला जा रहा था ताकि वह उस नाम को जानवरों को जल्दी से जल्दी बता सके।

भागते भागते उसको पता ही नहीं चला कि कब उसके सामने एक चींटी का घर आ गया। खटाक, यह क्या? उसका सिर चींटियों के घर से जा टकराया और उसका सिर चकरा गया। वह बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ा।

जब उसको होश आया तब तक शाम हो चुकी थी। वह फिर भागा। जंगल में सभी जानवर उसके इन्तजार में खड़े थे। उसको देखते ही सभी एक साथ बोल उठे — "क्या नाम है उस पेड़ का?"

खरगोश ने उस पेड़ का नाम याद करने की बहुत कोशिश की पर वह सिर लटका कर बोला — "वुन, वुन, अरे मैं तो भूल ही गया कि उस पेड़ का नाम क्या है।"

इस पर सभी जानवर कुछ नाराज भी हुए और कुछ दुखी भी। खरगोश को एक ज़ोर का धक्का मारते हुए उन्होंने फिर मीटिंग की

क्योंकि अब उनको किसी दूसरे जानवर को उस पेड़ का नाम जानने के लिये भेजना था।

इस बार भैंसे का नम्बर आया सो अगले दिन भैंसा अपनी धीमी चाल से चलता हुआ पहाड़ देवता के पास पहुँचा।

वह भी नम्रता से सिर झुकाते हुए बोला — "हे पहाड़ देवता, आपको तो मालूम ही है कि जानवरों के देश में अकाल पड़ा है और धीरे धीरे कर के बहुत सारे जानवर मर गये हैं। इसलिये मैं आपसे उस जादुई पेड़ का नाम पूछने आया हूँ जिसका केवल नाम लेने से ही उसमें से अनगिनत मीठे रसीले फल झड़ पड़ते हैं।

खरगोश उस पेड़ का नाम भूल गया है। क्या आप मुझे दोबारा उस पेड़ का नाम बताने की मेहरबानी करेंगे ताकि मैं अपने साथियों को भूख से मरने से बचा सकूँ?"

देवता ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मैं तुमको उस पेड़ का नाम जरूर बताऊँगा। उस पेड़ का नाम है "वुनगेलेमा"। अब जाओ तुम जल्दी वापस चले जाओ। कहीं ऐसा न हो कि तुम भी यह नाम भूल जाओ और जाओ जा कर खूब फल खाओ।"

भैंसे ने देवता को धन्यवाद दिया और बहुत खुश हुआ कि उसको उस पेड़ का नाम पता चल गया था। रसीले फलों के बारे में

सोचता सोचता वह गिरता फिसलता जंगल की तरफ भागा चला जा रहा था ताकि वह खुद भी रास्ते में कहीं उस पेड़ का नाम न भूल जाये।

उसको भी रास्ते में आया वह चींटी का घर दिखायी नहीं पड़ा और खटाक, उसका सिर भी सामने बने चींटियों के घर में जा कर टकराया। उसका सिर भी चकरा गया और वह भी बेहोश हो कर नीचे गिर पड़ा।

जब उसको होश आया तब शाम हो चुकी थी। वह फिर भागा और भागा भागा जंगल पहुँचा। जैसे ही जानवरों ने भैंसे को देखा तो उन्होंने तुरन्त उससे पूछा — "भैंसे भैंसे, उस पेड़ का नाम क्या है?"

भैंसे ने याद करते हुए कहा — "वुन, वुन, वुन।" परन्तु पूरा शब्द उसे भी याद नहीं आया। जंगल के सारे जानवर गुस्से के मारे इस बार भी खून का सा घूँट पी कर रह गये पर क्या कर सकते थे।

जानवरों ने फिर मीटिंग की। चीता बोला — "अगर हमें इस पेड़ का नाम जल्दी ही पता न चला तो हम सभी भूख से मर

जायेंगे। मगर अब हम भेजें किसे?"

इस बार शेर का नाम लिया गया क्योंकि शेर जंगल का राजा होता है और राजा को अपनी प्रजा को तकलीफों से जरूर ही बचाना चाहिये।

शेर भी अगले दिन झूमता झामता पहाड़ देवता के सामने जा पहुँचा और नम्रता से सिर झुका कर बोला — "हे पहाड़ देवता, आपको तो मालूम ही है कि जानवरों के देश में अकाल पड़ा है और धीरे धीरे कर के बहुत सारे जानवर मर गये हैं।

इसलिये मैं आपसे उस जादुई पेड़ का नाम पूछने आया हूँ जिसका केवल नाम लेने से ही उसमें से अनगिनत मीठे रसीले फल झड़ पड़ते हैं।

खरगोश और भैंसा दोनों ही आपका बताया नाम भूल गये हैं। क्या आप मेहरबानी कर के मुझे वह नाम एक बार फिर से बता सकेंगे जिससे मैं अपनी भूख से मरती हुई प्रजा को बचा सकूँ?"

देवता ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं, पर तुम वह नाम सुनते ही चले जाना ताकि तुम उस नाम को भूलो नहीं। उस पेड़ का नाम है "वुनगेलेमा"।"

शेर ने देवता को धन्यवाद दिया और उलटे पैरों जंगल की तरफ भाग चला। भागते भागते वह सोच रहा था कि खरगोश और भैंसा भी इतनी तेज़ नहीं भागे होंगे जितनी तेज़ मैं भाग रहा हूँ। मैं सूरज छिपने से पहले ही जंगल पहुँच जाऊँगा और फिर सबको यह नाम बता दूँगा।

पर यह क्या? अपने तेज़ी से भागने की धुन में और शाम होने से पहले जंगल पहुँचने की जल्दी में शेर को भी सामने बना चींटी का

घर दिखायी नहीं दिया और खटाक। शेर सूरज की तरफ देख रहा था कि उसका सिर सामने बने चीटियों के घर में जा लगा।

उसका सिर उस चींटियों के घर से टकराते ही चकरा गया और वह भी बेहोश हो कर वहीं गिर पड़ा। जब उसको होश आया तो वह भी खरगोश और भैंसे की तरह उस पेड़ का नाम भूल चुका था।

भागा भाग वह जंगल तो पहुँचा पर जानवरों को उस पेड़ का नाम नहीं बता सका क्योंकि दूसरे जानवरों की तरह से वह भी उस पेड़ का नाम भूल गया था। सभी जानवरों ने शेर को बहुत बुरा भला कहा पर क्या करते।

तब एक छोटे से कछुए ने सिर उठाया और कहा — "कल मैं पहाड़ के देवता के पास जाता हूँ और आप लोगों को उस पेड़ का नाम ला कर देता हूँ। मैं कल सुबह सवेरे ही निकल जाऊँगा।"

उसकी बात सुन कर वहाँ खड़े सारे जानवर उस दुख और गुस्से में भी हँस पड़े और बोले — "क्या? तुम जैसे छोटे से जानवर को वह शब्द याद रहेगा जो इतने बड़े बड़े जानवर भूल गये?"

कछुए ने शान्ति से कहा — "कल तक इन्तजार करिये तब आप सबको पता चलेगा।"

सूरज की पहली किरन के साथ ही कछुआ अपने सफर पर निकल पड़ा। वह धीरे धीरे चलता गया और दोपहर तक देवता के सामने जा पहुँचा।

देवता ने उसको देख कर आश्चर्य से कहा — "अरे, फिर एक जानवर? लगता है शेर भी उस शब्द को भूल गया है।"

कछुआ सिर झुका कर बोला — "जी हॉ देवता जी, शेर जी भी खरगोश और भैंसे की तरह उस नाम को भूल गये। मेहरबानी कर के एक बार फिर से वह नाम मुझे बता दीजिये। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

देवता बोले — "अच्छा तो अब उस नाम को तुम ध्यान से सुनो क्योंकि अब यह नाम मैं किसी और को नहीं बताऊँगा। उस पेड़ का नाम है "वुनगेलेमा"।"

और कछुआ देवता को धन्यवाद दे कर वह नाम दोहराता हुआ अपनी धीमी चाल से जंगल की तरफ चल दिया। थोड़ी थोड़ी देर बाद वह यह नाम दोहराता जाता था और आगे चलता जाता था।

क्योंकि वह बहुत सावधानी से और धीरे धीरे जा रहा था इस लिये उसने चींटियों का घर देख लिया था। चींटियों के घर के पास पहुँच कर उसने उनके घर का एक चक्कर लगाया और बोला "वुनगेलेमा"।

वह जब जंगल पहुँचा तो अँधेरा हो चुका था इसलिये उस छोटे से जानवर की ओर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। इतने में हिरन की

नजर उस पर पड़ी। हिरन दौड़ा दौड़ा आया और बोला — "कछुए भाई, तुम आ गये? उस पेड़ का नाम तो बताओ।"

पर कछुए ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सीधा उस जादुई पेड़ के पास पहुँचा ओर बोला — "वुनगेलेमा"।

बस फिर क्या था उस पेड़ से बारिश की बूँदों की तरह से अनगिनत मीठे रसीले फल टपाटप गिर पड़े।

हिरन तो यह देख कर बहुत ही खुश हुआ और जंगल के सारे जानवरों को बुला लाया। कई दिनों के भूखे जानवरों ने भर पेट फल खाये और इतने खाये कि उनसे फिर और नहीं खाये गये।

बहुत दिनों बाद वे सब उस रात पेट भर खाना खा कर सोये। सुबह कछुए ने उस पेड़ के पास जा कर फिर कहा — "वुनगेलेमा" और फिर सैंकड़ों मीठे रसीले फल उस पेड़ से गिर पड़े।

अब वे रोज़ रसीले फल खाते और उनसे अपना पेट भर लेते। धीरे धीरे अकाल खत्म हो गया, बारिश पड़नी शुरू हो गयी इसलिये उन जानवरों को फिर उस पेड़ के फलों की जरूरत ही नहीं पड़ी और वे धीरे धीरे उस पेड़ का नाम भूल गये।

वह पेड़ आज भी उसी जंगल में वहीं खड़ा है पर उसका नाम आज कोई नहीं जानता क्योंकि फिर किसी को उसकी जरूरत ही नहीं पड़ी। अब सभी उसका नाम भूल चुके हैं।

पर तुमको तो उस पेड़ का नाम मालूम है न? सो जब कभी तुम को फलों की दावत करनी हो या फिर बहुत सारे फलों की जरूरत

हो तो बस वहाँ चले जाना और यह नाम ले देना। उस पेड़ से बहुत सारे मीठे रसीले फल नीचे गिर पड़ेंगे। जितने चाहो उतने खाना और जितने चाहो उतने खिलाना।

20 कछुए और बड़े खरगोश की दौड़–1[70]

एक बार एक कछुआ और एक बड़ा खरगोश[71] दोनों बात कर रहे थे कि बातों बातों में कछुआ बोला कि "मैं तुम्हें दौड़ में हरा सकता हूँ।"

पहले तो बड़ा खरगोश यह सुन कर चौंक गया फिर उसने सोचा कि शायद उसने गलत सुना हो सो उसने पक्का करने के लिये पूछा — "कछुए भाई, क्या तुमने कुछ दौड़ के बारे में बात की?"

कछुआ बोला — "हॉ खरगोश भाई, मैंने तुमसे दौड़ के बारे में ही बात की और मैं तुम्हें अपने साथ दौड़ के लिये ललकारता हूँ। बस तुम कोई दिन निश्चित कर लो और मैं यह चाहता हूँ कि उस दिन जंगल के सारे जानवर तुम्हारी हार देखने के लिये वहॉ मौजूद रहें।"

बड़ा खरगोश बोला — "यह तो आज मैंने सबसे ज़्यादा अजीब बात सुनी। तुमको तो जितनी दूर मैं एक दिन में दौड़ सकता हूँ उतनी दूर पहुँचने में कई साल लगेंगे।

---

[70] Tortoise and Hare – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/wafrica/tortoise_and_hare.php
[This is story is different from Aesop's version where "slow and steady wins the race". Here Tortoise wins by tricking, there he wins just by continuous walking.]

[71] Translated for the word "Hare". It is bigger than rabbit in size. See its picture above.

तुम्हारे साथ दौड़ना तो मेरे लिये बड़े अपमान की बात होगी। हर जानवर जानता है कि मैं जीत जाऊँगा। यह दौड़ ठीक नहीं है। मैं तुम्हारे साथ नहीं दौड़ूँगा।"

पर कछुआ तो मानने वाला था नहीं सो दौड़ के लिये एक दिन तय कर लिया गया और सब जानवरों को दौड़ देखने का बुलावा भेज दिया गया।

इधर कछुए ने क्या किया कि अपने कुछ रिश्तेदारों को बुलाया और दौड़ के दिन उनको दौड़ के रास्ते में बीच बीच में खड़ा कर दिया जिससे ऐसा लगे कि कछुआ वहाँ पहले ही पहुँच गया है।

तय किये गये दिन सारे जानवर दौड़ के मैदान में इकट्ठा हुए। कुछ जानवर दौड़ के शुरू में खड़े थे, कुछ बीच बीच में खड़े थे और कुछ आखिरी लाइन पर खड़े थे।

दौड़ शुरू हुई और बड़ा खरगोश दौड़ खत्म करने के चक्कर में तेज़ी से दौड़ गया पर उसको कछुए के साथ दौड़ने में बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था।

बड़ा खरगोश तो अभी भी यही सोच रहा था कि कछुए के साथ उसका दौड़ना उसका अपमान था पर वह यह नहीं जानता था कि कछुआ कितना चालाक है। कछुए ने अपने भाइयों को रास्ते में कई जगहों पर खड़ा कर रखा था और वह खुद दौड़ की आखिरी लाइन पर खड़ा था।

जैसे ही बड़ा खरगोश जंगल के रास्ते पर आया तो उसने देखा कि कछुआ उससे आगे आगे जा रहा था। "यह तो नामुमकिन है।" बड़े खरगोश ने सोचा। "यह कछुआ मुझसे आगे कैसे दौड़ सकता है?"

बड़े खरगोश ने उसके पास जा कर पूछा — "मैं तो बीच में कहीं रुका भी नहीं और तुमको कहीं देखा भी नहीं, फिर तुम मुझसे आगे कैसे निकल गये?"

कछुआ बोला — "माना कि मैं बहुत धीरे चलता हूँ पर जब मैं भागता हूँ तो कोई मुझे देख भी नहीं सकता है।"

"नामुमकिन।" कह कर बड़ा खरगोश फिर दौड़ गया।

जैसे ही वह जंगल के रास्ते के दूसरे कोने पर पहुँचा तो उसने फिर देखा कि कछुआ फिर से उससे आगे चला जा रहा था। कछुए को फिर से अपने आगे जाते देख कर बड़े खरगोश को बहुत गुस्सा आया।

वह बोला — "यह कैसे हुआ कि तुम फिर मुझसे आगे निकल गये।"

कछुए ने फिर वही जवाब दिया — "माना कि मैं बहुत धीरे चलता हूँ पर जब मैं भागता हूँ तो कोई मुझे देख भी नहीं सकता है।"

"नामुमकिन।" बड़ा खरगोश फिर से यही बोल कर आगे दौड़ गया। अबकी बार वह बहुत तेज़ी से दौड़ रहा था।

तीसरी बार उसे कछुआ फिर रास्ते में दिखायी दिया पर अबकी बार वह बीच में रुका नहीं और भागता ही गया। जैसे ही वह दौड़ की आखिरी लाइन तक पहुँचा तो उसने क्या देखा कि कछुआ तो जीत वाली लाइन पार कर रहा था।

बड़े खरगोश ने अपने सिर पर हाथ मार लिया और कछुआ दौड़ में जीत गया। इस तरह कछुए ने अपनी चालाकी से बड़े खरगोश जैसे तेज भागने वाले को भी हरा दिया। सच है कि अक्लमन्दी बड़े बड़ों को हरा देती है।

21 कछुआ और बड़ा खरगोश–2[72]

हालॉकि यह लोक कथा अफ्रीका की नहीं है फिर भी इसे यहॉ इसलिये दिया जा रहा है ताकि तुम लोग ऐसी ही लोक कथा की एक दूसरे से तुलना कर सको। यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश में कही सुनी जाती है।

एक जंगल में एक बड़ा खरगोश[73] और एक कछुआ रहते थे। बड़े खरगोश को अपने तेज़ भागने पर बड़ा घमंड था और कछुए को अपनी शाही चाल पर बड़ा नाज़ था।

एक दिन कछुए ने सोचा कि बड़े खरगोश के साथ दौड़ की जाये सो वह बड़े खरगोश के पास गया और उसको अपने साथ दौड़ के लिये ललकारा।

बड़ा खरगोश यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "कछुए भाई तुम मेरे साथ कैसे दौड़ सकते हो? जब तक तुम चलना भी शुरू नहीं करोगे तब तक तो मैं तुम्हारी तय की हुई जगह पर भी पहुॅच जाऊॅगा। छोड़ो छोड़ो यह तो तुम सोचना भी नहीं।"

---

[72] Tortoise and Hare – a folktale from India, Asia, heard from my parents.
[This version is different from the African version given before this folktale. In that tale tortoise wins by his trick not by "slow and steady wins the race" rule. As this is not the tale from Africa and should not be included here but it is just given here for reference purose.]

[73] Translated for the word "Hare". Hare is a bit bigger than the Rabbit. See its picture above.

कछुआ बोला — "देखते हैं क्या होता है पर मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं तुम्हारे साथ दौड़ूँ।"

बड़े खरगोश ने कछुए को बहुत समझाया पर जब कछुआ नहीं माना तो बड़ा खरगोश उसके साथ दौड़ने के लिये तैयार हो गया।

दिन और समय तय किया गया। जंगल के सभी जानवरों को इस आश्चर्यजनक दौड़ को देखने के लिये बुलाया गया। ठीक समय पर सभी जानवर इकट्ठा हुए। कछुआ और बड़ा खरगोश भी दौड़ के लिये तैयार थे।

दौड़ शुरू हुई। कछुआ अपनी शाही चाल से चल दिया और बड़ा खरगोश तेज़ी से भाग लिया। कछुआ धीरे धीरे चलता रहा और बड़ा खरगोश तेज़ी से भागता रहा।

कुछ दूर जा कर बड़े खरगोश ने सोचा "कछुआ तो बहुत ही धीमे चलता है। उसको तो यहाँ तक आने में बहुत देर लगेगी मैं तब तक थोड़ा सुस्ता लेता हूँ।"

ऐसा सोच कर वह वहीं पास में लगे एक पेड़ के नीचे बैठ गया। ठंडी ठंडी हवा चल रही थी तो उसको नींद आ गयी और वह सो गया। उधर कछुआ अपनी धीमी चाल से चलता रहा और चलता रहा।

जब बड़े खरगोश की आँख खुली तो शाम हो चुकी थी। जागते ही बड़े खरगोश को ध्यान आया कि वह तो कछुए के साथ दौड़ में हिस्सा ले रहा था और वह तो यहाँ सो रहा है।

वह तुरन्त उठा और भागा। पर जब तक वह तय की हुई जगह पर पहुँचा दूसरे जानवर वहाँ कछुए का स्वागत कर रहे थे और कछुए की जीत पर उसको बधाई दे रहे थे। यह सब देख कर खरगोश तो शर्म से पानी पानी हो गया।

खरगोश को देर से आते देख कर कुछ जानवर हँस पड़े और कुछ बोले — "बड़े खरगोश भाई, कहाँ रह गये थे तुम? तुमने तो आज कमाल ही कर दिया कि तुम कछुए से भी हार गये।"

पर बड़ा खरगोश बेचारा किसी को अपना हाल क्या बताता। वह तो बस अपने आराम को कोस रहा था कि वह रास्ते में आराम करने के लिये रुका ही क्यों।

इस तरह दौड़ में धीमे और बराबर चलने वाला कछुआ जीत गया और तेज भागने वाला खरगोश हार गया। इसलिये आदमी को अपना काम खत्म कर के ही दम लेना चाहिये चाहे वह उसको धीरे धीरे ही करे।[74]

[74] That is why it is said – "Slow and steady wins the race."

22 कछुआ और बड़ा खरगोश–3[75]

कछुए और बड़े खरगोश की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये ईसप की कथाओं से ली है। यह अफ्रीका वाली लोक कथा से तो बिल्कुल अलग है पर भारत में कही सुनी जाने वाली लोक कथा जैसी है।

एक बार एक बड़े खरगोश को कछुए के पैरों को देख कर हँसी आ गयी। कछुए को बड़े खरगोश की यह हँसी अच्छी नहीं लगी। उसको गुस्सा आ गया और वह बोला — "क्या तुम जानते हो कि इतने छोटे पैर होते हुए भी मैं तुमको दौड़ में हरा सकता हूँ?"

खरगोश बोला — "यह सब तो कहने की बातें हैं। तुम ज़रा दौड़ कर तो देखो मेरे साथ तब तुम्हें पता चलेगा। अच्छा पहले यह तो बताओ कि दौड़ का रास्ता कौन बनायेगा और जज कौन होगा?"

कछुआ बोला — "लोमड़ी। क्योंकि एक तो वह ईमानदार है और दूसरे वह होशियार है।"

---

[75] The Tortoise and the Hare – a folktale from Aesop's tales.
Adapted from the Web Site : http://mythfolklore.net/aesopica/perry/226.htm
[This folktale is from Aesop's version. This version is similar to the previous version heard and told in India.]

बड़ा खरगोश राजी हो गया। जब दौड़ का समय आया तो कछुआ तुरन्त ही दौड़ के मैदान में आ गया और अपनी दौड़ शुरू कर दी।

बड़े खरगोश को अपने भागने पर बहुत भरोसा था कि वह बहुत तेज़ भागता है सो वह भी शुरू में भागा तो पर कुछ देर बाद ही वह सोने के लिये लेट गया।

जब बड़ा खरगोश जागा तो फिर भागा और जब तक वह दौड़ की आखिरी लाइन पर पहुँचा तब तक तो वह कछुआ दौड़ की आखिरी लाइन पार कर के जंगल के दूसरे जानवरों से अपनी जीत की बधाइयाँ ले रहा था।

यह कहानी बताती है कि कभी कभी किसी में कुछ गुण स्वाभाविक होते हैं पर वे उनको अपने आलसीपन की वजह से इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं, जैसे खरगोश और उसके लिये उनको मुँह की खानी पड़ती है।

जब कि किसी काम को लगातार करने रहने की इच्छा और लगन दूसरों के स्वाभाविक गुणों को भी जीत लेती है, जैसे कछुए की लगन।

List of Stories of “Tortoise from Africa-1”

1. How the Tortoise Became Bald
2. Tortoise and the Lizard
3. The Tortoise Goes to a Feast in the Sky
4. Everyone
5. The Dog Hid His Mother in the Sky
6. Lesson for Everyone
7. How the Cracks in the Tortoise’s Shell Came to Be
8. How the Tortoise Got His Crooked Shell
9. Why Tortoises Are Sacrificed
10. Tortoise and the Wisdom of the World
11. The Crown Made of Smoke
12. The Rubber Man
13. How the Tortoise Paid His Creditors
14. Tortoise and the Princess Who Never Spoke
15. The Tug of War
16. How the Tortoise Overcame Eleohant and Hippopotamus
17. The Tortoise, the Dog and the Farmer
18. Leopard, Squirrel and Tortoise
19. Leopard, Tortoise and the Bush Rat

List of Stories of “Tortoise from Africa-2”

1. The Snail and the Leopard
2. A Tortoise With a Beautiful Daughter
3. Tortoise and Chameleon
4. Tortoise and Baboon
5. You Asked For It
6. The Power of One
7. The Talking Tree
8. Tortoise and the Medicinal Soup
9. The Affair of the Hippopotamus and the Tortoise
10. The Tortoise Captures the Elephant
11. A Tortoise and an Elephant
12. The Tortoise and the Drum
13. The Magic Drum
14. The King's Magic Drum
15. The Singing Drum
16. Tortoise and Igbako
17. The Tortoise and the Pig
18. How the Chimpanzee’s Bottom Got Swollen and Red?
19. Vungalama
20. Tortoise and Hare-1
21. Tortoise and Hare-2
22. Tortoise and Hare-3

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022